

शोध आशयिकी का अवमूल्यन हो जाएगा यदि आप - ३० - यहाँ किसी  
व्यक्ति व्यक्ति को <sup>अतिरिक्त दंगल</sup> महत्व देंगे तथा अधिक महत्व देंगे।  
अनुसंधान ग्रन्थ की सुन्दरता में वृद्धि की जा सकती है -  
१६. इन-इसमें की जा सकने वाली टंकण संबंधी सौन्दर्य वृद्धि, उसमें  
दिशमय सुन्दर चित्र एवं व्यवस्थित ग्राफ, उसकी उत्तम चित्पट्ट  
एवं मुखपृष्ठ।

१७. एक शोध प्रतिवेदन को तैयार कराने के लिए यदि शोधकर्ता  
में अपेक्षित योग्यता नहीं है, तो उसके द्वारा सम्पन्न किया  
गया कार्य होगा - ३० - निम्न तैयारी का।

१८. किसी शोध ग्रन्थ में ग्राफों एवं चित्रों का महत्व है - ३० - ये  
दृश्य गुणवत्ता उत्पन्न करते, ये सौन्दर्यशोधकारों हैं, ये  
अन्वेषणात्मक तथ्यों को सहज बनाते हैं।

१९. अनुसंधानकर्ता में ग्राफ एवं चित्रों के नामांकन, पृष्ठांकन  
तथा स्वरूप परिवर्तन के लिए भी आवश्यकता होती है -  
३० - कलात्मक गुणों की।

२०. शोधग्रन्थ का मुख्य भाग है - ३० - मुखपृष्ठ, व्यङ्ग्य भाग, पृष्ठ भाग।

२१. शोधग्रन्थ में विषय-सूचिका का महत्व है - ३० - यह समस्या के  
महत्व को अपने में संजोए रखता है, यह समस्या संबंधी  
सर्वशेष की दिशा का निर्धारण करता है, यह समस्या के  
उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है।

२२. संबंधित साहित्य के सर्वशेष से लाभ है - ३० - यह सम्पूर्ण शोध  
की रीढ़ की तरह है, यह उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के  
निर्माण में सहायक है, यह अध्ययन अथवा कल्प (फिजियोजन) के  
निर्माण में मदद करता है।

२३. किस उद्देश्य की प्राप्ति में संबंधित साहित्य हितकर होगा -  
- ३० - समस्या के परिभाषीकरण में, परिकल्पना-निर्माण में,  
उपकरण चयन में।

किस उद्देश्य की प्राप्ति में संबंधित साहित्य हितकर  
नहीं होगा - ३० - निष्कर्षों की खोज में।



## (Research Design)

१४. शोध अभिकल्प का संबंध है - डब - ज्यादातर से, प्रायोगिक अभिकल्प निर्माण से, उपकरण चयन एवं निर्माण से।

१५. प्रदत्त विश्लेषण एवं विवेचन में आधिकाधिक ग्राह्यता के लिए सहजता की जानी चाहिए - डब - ग्राह्यों एवं विद्वानों की

संदर्भ प्रत्येक शोध ग्रन्थ के अन्त में प्रायः सुझाव एवं संशुक्तियों का उल्लेख मिलता है, क्योंकि यह एक पारम्परिक चलन है।

१६. आप अपने शोध प्रबन्ध में सुझाव देने वक्त प्राथमिकता में रखेंगे - डब - अपने अनुसंधान में आने वाली कठिनाइयों को, अपने शोध में निहित परिसीमाओं को, अपने अनुसंधान में किए जा सकने वाले नवीन सुधारों को।

१७. शोध सुझावों का महत्व है - डब - भविष्य में शोधार्थियों के लिए आवश्यक ऊर्जा स्रोत के रूप में।

१८. सभी संदर्भों की सुविधयुक्त वैज्ञानिक शब्दों का नाम है - डब - संदर्भ ग्रन्थ सूची।

१९. सक्रिय-सामग्री (Directness in Research) संग्रह की जाती है - डब - प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से।

२०. प्राथमिक स्रोतों में सम्मिलित किया जाता है - डब - दस्तावेज़ित पाण्डुलिपियों को, मौखिक लेखकों के मूल लेखों को, शोध प्रबन्धों को प्रत्यक्ष रूप में।

२१. विश्वकोष में सम्पादित सामग्री होगी - डब - द्वितीयक स्रोत।

२२. Year Books में शोध ग्रन्थों का लेखा-जोखा रहता है - डब - केवल विशेष विषय की वार्षिकी का।

२३. संदर्भ सूची (Reference) दिया जाता है - डब - उद्धृत सामग्री की प्रामाणिकता की पुष्टि के लिए।

२४. संदर्भ एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची में एक टेक्नीकल भेद है -

डब - पूर्व में सत्य पूर्वकण अंकित किया जाता है, पूर्व में लेखक के नाम के अन्तिम भाग को सर्वप्रथम लिखा जाता है, पूर्व में सम्पूर्ण एवं वार्षिक सूचनाओं का संग्रह उनके सत्यापन के क्रम में किया जाता है।



१. सम्प्रेषण (Communication) शब्द की व्युत्पत्ति हुई है - ~~कम्यूनिस~~ - कम्यूनिस (Communism) से.
२. 'कम्यूनिस' शब्द ग्रहण किया गया है - उ० - लैटिन भाषा से,
३. कम्यूनिस (Communism) के तात्पर्य है - उ० - सामान्य सामान्य.
४. सम्प्रेषण सम्भव है - उ० - दो एक ही जगति के जीवों में, एक जीवित प्राणी एवं मशीनों के मध्य, ग्रह्य, एक व्यक्ति एवं समूह के मध्य.
५. रन्दरसन ने बताया है - उ० - सम्प्रेषण को एक गत्यात्मक प्रक्रिया.
६. लीगन्स के अनुसार सम्प्रेषण का तात्पर्य है - उ० - दो या दो से अधिक व्यक्त व्यक्तियों के मध्य विचार विनिमय, दो व्यक्तियों के मध्य वार्तालाप, दो व्यक्तियों के मध्य अन्तः प्रक्रिया.
७. सम्प्रेषण है एक - उ० - प्रक्रिया, जो कि स्रोत से लेकर ग्रहणकर्ता के मध्य सञ्चलित होती है, विचार-विनिमय की द्वारा है, सूचनाओं के हस्तान्तरण की विधि है.
८. सम्प्रेषण की प्रकृति होती है - उ० - विचार-विमर्श की प्रक्रिया, उद्देश्य परक प्रक्रिया, मनोसामाजिक प्रक्रिया.
९. सम्प्रेषण की प्रकृति किस के अनुकूल है - उ० - निर्देशात्मक प्रक्रिया, प्रवृत्तपोषण युक्त प्रक्रिया, गत्यात्मक प्रक्रिया.
- सम्प्रेषण की प्रकृति किस के अनुकूल नहीं है - उ० - निष्क्रिय निष्क्रिय प्रक्रिया.
१०. सम्प्रेषण के प्रमुख तत्व हैं - उ० - स्रोत - प्राप्तकर्ता.
११. सम्प्रेषण की सरल प्रक्रिया के तत्व हैं - उ० - संदेश स्रोत - संदेश माध्यम - संदेश प्राप्तकर्ता.
१२. संदेश वाहक का कार्य है - उ० - संदेश का निर्माण करना, संदेश को स्रोतों में बदलना, संदेश को प्रसारित करना.
१३. संदेश के गुजरने वाले मार्ग को कहते हैं - उ० - चैनल.
१४. संदेश ग्रहण करने के लिए संदेश प्राप्तकर्ता को क्या करना अनिवार्य है - उ० - इसमें संदेश को प्रसारित करने की योग्यता हो, इसमें संदेश को डिकोडिंग करने की योग्यता हो, इसमें संदेश की व्याख्या करने की योग्यता हो.



१५. संदेश को संकेतों में बदलता है - उ० - स्मकोडिंग।  
१६. डिकोडिंग का सम्बन्ध है - उ० - संदेश प्राप्तकर्ता से।  
१७. डिकोडिंग को अन्तर्गत संदेशों के साथ कौन सी प्रक्रिया की जाती है - उ० - संदेश संकेतों में बिसे गुप्त संदेशों को सगन्ना जाता है।

सम्प्रेषण के प्रकार हैं - ~~दो~~ उ० - दो।

१८. शाब्दिक सम्प्रेषण किया जाता है - उ० - भाषा के माध्यम से।  
१९. यदि आप किसी विदेशी व्यक्ति की भाषा से अनजान हैं तो संदेश का सम्प्रेषण कैसे करेंगे? - सांकेतिक भाषा में।  
२०. अशाब्दिक सम्प्रेषण सम्भव है - उ० - चतुर्भुज के द्वारा।  
२१. सम्प्रेषण में उत्पन्न होने वाली बाधाओं को वर्गीकृत किया जा सकता है - उ० - भौतिक, भाषा संबंधी एवं मनोवैज्ञानिक बाधाओं में।

२२. सम्प्रेषण की सबसे बड़ी बाधा है - उ० - शोर।

२३. सम्प्रेषण की बाधा का निराकरण संभव है यदि - उ० - यह सरल, सुगम्य हो, यह प्रतिपुष्टि युक्त हो, यह उत्तम श्रवण संबंधी नियमों का अनुपालन करने वाला हो।

२४. सम्प्रेषण की बाधाओं पर नियंत्रण प्राप्त की जा सकती है यदि - श्रवणकर्ता में उत्तम श्रवण संबंधी सभी गुण विद्यमान हों, श्रवणकर्ता उचित स्थिति में हो, श्रवणकर्ता को कुछ लक्ष्य प्रतीत होता हो।

२५. एक प्रभावी सम्प्रेषण में आवश्यकता नहीं है - उ० - द्रावों के लगाव (Interrelationship) की।

२६. एक श्रेष्ठ शिक्षक शिक्षण शिक्षक के किस गुण में निहित माना जाता है? - उ० - व्यावसायिक निष्ठा एवं प्रेम में।

२७. एक प्रभावी शिक्षक अनुनिश्चित करता है - उ० - अपने क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा अथवा सहयोग को जिसकी भी आवश्यकता हो।

२८. यदि आपका एक साथी आपकी उस कृति के प्रति ईर्ष्या करता है जो आपने कक्षा में की थी (पढ़ाते समय) तो आप उसकी आलोचना के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करेंगे?



-30- आप उक्त कृति पर शिक्षक छात्रों के साथ विचार-विमर्श करेंगे, उसे समझाएंगे, यदि गलत सिद्ध हुर तो तो मानेंगे तथा अन्यथा उनका धन्यवाद ज्ञापन करेंगे,

30. यदि आप के मदने के उपरान्त भी छात्र किसी विषयवस्तु को समझने में असमर्थ रहे हैं, तो आप क्या करेंगे?

30- आप पुनः नये ढंग से समझाने का प्रयास करेंगे,

31. आप एक पुष्पावधाली सम्प्रेषण सम्प्रेषणकर्ता के लिए अनिवार्य रूप से प्रथम चरण मानते हैं - 30- सम्प्रेषण के लक्ष्यों का निर्धारण करना.

32. यदि आपकी नियुक्ति किसी महाविद्यालय में एक शिक्षक के रूप में हो जाती है, तो आप अपनी कक्षा में छात्रों के प्रति कैसा व्यवहार करेंगे? - 30- प्रजातान्त्रिक.

33. देश में वैज्ञानिक जागरूकता पैदा करने की दृष्टि से जनसाधारण के प्रदर्शन हेतु कौन सी श्रेष्ठाल-ट्रेन चलाई गई थी?

-30- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी रेल,

34. यदि आप अपने कक्षाओं में प्रजातान्त्रिक प्रवृत्तियों को सम्प्रेषित करने के लिए उत्सुक हैं, तो कौन सी पद्धति इस लक्ष्य की सम्भावित पूर्ति करने में समर्थ सिद्ध होगी?

30- आप अपने दैनिक व्यवहार में प्रजातान्त्रिक मूल्यों को तर्जनी दीजिए तथा कक्षा के समस्या-छात्रों को कक्षा प्रबंधन हेतु में संलग्न कीजिए तथा उन्हें उपयुक्त इयूटी भी बंटिए.

35. शिक्षण का सम्प्रेषण प्रभावी हो इसके लिए आवश्यक है - 30- शिक्षक वहाँ से प्रारम्भ करे जहाँ तक छात्र जानते हैं.

36. एक सम्प्रेषण क्रिया प्रक्रिया में पूर्ण-पोषण का अन्तिम लक्ष्य होता है - 30- सम्प्रेषण प्रक्रिया में अभाव परिवर्तन करना.

37. शिक्षा-मनोविज्ञान का आधारभूत कार्य है प्रशिक्षकों को -

30- छात्रों की आवश्यकताओं, समस्याओं एवं व्यवहार की रटाइल में अन्तर्मुख अन्तर्मुख पैदा करना.



इद. यदि एक शिक्षक अपने विचारों को जली भाँति दूँगे से छात्रों तक पहुँचाने में असमर्थ रहता है, तो इसका परिणाम होगा - ऊ - कक्षा में अनुशासन का स्थापन, शिक्षक के द्वारा पढाए जाने वाले टॉपिक में छात्रों की रुचिका स्थापन, कक्षा में छात्रों की अधिकाधिक अनुपस्थिति.

इद. जनसंचार (Mass Communication) की एक प्रमुख सीमा है - पृष्ठ-पोषण तंत्र - अत्यधिक दुर्बल स्थिति में होता है.

४०. कौन सी स्थिति में छात्र अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता के साथ पारस्परिक क्रियाओं में व्यस्त रह सकते हैं - ऊ - छोटे समूह के साथ विचार-विमर्श करने पर,

४१. कौन सी स्थिति में कक्षा - सबसे अधिक प्रभावी सिद्ध होगी - ऊ - यदि शिक्षक शिक्षण के दौरान छात्रों को इलेक्स करते हैं.

४२. यदि आप अपनी कक्षा में प्रभावी सम्प्रेषण जारी रखने में रुचि रखते हैं, तो आपको करना होगा - ऊ - संदेश देने वाले के संकेतों को छात्रों का हृदयों द्वारा पकड़ा जाना.

४३. आपके मतानुसार कौन सा एक कक्षा में प्रभावी सम्प्रेषण के मार्ग में बाधा माने जा सकते हैं - ऊ - एक दीर्घ कथन, एक अस्पष्ट कथन, एक ऐसा कथन जो श्रवणकर्ता को यह अवसर प्रदान करे कि वह स्वयं इससे निष्कर्ष निकाले,

४४. आपके मतानुसार एक कक्षा में प्रभावी सम्प्रेषण में बाधा नहीं माना जा सकता - ऊ - एक संक्षिप्त कथन.

४५. किसी शोध कार्य को सम्प्रेषित करने के लिए कौन सी वस्तु अनिवार्य है ? - ऊ - भाषा पर सम्पूर्ण प्रभुत्व, उद्देश्यों का कथन.

४६. आपके अनुसार यदि एक शिक्षक को उत्तम सम्प्रेषणकर्ता मान लिया जाए, तो उसकी प्रमुख इच्छा होनी चाहिए - ऊ - वह छात्रों में निम्नतम योग्यता का संचार करे.

४७. सभ्यता औपचारिक स्वयं अनौपचारिक सम्प्रेषणों में गुण निहित रहता है - ऊ - सभ्यता.



४०. प्रायः सम्प्रेषण में प्रत्यक्षीकरण, धारणा, एवं पुनर्वहन की स्थिति होती है - ३० - नैन ल चरों के समान,

४१. एक प्रभावी सम्प्रेषण में आप किस पद को प्राथमिकता प्रदान करेंगे - ३० - सम्प्रेषण के उद्देश्यों का विविधीकरण करना।

४२. एक प्रभावी सम्प्रेषण प्रक्रिया में आवश्यकता नहीं होती है - ३० - सौन्दर्यपूर्ण व्यवस्थित्व की,

एक प्रभावी सम्प्रेषण में आवश्यकता होती है - ३० - वाणी में उतार-चढ़ाव या अन्य परिवर्तनों की, उचित श्रुतियों की, विषय-वस्तु की 'ग्रास्टरी' की

४३. कौन सा कथन सत्य नहीं है? - ३० - "एक उत्तम सम्प्रेषणकर्ता का भाषा पर अधिकार होता है"

कौन सा कथन सत्य है - ३० - "एक उत्तम सम्प्रेषणकर्ता - एक उत्तम शिक्षक नहीं हो सकता है" "एक उत्तम सम्प्रेषणकर्ता में - क्षमता की उत्तम अनुभूति होती है, एक उत्तम सम्प्रेषणकर्ता में बृद्ध पठनीय क्षमता होती है"

४४. एक कक्षा में सम्प्रेषण के माध्यम में सबसे बड़ा व्यवधान है - ३० - कक्षा में अत्यधिक शोर।

४५. एक प्रभावी सम्प्रेषण, संदेश ग्रहणकर्ता में उत्पन्न करता है - ३० - स्वीकृति

४६. एक शिक्षक को प्रभावी सम्प्रेषणकर्ता के रूप में स्वयं को कक्षा में स्थापित करने के लिए कौन सा उपाय अपनाना चाहिए? - ३० -

१६ किसी पाठ के संदर्भ में पूछे जाने वाले प्रश्नों को सही उत्तर देने में छात्रों की मदद करे,

२४. प्रायः कई बार ऐसा देखा गया है कि कक्षा में शिक्षण सम्प्रेषण असफल हो जाता है - ३० - क्योंकि - ३० - कक्षा के अंदर शब्द बाह्य अत्यधिक शोर जारी है,

२५. प्रभावी सम्प्रेषण सम्पन्न होगा यदि - ३० - संदेश को श्रवणकर्ताओं के अनुकूल दिनाइन किया गया है -

२६. शिक्षक को अपने सम्प्रेषण में प्रयुक्त करना चाहिए - ३० - दीर्घ स्वर (Elongated Tone)



पू७. कक्षा में सम्प्रेषण प्रक्रिया को दोषयुक्त बनाता है? - 30 -  
ल्युल्कमीकरण (Reverberating) - मूलयोजित करना - केन्द्रित करना  
(Focusing), मूलयोजित करना - केन्द्रित करना - उद्घरण देना,  
मूलयोजित करना - केन्द्रित करना - बढ़ा-चढ़ाकर बताना.

कक्षा में सम्प्रेषण प्रक्रिया को दोषयुक्त नहीं बनाता है? - 30 -  
मूलयोजित करना - उद्घरण प्रस्तुत करना - बढ़ा-चढ़ाकर बोलना  
(Exaggerating)

पू८. कक्षा में होने वाले शोर को नियंत्रित करने की सर्वोत्तम विधि है - 30 -  
शिक्षक बिलकुल शांतिपूर्वक खड़ा रहे तथा सम्पूर्ण कक्षा का नेत्रों से  
शुद्ध निरीक्षण करे.

पू९. एक प्रभावशाली उत्तम शिक्षक में आप-कौन से गुण देखना / महसूस करेंगी - 30 -  
- 30 - विषय-वस्तु गहन ज्ञान, प्रभावी शब्दिक सम्प्रेषण, छात्रों से सम्मान  
प्राप्त करने की क्षमता.

पू१०. एक उत्तम शिक्षण के लिए शिक्षक द्वारा कक्षा में दिये जाने वाले व्याख्या  
संबंधी शिक्षण कौशल हैं - 30 - कक्षा में सम्प्रेषण बूझों का (Booster) का  
अधिकाधिक प्रयोग करना, उद्दीपक में परिवर्तन करना, प्रश्न-पूछने की  
कुशलताएँ

पू११. वृद्ध-पोषण से सम्प्रेषण प्रक्रिया में लाभ प्राप्त होता है - 30 - यह सम्प्रेषण  
को शुद्ध और स्पष्ट बनाता है

पू१२. प्रभावी सम्प्रेषण का द्योतक है - 30 - छात्रों के लिए जो भी लाभप्रद  
हो उसे बतायें

पू१३. शिक्षक के विचारों का छात्रों तक सम्प्रेषण का तात्पर्य है - 30 - विचारों  
विचारों का अस्तित्व में अवलोकन करना.

पू१४. जब आप कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं, तो यह अधिक  
अच्छा है, यदि आप - 30 - यह जानें कि आपके विचार के प्रतिरूप  
अन्य व्यक्तियों के विचार क्या हैं, यह जानें कि कक्षा में बैठे  
सम्बन्धित छात्र-समूहों (Homogeneous) प्रकृति को नहीं है, अन्य  
विचारों को भी प्रयोग करने दें.

पू१५. एक शिक्षक का कक्षा में प्रभावी शिक्षण होगा यदि - 30 - वह छात्रों को  
अनेक प्रकार के इच्छित अनुभव (Diverse experiences) प्रदान करता है,



इसके वृद्धि करने में प्रायः ऐसा देखा गया है कि अधिकांश व्यंश शिक्षक को कोशिश देने का प्रयास कर रहे होते हैं, इसमें दोष है - उच्च शिक्षण प्रक्रिया का।

## Information and communication Technology ICT

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी

Data and Information

प्रदत्त एवं सूचना।

## Information communication Technology - ICT

सूचना संप्रेषण तकनीकी

Application

प्रयोग, उपयोग।

## Computer Assisted Instruction CAI

कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन

Terminology Related to computer

कम्प्यूटर सम्बंधी शब्दावली।

## Computer Assisted Designing CAD

Disk operating system DOS

Read only Memory ROM

Random Access Memory RAM

Picture & Picture cells PIXEL

Power Supply Unit PSU

Compact Disc-Read only Memory CD-ROM

Local Area Networking LAN

Wide Area Networking

उच्च शिक्षा में वैश्वीय अभिमुखीकरण या उच्च शिक्षा में व्यावसायीकरण

~~Common~~ Career Orientation in Higher Education or Vocationalization of Education.

संगठनात्मक ढाँचे का = Organizational structure

आवासीय विश्वविद्यालय = Residential Univ. = शैक्षणिक शिक्षण विश्वविद्यालय

संबद्ध विश्वविद्यालय = Affiliating Univ.

आवासीय-संबद्ध विश्वविद्यालय = Residential cum Affiliating Univ.



स्वायत्तता = Autonomy

समवर्ती = Concurrent list.

3 7 3  
1 96  
1 87

- Banks with Authors.

समन्वय एवं प्रमोशन मशीनरी  
Co-ordinations and Promotional Machinery.

पारम्परिक विश्वविद्यालय = Traditional Univs.

खुला विश्वविद्यालय = open Univs.

(विश्वविद्यालय स्वायत्तता)  
University Autonomy,  
विश्वविद्यालय हेतु कानून-प्रणाली  
legislation for Univs.

उच्च शिक्षा का नियंत्रण राज्य शासन एवं प्रशासन

Governance Policy and Administration of Higher Education

★ SCOVE ⇒ Standing Committee of Vocational Education

University Grants Commission - U.G.C.

National Council of Educational Research and Training - NCERT

Inter-University Board (IUB) or Association of Indian Universities - AIU

HRDM - मानव संसाधन विकास मंत्रालय - Human Resource Development Ministry

Central Advisory Board of Education - C.A.B.E

Indian Council Council of Secondary Secondary Education - ICSE

राष्ट्रीय ग्रामीण उच्च शिक्षा परिषद् National Council of Rural Higher Education

- NCRHE

All India Council of Technical Education - AICTE

National Council of Teacher Education - NCTE

All India Council of Women Teachers - AICWT

All India Board of Adult Education - AIBAE

National Board for Promotion of Books - NBPB

CAB - Central Advisory Board Organisation for Physio-physical Education and Entertainment

All India Council for Sports - AICS

Central Institute of Educational Technology - CIET

Regional Colleges of Education - RCE's

International Center for Material Science - ICMS } situated in Bangalore  
CNR Hall of Science - Started in year 2008 Dec 4.

= Unitary Teaching Univs. ★ संघीयता का विश्वविद्यालय (Unitary Teaching Federal Univs)



१. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का कार्य है - उ० - सूचनाओं का संग्रहण एवं संचालन करना, सूचनाओं का सम्प्रेषण करना, सूचनाओं का प्रोसेसिंग करना.

२. पदत सूचना - उ० - सूचना पदों से जन्म लेती है.

३. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का लक्ष्य है - उ० - शिक्षा एवं अनुसंधान तंत्रित ~~सम~~ विषय सामग्री का अधिकाधिक संचार करना, वर्तमान पीढ़ी को प्रभावी 'साइबर शिक्षा एवं' में प्रतिस्थापित करना, विभिन्न अनौपचारिक शिक्षा पाठ्यक्रमों का प्रचार-प्रसार करना.

४. सूचना सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की आवश्यकता शिक्षा जगह में है - उ० - शिक्षा की बढ़ती गति को संतुष्ट करना तथा एक ज्ञान समृद्ध समाज (Knowledge based Society) का निर्माण करना.

५. मल्टी मीडिया किट तैयार करने का प्रथम पद है - उ० - पाठ्यवस्तु एवं उसके उद्देश्यों का निर्धारण करना, उपयुक्त सम्प्रेषण तकनीकी का चयन करना, उपयुक्त तकनीकी का प्रयोग करने के लिए निर्देशों का अनुपालन करना.

६. सूचना सम्प्रेषण तकनीकी की शिक्षा में कृत्रिम है - उ० - आगने-सागने बैठकर परामर्श प्रदान करना, टेलीफोन द्वारा परामर्श प्रदान करना, गैलरी-दृश्य कंसोल का परामर्श में प्रयोग करना.

७. आजकल सूचना क्रांति का युग है, जहाँ सूचनाएँ मानी जाती हैं - उ० - उपभोग की वस्तुएँ, आर्थिक विकास की वस्तुएँ, सशस्त्र शस्त्रीय उन्नति एवं विकास की वस्तुएँ.

८. कम्प्यूटर कम्प्यूटर कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं कर सकता है - उ० - प्रोग्राम के बिना.

९. कम्प्यूटर वाक्य का प्रायः प्रयोग किया जाता है C.P.U तथा - उ० - आन्तरिक मेमोरी (Internal Memory) के लिए

१०. एक डिजिटल कम्प्यूटर में कंट्रोल यूनिट (Control Unit) को कहा जाता है - उ० - घड़ी (क्लॉक), आई सीयू (ICU), नर्व सेक्टर.

११. आदेशों का समूह (Group of Instructions) जो कम्प्यूटर को निर्देशित करता है, उन्हें कहते हैं - उ० मेमोरी (Memory)

१२. कम्प्यूटर आधारित सूचना तंत्र में किस प्रकार का सर्वाधिक हाईवेयर इनपुट फेज में प्रयोग किया जाता है - उ० - कीबोर्ड (Keyboard)



93. एक कम्प्यूटर सिस्टम में किस प्रकार की सुविधाएँ उपयोगकर्ता को इसमें अन्य कम्पोनेन्ट्स (Components) और कैपेबिलिटीज (Capabilities) को जोड़ने की सुविधा प्रदान करते हैं? - डै - एक्सपेंसन्स रिलाइंस (Expansibility)

94. भारत में सर्वप्रथम कम्प्यूटर कब और कहाँ स्थापित किया गया? - डै - इण्डियन स्टेटिस्टिकल इंस्टीट्यूट, कोलकाता, 1955 में.

95. 'कम्प्यूटर का पितामह' कहा जाता है? - डै - चार्ल्स बैबेज को.

96. कौन सी मापन यूनिट को कम्प्यूटर सिस्टम के संदर्भ में प्रयोग किया है? - डै - बाइट, किलोबाइट, मेगाबाइट, Byte, Kilobyte, Megabyte.

97. हार्ड डिस्क सर्व डिस्कैटी (Diskette) हैं - डै - डाइरेक्ट एक्सेस स्टोरेज डिवाइसेज (Direct Access Storage Devices) D A S D

98. कम्प्यूटर के द्वारा सम्पन्न होने वाले सभी कार्य निम्नलिखित होते हैं - डै - सी पी यू (CPU) द्वारा.

99. कम्प्यूटर आधारीय सूचना तंत्र में आउटपुट फेज में कौन सी क्रिया व्यक्त होती है - डै - सूचनाओं की हार्ड कॉपी या सॉफ्ट कॉपी तैयार की जाती है.

100. कम्प्यूटर आधारीय सूचना तंत्र को उत्तम ढंग से किस प्रकार वर्णित किया जा सकता है - डै - एक ऐसा सिस्टम जिसमें कम्प्यूटर का प्रयोग प्रदत्तों (Data) को सूचनाओं में परिवर्तित करने के लिए किया जाता है.

101. कम्प्यूटर्स को प्रयोग करने से लाभ हैं कि - डै - कम्प्यूटर द्वारा गणनाएँ तीव्रता से की जाती हैं तथा इसमें अधिकाधिक डेटा को सुरक्षित रखा जा सकता है, यदि आपका इनपुट अशुद्ध हो, तो भी प्राप्त आउटपुट शुद्ध होगा, कम्प्यूटर कभी न थकने वाली शक्तीन है.

102. प्राथम स्तर पर कम्प्यूटर्स का प्रयोग किया जाता है - डै - इनपुट - आउटपुट की इन्टरेक्टिव प्रोसेसिंग में, डेटा रिक्रीवल ऑपरेशन्स में, मैथेमेटिकल - इन्टरेक्टिव साइंटिफिक एप्लीकेशन्स में.



OER = Optical Character Reader

OMR = Optical Mark Reader

ROM =

23. एक कम्प्यूटर को चालू (स्कोलने) करने के लिए सूचनाएँ संग्रहीत होती हैं - उ- रोम (ROM - Read only मेमोरी) में.

24. कम्प्यूटर चटकों में सर्वाधिक तीव्र गतिवाला चटक है - उ- सीपीयू (CPU) डेटा इन्पुट (Data Entry) की जा सकती है - उ- ओसीआर (OCR) द्वारा, ओएमआर (OMR) द्वारा, स्वर पहचान सिस्टम द्वारा, डेटा स्क्रीन नहीं की जा सकती - उ- कोम (COM) द्वारा. ~~25. MICR के प्रयोग से लाभ हुआ है - उ- कैश रहित समाचके निर्माण में.~~

26. ऑप्टिकल कैरेक्टर रीडर (Optical Character Reader - OCR) यह सकता है - उ- मशीन को.

27. भौतिक टेप कार्य कर सकता है - उ- इनपुट मीडिया की तरह, आउटपुट मीडिया की तरह, सेकेन्डी स्टोरेज मीडिया की तरह.

28. डेटा प्रोसेसिंग प्रोसेसिंग का सर्वाधिक शिथिली ढंग है - बैच प्रोसेसिंग (Batch Processing)

29. 'चैक' (Check) की धनराशि (Amount) भौतिक टिक के रूप में रिकॉर्ड किया जाता है - उ- एन्कोडर (Encoder) के द्वारा.

30. एक फ्लॉपी डिस्क (Floppy Disk) में <sup>निहित</sup> होता है - 1,440,000 बाइट्स.

31. दो प्रमुख प्रकार के कम्प्यूटर चिप्स होते हैं - उ- माइक्रो मेमोरी चिप, माइक्रो प्रोसेसर चिप.

32. कम्प्यूटर का मॉनीटर इससे जुड़ा रहता है - उ- एक केबिल के द्वारा.

33. एक कम्प्यूटर सिस्टम में कार्य के आधार पर कौन-सी डिवाइस की-बोर्ड के ठीक उल्टा (विपरीत) है - उ- प्रिंटर (Printer)

34. एक मॉनीटर एक टीवी सेट की तरह दिखाई देता है, किन्तु यह नहीं कर पाता है - उ- टीवी संकेतों की प्राप्ति.

35. लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) में प्रयोग नहीं किया जाता है - उ- मोडेम को. (Local area networking)

36. मोडेम को कनेक्ट किया जाता है - उ- टेलीफोन लाइन एवं कम्युनिकेशन सप्लायर के मध्य.

लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) में प्रयोग किया जाता है - उ- प्रिंटर को, केबिल को, कम्प्यूटर को.



उद्दी. जब हम एक विशेष श्रृंखला में कम्प्यूटर्स के समूह को परस्पर जोड़ देते हैं और उन्हें जोड़ने में टेलीफोन लाइन का इस्तेमाल नहीं करते हैं, तो इसे कहा जाता है - उ० - लोकल श्रृंखला नेटवर्क (LAN)

४०. एक ऐसा कम्प्यूटेशनल नेटवर्क जो बृहद् संस्थानों/प्रतिष्ठानों के द्वारा क्षेत्रीय, राष्ट्रीय अथवा वैश्विक सूचनाओं के सम्मेषण में मदद करता है, उसे कहते हैं - उ० - WAN.

४१. एक बाइट बराबर होती है - उ० - 8 बिट्स के.

४२. एक किलोबाइट (1KB) = 1024 बाइट्स

मेगाबाइट (1MB) = 1000 किलोबाइट्स.

४३. एक कम्प्यूटर की ~~क्लॉक स्पीड~~ (Clock speed) का मापन किया जाता है - उ० - मेगाबाइट्स एवं गीगाबाइट्स में.

४४. एक कम्प्यूटर अपनी सभी गणितीय एवं तार्किक गणनाएँ करता है - उ० - मेमोरी यूनिट में.

४५. एक कम्प्यूटर की ~~क्लॉक स्पीड~~ (Clock speed) का मापन किया जाता है - उ० - मेगाहर्ट्ज, गीगाहर्ट्ज में.

४६. एक कम्प्यूटर अपनी सभी गणितीय एवं तार्किक गणनाएँ करता है - उ० - सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट में (CPU) (Central processing Unit)

४७. कम्प्यूटर के संचयन में 'रैम' (RAM) से तात्पर्य है - उ० -

रीड आउट रैन्डम एक्सेस मेमोरी. (Random access memory)

४८. इनपुट डिवाइस का उदाहरण है - उ० - की-बोर्ड, माउस, ऑप्टिकल मार्करीडर (Optical mark reader) Keyboard, Mouse.

४९. प्रोग्राम शब्द से तात्पर्य है - उ० - सूचनाओं (आदेशों) की सूची.

५०. C, C++ एवं जावा - उदाहरण हैं - उ० - प्रोग्रामिंग लैंग्वेज के.

५१. UNIX (यूनिक्स) DOS (डॉस) एवं WINDOWS (विन्डोज) उदाहरण हैं - उ० - ऑपरेटिंग सिस्टम के.

५२. मल्टीमीडिया डिवाइसेज के द्वारा कम्प्यूटर को प्रयोग किया जाता है - उ० - मनोरंजन के लिए.

५३. किन्हीं दो अंकों को जोड़ने का ऑपरेशन किया जाता है

- उ० - (इ. एल. यू.) ALU में



५२. रनिस्टर्स (Registers) डेटा गति वाले रेलीमेण्ड्स हैं, जो कि स्थित रहते हैं - सीपीयू (CPU) में
५३. 'मशीन लैंग्वेज' एवं 'असेम्बली लैंग्वेज' (Assembly Language) उदाहरण हैं -  $\rightarrow$  Low Level Language के (लो लेवल लैंग्वेज के)
५४. M.T.M.L (म.टी.एम.एल) एक संक्षिप्त नाम है, जिसे प्रयोग किया जाता है -  $\rightarrow$  एक ऐसी भाषा के लिए जिसे वेब पेज तैयार करते हैं (web page)

५५. <http://WWW> एक नामिनेशन कॉम - थ्रू एक उदाहरण है -

$\rightarrow$  यू आर के (URL) का

५६. एक संगठन के प्रारंभिक वेब पेज को कहते हैं -  $\rightarrow$  होम पेज (Home page)

५७. POP3 एवं IMAP - ऐसे ई-मेल शकाउट हैं, जिनके द्वारा एक व्यक्ति को एक सर्वर (Server) से जोड़ दिया जाता है जिससे कि वह ई-मेल भेज सके तथा प्राप्त कर सके

५८. संक्षिप्त शब्द डी.एन.एस. (DNS) का तात्पर्य है -  $\rightarrow$  डोमेन नेम सिस्टम (Domain Name System)

५९. सर्वप्रथम भौतिक रूप से डिजिटल कैलकुलेटर ईजाद किया था -  $\rightarrow$  ब्लेन पार्स्कल ने

६०. आधुनिक कम्प्यूटर का पिता कहते हैं -  $\rightarrow$  चार्ल्स बैबेज को

६१. प्रथम इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर का नाम था -  $\rightarrow$  एनिएक (ENIAC)

६२. किसे बिट्स एवं बाइट्स में ना पते हैं -  $\rightarrow$  कम्प्यूटर स्टोरेज कैपेसिटी

६३. विश्व के क्षेत्रों में कौनसा नेटवर्क सर्वप्रथम विकसित किया गया -  $\rightarrow$  वैन (WAN) *wide area networking*

६४. गेटवेज (Gateways) को जोड़ने के लिए प्रयोग किया जाता है -  $\rightarrow$  दो विच्छिन्न असमान नेटवर्कस को

६५. मोडेम (MODEM) को हम प्रयोग करते हैं, जब हम डेटा को सम्प्रेषित करते हैं -  $\rightarrow$  वैन (WAN) में

६६. कौनसी टोपोलॉजी (Topology) सर्वोत्तम है -  $\rightarrow$  Bus Topology

६७. इन्टरनेट से एक व्यष्टि को लाभ है -  $\rightarrow$  वह अपने काम को अधिकतम बना सकता है तथा उसे संवर्धित करता है



वह छात्रों को परामर्श प्रदान कर सकता है, वह शिक्षण हेतु शिक्षण सहायक सामग्री तैयार कर सकता है.

इस वेबपेज के क्रेडिट को इंटरनेट सर्विस के माध्यम से उपलब्ध कराने वाले उपकरण को कहते हैं - उ० - सर्वर (Server)

इस वेब क्लाइंट्स (Web Clients) को कहते हैं - वेब ब्राउज़र (Web Browser)

उ०. एमएस वर्ड MS WORD उदाहरण है - उ० - (एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर) Application Software का.

उ० MS WORD के लाभ हैं - उ० - पत्र-लेखन संबंधी कार्यों में, व्याख्यान तैयार करने संबंधी संबंधी कार्यों में, परीक्षा प्रश्न-पत्र तैयार करने में.

उ०. एक अध्यापक प्रश्न-बैंक (Question Bank) तैयार कर सकता है - उ० - एम.एस. वर्ड की सहायता से.

उ०. (MS WORD) में अन्तिम क्रिया (Last Action) को विपरीत किया जा सकता है (UNDO) के द्वारा.

उ०. हेडर्स (Headers) एवं फुटर्स (Footers) प्रदर्शित किए जाते हैं - उ० - In Print Layout.

उ०, आप टेक्स्ट करने के लिए, सामग्री के सम्पादन के लिए तथा उसकी फॉर्मेटिंग (Formatting) करने के लिए, कम्प्यूटर शिक्षण शिक्षका उपयोग करेंगे - उ० - Normal पैराग्राफ का.

उ०. प्रस्तुत किए जाने वाले पैकेज (Presentation Package) तथा Slides को तैयार किया जाता है - उ० - (Power Point) में.

उ०, एक व्यक्ति पावर पॉइंट के द्वारा 'प्रेजेंटेशन' (Presentation) कर सकता है (प्रदर्शित कर सकता है) - उ० - सेल्स प्रजेंटेशन के लिए, शिक्षण के लिए, सम्मेलन के प्रशिक्षण के लिए (अभिव्यक्त - सम्मेलन) के लिए.

उ०. Power Point में New Presentation तैयार करने के लिए हम किस कमेंड कर्मांड का प्रयोग करेंगे - उ० - डॉटो कन्टेन्ट विज़र्ड (Auto Content Wizard)

उ०. New Slide के चुनाव के लिए आप (Menu Bar) में नुबार् के कौन से भाग को खोलेंगे - उ० - इन्सर्ट (Insert).



65530  
क. Slide order को परिवर्तित करने के लिए आप किस कमान्ड का  
समूह चुनाव करेंगे - ऊ - Slide sorter.

जी. रिक्त स्लाइड को बदला जा सकता है - ऊ - Insert Menu में

च. हम Report card तैयार कर सकते हैं - ऊ - एक्सेल (Excel) में

छ. हम एक (Pie Graph) पाई ग्राफ बना सकते हैं - ऊ - एक्सेल में

द. एक Worksheet में 256 Columns हैं, उसमें पंक्तियाँ (Rows) होती हैं

- ऊ - 65536.

द. एक्सेल (Excel) में सभी सूत्र (Formulae) प्रारम्भ होते हैं - ऊ - (=) बराबर  
के चिह्न से.

क. मल्टी मीडिया है - ऊ - एक टेक्नोलॉजी टेक्नोलॉजी.

ख. पारम्परिक कम्प्यूटर में कमी होती है - ऊ - प्रभावी सन्निवेश में

ग. मल्टी मीडिया में CD-ROM की रेंज (Range) का इस्तेमाल किया  
जाता है - ऊ - 200-600 मेगाबाइट (MB)

घ. देशीय प्रोग्रामिंग का जनक माना जाता है - ऊ - बी.एफ. स्किनर को.

च. Computer Assisted Instruction का उपयोग किया जाता है - ऊ - नानात्मक  
सर्व भावनात्मक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु.

द. Computer Assisted Instruction का एक प्रकार है - ऊ - एडिटेड  
श्रृंखला.

इ. Modem का तात्पर्य है - Modulator - Demodulator  
मोडेम का तात्पर्य है - माड्युलेटर - डिमाड्युलेटर.

१. सन् २००२-०३ तक उच्च शिक्षा में (विश्वविद्यालयों की संख्या में) वित्त  
गुणा वृद्धि दर्ज की गई है - ऊ - १३ गुना.

२. २००५ तक भारत में डीम्ट विश्वविद्यालयों की संख्या है  
- ऊ - ८८

३. भारत में आनकल कृषि शिक्षा संस्थानों की संख्या है - ऊ - ३८.

४. देश में कुल विश्वविद्यालयों की संख्या है - ऊ - ६.

५. देश में कुल महिला विश्वविद्यालय हैं - चार.

६. दसवीं पंचवर्षीय योजना में उच्च शिक्षा परिलक्ष्य है - ऊ - ५१७५ लाख रुपए

७. दसवीं पंचवर्षीय योजना (२००२-०७) में उच्च शिक्षा का विकास आत्मक उद्देश्य है  
- ऊ - Sustainable मानव विकास, विश्व शान्ति में उपयुक्तता, शिक्षण गुणवत्ता

में सुधार.



मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिवेदन (2002-03) में उच्च शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य हैं - 30 - उच्च शिक्षा की उपयुक्तता पर बल, उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, मूल्यमूलक स्वयं एम्प्लॉयमेंट पर बल, अनुसंधान एवं विकास पर बल

क. दसवीं पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उच्च शिक्षा हेतु बजट निर्धारित किया था - 30 - 516.75 करोड़ रुपये

90. उपर्युक्त बजट के अन्तर्गत जो स्कीम लागू की गई थी, वह है - 30 - विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों का सामान्य विकास, पहुँच एवं सापेक्ष सहभागिता में वृद्धि, उपयुक्त वैश्विक उन्नयन

क. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने दसवीं योजना के अन्तर्गत निर्धारित बजट में 10 प्रतिशत अतिरिक्त बजट को सुचिंतित किया है - 30 - उत्तर-पूर्वी विश्वविद्यालयों स्वयं उनके संश्लेषक महाविद्यालयों के लिए

92. 2002-03 तक सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में छात्रों के नागरिकता की संख्या थी - 88.25 लाख

93. उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं का अनुपात कुल छात्र संख्या के संदर्भ में 2002-03 तक था - 30 - 28%

94. देश में छात्राओं का उच्च शिक्षा में सर्वाधिक नागरिकता वाला राज्य था (2002-03 तक) केरल

95. 2001 तक देश के सभी विश्वविद्यालयों द्वारा प्रदत्त पी.एच.डी. डिग्री की संख्या थी - 30 - 11,450

96. 2002-03 के आँकड़ों के अनुसार, विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की संख्या 0.75 लाख है इनमें हैं - 20.22 प्रतिशत प्रोफेसर, 31.55 प्रतिशत रीडर तथा 45.78 प्रतिशत व्याख्याता

97. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कैरियर अग्रिममुखीकरण कार्यक्रम का प्रारम्भ किया था - 30 - 1994-1995 में

98. उच्च शिक्षा में व्यावसायिकरण शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है - 30 - उच्च परास्नातक कक्षाओं में प्रवेशार्थी छात्रों की वाद को रोकना

99. स्कोवी (SCOPE) का तात्पर्य है - 30 - Standing Committee of Vocational Education



22. U.C.C की SCOPE की स्थापना करने वाला अधिकरण है - डू-उ.क.क.

23. U.C.C की SCOPE के लक्ष्य हैं - डू- ऐसी संस्थाओं की पहचान करना। जिनमें व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लागू किया जा सकता है, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करना, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए अध्ययन सामग्री तैयार करना।

24. विश्व बैंक से अनुदान प्राप्त करने के लिए U.C.C. ने एक प्रारूप प्रस्ताव भेजा है (2001-02 में) जिस कार्ययोजना के लिए - डू- उच्च शिक्षा स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को संचालित करने के लिए।

25. राधाकृष्णन् आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा का लक्ष्य है - डू- भारत में ऐसी विभूतियों को तैयार करना जो राजनीति, प्रशासन, व्यवसाय, उद्योग एवं वाणिज्य आदि क्षेत्रों में स्वस्थ प्रतिनिधित्व कर सकें, लोकतांत्रिक आदर्शों की सुरक्षा करना तथा व्यक्ति एवं समाज में सामंजस्य स्थापित करना, प्राचीन मान्यताओं पर्यादाओं का सम्मान करते हुए नवीन मान्यताओं, विचारधाराओं के वैज्ञानिक अन्वेषणों को तैयार करना।

26. कोठारी आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा के लक्ष्य हैं - डू- सत्य के परिप्रेक्ष्य में नवीन ज्ञान की खोज करना, प्राचीन ज्ञान एवं विश्वास की नई आवश्यकताओं एवं खोजों के संदर्भ में व्याख्या करना, जीवन के सभी क्षेत्रों में सही ढंग से नेतृत्व प्रदान करना, सामाजिक न्याय एवं समानता को प्रोत्साहित करना।

कोठारी आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा का एक लक्ष्य नहीं है - डू- व्यक्तियों में नैतिकता गुणों की खोज करना तथा प्रशिक्षण द्वारा। उनका विकास करना।

27. संगठनात्मक ढाँचे के आधार पर विश्वविद्यालयों को वर्गीकृत किया जा सकता है - डू- आवासीय एवं अवासीय विश्वविद्यालयों में।

28. दिल्ली विश्वविद्यालय है - डू- केन्द्रशासित विश्वविद्यालय।

29. सन् 2004-05 में किस राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय को केन्द्रशासित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया है - डू- इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

30. 2005 तक भारत में कुल केन्द्रिय विश्वविद्यालयों की संख्या है - डू- 18।

31. आवासीय विश्वविद्यालय ऐसे विश्वविद्यालय हैं जिनमें होते हैं - डू- शिक्षा प्रदान करने हेतु केन्द्रिय परिषद,



इसका एक शिक्षण महाविद्यालय कहा जाता है - 30 - आवासीय विश्वविद्यालय को  
32. जब किसी विश्वविद्यालय का अपना पृथक् शिक्षण परिसर हो तथा  
33. साथ-ही-साथ इससे जुड़े अनेक स्वायत्त महाविद्यालय एवं संघटक  
महाविद्यालय हों तो ऐसी संरचना वाले विश्वविद्यालय को कहेंगे -

30 - संचालक विश्वविद्यालय

31. संबद्ध विश्वविद्यालय से तात्पर्य है - 32 - ऐसे विश्वविद्यालय जिनके केन्द्रिय  
परिसर में शिक्षण कार्य नहीं होता है बल्कि यह कार्य सम्बद्ध  
महाविद्यालयों में सम्पन्न होता है, ऐसे विश्वविद्यालय जिनके द्वारा  
पाठ्यक्रम लागू किए जाते हैं तथा परीक्षाओं का संचालन किया जाता है,  
ऐसे विश्वविद्यालय जो उपरि विवरण का कार्य करते हैं,

33. यदि कोई विश्वविद्यालय अपने केन्द्रिय परिसर में कुछ पाठ्यक्रमों  
का शिक्षण संचालित करता है तथा अन्य पाठ्यक्रमों को सम्बद्ध महाविद्यालय  
द्वारा संचालित किया जाता है तो ऐसे विश्वविद्यालय को कहना  
उचित होगा - 34 - आवासीय-सम्बद्ध विश्वविद्यालय

35. शिक्षण प्रक्रिया के आधार पर विश्वविद्यालयों के प्रकार हैं - 36 - पारम्परिक  
एवं मुक्त विश्वविद्यालय,

37. मुक्त विश्वविद्यालयों को गैर-पारम्परिक विश्वविद्यालय माना जाता है, क्योंकि -  
38 - उनमें शिक्षण अधिगम हेतु नवीन विधाओं का प्रयोग किया जाता  
है, उनमें प्रवेश, पाठ्यक्रम एवं भूस्थान के नवीन नियमों का  
पालन किया जाता है, आधुनिक सम्प्रेषण तकनीकियों का  
उपयोग करते हैं

39. Complex of Colleges कहा जाता है - 40 - संचालक विश्वविद्यालय को  
Federal Univ.

41. पाठ्य संचालक प्रकार के विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रमों की  
व्यवस्था इस प्रकार की जाती है - 42 - विश्वविद्यालय परिसर में  
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तथा संघटक महाविद्यालयों में स्नातक  
स्तरीय पाठ्यक्रम

43. इन्डियन रेजोल्यूशन कमीशन (1964-66) ने एक तथ्य को छोड़कर  
विश्वविद्यालय के प्रशासन एवं नियंत्रण नीतियों की विवाद व्याख्या  
की है, उक्त तथ्य है - 44 - रेजिस्ट्रार (कुलसचिव) की भूमिका

45. सन् 1969 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नियुक्ति की थी -  
विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय की प्रशासन पद्धति



शिक्षा-एवं जनसंख्या में संबंध है - 30 - शिक्षित पुरुषों एवं महिलाओं में शिक्षा के प्रसार के फलस्वरूप 'बलवृद्धि' का प्रचलन हुआ है, शिक्षा का प्रसार जनसंख्या की वृद्धि दर को नियंत्रित कर सकता है, शिक्षा का प्रसार जनसंख्या में गुणात्मक परिवर्तन ला सकता है.

90. शैक्षिक प्रक्रिया का विचार किसके संदर्भ में किया जाता है - 30 - राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्थाओं के संदर्भ में

91. सामाजिक परिवर्तन का कारण है - 30 - राजनैतिक वास्तुतंत्र, उत्पन्नव्यवस्था की प्रगति, शिक्षा एवं कानून व्यवस्था.

92. यदि आप उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रौद्योगिकी को लाने की बात करते हैं - तबसे कि इसमें अपेक्षित वृद्धि एवं उत्पादकों को बढ़ावा दिया जा सके तो यह जिम्मेवारी किसे सौंपी जानी चाहिए - 30 - अर्थशास्त्रियों को

93. किसे शिक्षा नीति के साथ पर्याप्त तालमेल बनाये रखना चाहिए - 30 - मानव वास्तु नियोजन

94. यदि आप रुचि रखते हैं कि परिवार नियोजन के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण की जानी चाहिए, तो आपको क्या उपाय करना चाहिए - 30 - स्त्रियों की साक्षरता दर में पुरुषों की अपेक्षा अधिक बढ़ोतरी करना.

95. किस क्षेत्र में त्रवण विकलांग बालक सामान्य बालकों की तुलना में निम्नता का प्रदर्शन करते हैं - 30 - भाषा-संबंधी विकास में

96. उन्मादांत्रिक व्यवस्था में वैयक्तिक विधियों को प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है, क्योंकि - 30 - यह एकसमान लक्ष्य के लिए विभिन्न प्रकार के लाभकारी योगदान देते हैं.

97. चिकित्सीय विज्ञानों के द्वारा कौन सी खोज सम्भव प्रतीत नहीं होती है - 30 - संक्रामक रोगों जैसे - हैजा, मलेरिया का पूर्ण निदान करना.

98. नर्सिंग प्रोफेशन में किस वर्ग की सबसे अधिक स्त्री जनसंख्या कार्यरत है - 30 - इंग्लो-इंडियन्स एवं क्रिश्चियन.



१६. यदि आप विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा में उन्नति चाहते हैं तो  
किसकी (उपायकी) संस्कृति करना पसंद करेंगे - ३० - कि छात्रों  
को उच्चशिक्षा में प्रवेश लेना हो उन्हें कठिन बौद्धिक प्रवेश परीक्षा  
से गुजरना जाना चाहिए, उच्च शिक्षा को औद्योगिक एवं व्यावसायिक  
- क विकास से अनिवार्य रूप से जोड़ देना चाहिए.

१७. शिक्षित महिलाओं की दृष्टि से उनके लिए सर्वोत्कृष्ट व्यवसाय  
है - ३० - शिक्षण व्यवसाय, चिकित्सा व्यवसाय, नर्सिंग व्यवसाय  
आजकल प्रचलित शैक्षिक व्यवस्था के संदर्भ में आपका विचार  
है - ३० - यह सामाजिक स्त्रीकरण के अनुरूप शिक्षा प्रदान  
करती है.

१८. भारत के संदर्भ में ऐसा माना जाता है कि यहाँ पर शिक्षा क्रांति  
विलम्ब से हुई है. इसका प्रमुख ~~कारण~~ कारण है - ३० - सरकार  
के द्वारा शिक्षा पर किए जाने वाले व्यय को उपभोग किये  
जाने वाला व्यय माना जाता रहा है.

१९. यदि आप यह चाहते हैं कि भारत में टेक्नीकल शिक्षा पर  
होने वाले व्यय को घटा दिया जाय तो आपके विचार में  
कौन सा उपाय अधिक उपयुक्त होगा - ३० - टेक्नीकल शिक्षा  
प्रदान करने वाली संस्थाओं को अपने व्ययों को अपेक्षा-रहित  
ट्रेनिंग चयनित कंपनियों में प्रदान की जानी चाहिए.

२०. स्वतंत्र्योत्तर पब्लिक एवं प्राइवेट सेक्टर में होने वाली अप्रत्याशित  
वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्तरे उपलब्ध रोजगार के अवसरों की  
प्रति के संदर्भ में कौनसा दृष्टिकोण अधिक सत्य है - ३० - इन दोनों  
क्षेत्रों में उन संस्थानों का अधिकाधिक चयन हुआ है, जो कि  
शिक्षित उच्च वर्ग से ताल्लुक रखते थे.

२१. उच्चशिक्षित वर्ग के संदर्भ में आपका मत है कि - ३० - यह वर्ग अपनी  
सामाजिक प्रतिबद्धता के प्रति जागृत है.

२२. स्वतंत्रता काल में शिक्षित वर्ग का उत्थान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस  
का प्रमुख लक्ष्य था, क्योंकि - ३० - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता  
महात्मा गांधी की इस भावना का आदर करते थे, राष्ट्रीय आन्दोलन के  
नेताओं में उन्नत सामाजिक जागरूकता थी, यह डॉ. भीमराव  
अम्बेडकर एवं महात्मा फूले जैसे नेताओं के प्रभाव का परिणाम था.



आज भी उच्च शिक्षा में प्रमुख है - उठ - अंग्रेजी का।

20. प्रायः समय-समय पर विवाद उठता रहा है कि कुछ इतिहासविद् ऐतिहासिक तथ्यों को विकृत रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसके संदर्भ में आपके विचार हैं कि - ~~प्रश्न~~ उठ - प्रायः समाज के लोग इतिहासविदों द्वारा प्रस्तुत तथ्यों में विश्वास व्यक्त करते हैं। इतिहासविदों से सत्य तथ्यों की अपेक्षा करना व्यर्थ है।

21. नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा में अनेक परिवर्तनों की पहल की है, इनमें निहित हैं - उठ - वर्तमान शिक्षा व्यवस्था राष्ट्रीय लक्ष्यों एवं आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं है, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सामूल-मूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

22. बाल-अपराध की समस्या का प्रमुख रूप से संबंध है - उठ - अनेक नएल समस्याओं से।

23. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक विद्यालय स्तर की शिक्षा के संदर्भ में सटीक वाक्य प्रतीत होता है - उठ - यह बाल-केन्द्रित शिक्षा प्रणाली से संबंधित है।

24. आंक आपके विचार में स्कूल कार्मिकों को किन उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना अनिवार्य है - उठ - वे समाज की अपेक्षाओं एवं बालकों की आवश्यकताओं के मध्य समन्वय स्थापित करें।

25. आधुनिक विद्यालयों का आधारभूत लक्ष्य है - उठ - विद्यार्थियों के व्यवहारों का उचित विकास करना।

26. भाषा को जाना जाता है - उठ - अनुभवों को वर्गीकृत करने वाली नामावली।

27. उद्योग एवं वाणिज्य दोनों के लक्ष्य हैं - उठ - सृष्टि एवं लाभ।

28. आपके विचार में बालिका शिक्षा के संदर्भ में ग्रामीण परिवेश में कौनसी समस्या प्रायः प्रकट होती है - उठ - माता-पिता अपनी पुत्रियों को लड़कों के साथ पढ़ाने के पक्ष में नहीं होते हैं, माता-पिता की निर्धनता बालिकाओं को विद्यालय से वंचित करती है, माता-पिता दोनों ही बालिकाओं को घर में तथा कृषि कार्यों में व्यस्त रखते हैं।



37. शिक्षा जगत में 'हुड़ताल' करने संबंधी आपका मत क्या है?  
उ० - शिक्षा जगत में 'हुड़ताल' को मान्यता दी जानी चाहिए,  
क्योंकि यह अन्य कर्मचारियों की भाँति शिक्षकों को भी  
अपनी भाँगी की पूर्ति में सहायक होती है.

38. प्रजातांत्रिक राज्य में राजनैतिक दलों पर प्रतिबन्ध नहीं लगाने  
लगाने चाहिए, क्योंकि - उ० - प्रजातंत्र - राजनैतिक दलों के  
बिना जीवित नहीं रह सकता है, यदि राजनैतिक दलों को  
प्रतिबन्ध प्रतिबन्धित कर दिया जाये, तो लोगों को संविधान  
के द्वारा प्रदत्त स्वतंत्रता का अधिकार लुप्त हो जाएगा, केवल  
राजनैतिक दल ही जनता के अभिमत को संगठित <sup>अप</sup> से  
प्रोत्साहित कर सकते हैं.

39. यदि आप प्रभावी ढंग से श्रवण करने में रुचि रखते हैं तो  
उन विचारों को भी ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए, जो आपको  
पसंद नहीं होते हैं. - उ० - कथन से आप किस निष्कर्ष पर  
पहुँचेंगे - उ० - प्रभावी ढंग से श्रवण करने के लिए उसमें  
व्यक्तिगत रुचियों एवं आरुचियों का कोई प्रभाव नहीं  
पड़ता है.

40. प्रचलित शिक्षा व्यवस्था में सर्व प्राथमिक दोष क्या है - उ० -  
दीर्घ कालिक, दीर्घ लिखित, परीक्षा पद्धति.

41. एक शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत आपके द्वारा स्वीकृत तात्का-  
लिक आवश्यकता है - उ० - छात्रों में स्वरोन्मुखता की शक्ति  
का विकास करना.

42. भारत में शिक्षा नीति के निर्धारण में प्रमुख समस्या है -  
उ० - ऐसे व्यक्ति जो उच्च टेक्नीकल शिक्षा प्राप्त हैं

उन के लिए भारत में पर्याप्त रोजगार उपलब्ध नहीं हैं.

43. कौन सा ऐसा प्रभाव है जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम-

-स्वरूप शिक्षा के ट्रेंड को परिवर्तित किया है? - उ० - शिक्षा -

नीति में स्कूलों ~~इन्होंने~~ को अप्रत्यक्ष महत्व, हाई स्कूल

स्वयं इस स्वयं उच्च शिक्षा संबंधी कौशलों की कृति (क्षेत्रों में)

44. प्रत्यक्ष ऐसा देखने में आया है कि सरकार ने ज्यों-ज्यों पंचायती  
राजतंत्र को अंगीकृत किया है वह उतना ही ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था



के प्रति इच्छा पूर्ण होता गया है"। आप के विचार में इसका कारण है - 30 - इन लोगों के पास शिक्षा व्यवस्था के लिए पुरव्वकीय खर्च आर्थिक अधिकार नहीं होते हैं।

35. ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा की जिम्मेदारी है - 30 - ग्राम पंचायत एवं जिला समिति पर।

36. मुक्त शिक्षण संस्थाएँ औपचारिक शिक्षण संस्थाओं से पृथक् होती हैं - 30 - मूल्यमूलक विधियों के संदर्भ में, क्योंकि औपचारिक शिक्षण संस्थाओं में यह अधिक जटिल होता है।

37. प्लेटो के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्त में निहित है - 30 - प्लेटो का विद्वान कारीगरों (workmen) के लिए है, किन्तु उसका डायालेक्टिक (Dialectic) शासकों के लिए है।

38. प्रकृति के अनुरूप शिक्षा से तात्पर्य है - 30 - प्रकृति की ओर लौटना, प्राकृतिक नियमों एवं उनकी अनुप्रकृति को शिक्षा प्रक्रिया के संदर्भ में अध्ययन करना, मानव विकास की प्रकृति के अनुरूप लोगों को प्रशिक्षित करना।

39. समान शैक्षिक अवसरों से तात्पर्य है - 30 - बालकों के लिए शिक्षा में समान अवसरों की व्यवस्था।

40. पारम्परिक मानव की शिक्षा का संबंध था - 30 - व्यावसायिक, धार्मिक तथा नैतिक पक्ष से।

41. ऐसा माना जाता है कि भारत में हम लोग उच्च शिक्षा की द्रुत मात्रात्मक वृद्धि की समस्या को झेल रहे हैं, इसके लिए आपकी दृष्टि में सर्वोत्तम साधन हो सकता है - 30 - सम्पूर्ण जीवन तक पढ़ने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जाय।

42. यदि उच्च शैक्षिक कक्षाओं में धार्मिक पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाए, तो इस संदर्भ में आपकी संस्कृति होगी - 30 - यह केवल इस सीमा तक हो जिससे मानवीय मूल्यों को पोषित किया जाय।

43. एक विश्वविद्यालय ~~स्व~~ तथा मानद विश्वविद्यालय (Deemed University) में अन्तर यह है कि पूर्ववर्ती - 30 - केवल सम्बद्धित कॉलेज की देखभाल करती है।



प्रश्न. कौन सी जेने-सी उच्च शिक्षा के लिए अनुदान प्रदान करती है?

उ० - यूनिसिपल कॉरपोरेशन एवं जिला परिषद्

प्रश्न. औपचारिक शिक्षा है - उ० -

प्र० पायड रेखा देखा गया है कि महिलाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने से कतराती हैं। आपकी दृष्टि में इसका कारण है -

पायड ग्रामीण जनता महिलाओं के साथ अमूल्य व्यवहार करती है।

पायड ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत महिलाएँ ग्रामीण लोगों के द्वारा

अश्लील व्यवहार की शिकायत हो जाती है, पायड ग्रामीण

जनता को नौकरी पेशा महिलाओं के प्रति घृणा भाव

होता है।

प्रश्न. स्त्री शिक्षा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है - उ० - लड़कियों के

लिए स्कूलों की उचित सुविधा उपलब्ध नहीं है, विद्यालय

में नामांकित होने वाली अधिकांश लड़कियाँ बीच में ही

पढ़ाई छोड़ देती हैं।

प्रश्न. मान लीजिए आपको अपने ही स्कूल/संस्थान द्वारा शिक्षक यूनियन

की सदस्यता स्वीकारने के लिए दबाव बनाया जाता है, आप

इस परिस्थिति में क्या निर्णय लेना पसंद करेंगे? - उ० -

आप सज्जते हैं कि आपके द्वारा सदस्यता स्वीकारने

से शिक्षण अनुदान की शक्ति में संवर्द्धन होगा, अतः

सदस्यता ले लेंगे।

प्र०. आपके मतानुसार ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की सेकण्डरी

शिक्षा को जारी रखने के लिए कौन सी कठिनाई से

मुजरना होता है? - उ० - माता-पिता की कठिनाई यह

होती है कि वे अपनी लड़कियों को सह-शिक्षा वाले

विद्यालयों में पढ़ाना पसन्द नहीं करते हैं, माता-पिता की

निर्धनता, लड़कियों का घर के कामों में हाथ बँटाना

तथा कृषि कार्यों में मदद करना।

प्रश्न. अनौपचारिक शिक्षा स्कूल औपचारिक शिक्षा में एक जोड़

है कि - उ० - पूर्ववर्ती संगठित नहीं होती है, किन्तु दूसरी

होती है।



उठ. 'समान शैक्षिक अवसर' इस कथन से तात्पर्य है - उठ -

इ. सभी को समान अवसर प्रदान करना जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकें।  
इ. शैक्षिक परामर्श का एक लक्ष्य नहीं है - उठ - छात्रों को विभिन्न विषयों से संबंधित हुता प्रशिक्षण प्रदान करना।

शैक्षिक परामर्श का लक्ष्य है - उठ - छात्रों को उनकी शारीरिक, मानसिक एवं शैक्षिक समस्याओं के समाधान में मदद करना, छात्रों को शिक्षा संबंधी नवीन चैनलों की जानकारी प्रदान करने में मदद करना, छात्रों को उनके सभायोजन में मदद करना।

इ. यदि आप अपने छात्रों में स्थायी परिवर्तन लाना चाहते हैं, इसके लिए क्या उपाय करेंगे? - उठ - अधिगम अनुभव अनुभवों के माध्यम से।

इ. शिक्षा एक निवेश के रूप में इसका लक्ष्य है - उठ - उत्पादकता में वृद्धि करना।

इ. व्याख्यान नियोजन उपयुक्त है - उठ - शैक्षिक क्रियाओं का

इ. शिक्षा के प्रति राष्ट्र की स्पर्धा होनी चाहिए - उठ - मानव संसाधनों को विकासोन्मुखी बनाने की।

इ. शैक्षिक परामर्शक बाल अपराधी बालकों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन करने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं? - उठ - ऐसे बालकों में बुनियादी व्यावहारिक परिवर्तनों के लिए उनसे मित्रवत व्यवहार किया जाए।

इ. उच्च शिक्षा में संलग्न छात्रों के लिए सर्वोत्कृष्ट प्रेरणा होगी - उठ - व्यक्तिगत उपलब्धियाँ।

इ. छात्रों को प्रभावी ढंग से सूचनाएँ सम्प्रेषित करने का एक माध्यम है - उठ - श्यामपट्ट प्रस्तुतीकरण से।

इ. उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षण की प्रभावी चुनौती है - उठ - छात्रों को सूचनाओं के स्रोतों तक ले जाना।

इ. यदि एक छात्र के क्रिया कलाप में आपको कोई भी लिख एवं नवीन क्रिया दृष्टिगोचर हो रही है, तो आप उसे किस पदके द्वारा व्यक्त करेंगे - उठ - बुद्धि।



७७. प्रसार शिक्षा (Distance Education) को कमजोर जा सकता है -

इ- ग्रामीण क्षेत्रों में ज्ञान-ज्योति का प्रसार करना।

७८. प्रायः कुछ लोग शैक्षिक क्षेत्र में रोजगार इसलिए ग्रहण करते हैं, क्योंकि - इ- अन्य क्षेत्रों में रोजगार के न्यून अवसर हैं।

$\leftarrow \begin{matrix} \times & \times & \times \\ \times & \times & \times \end{matrix} \rightarrow$

१. दूरवर्ती शिक्षा की प्रमुख अवधारणा है - इ- दूरवर्ती शिक्षा में रेडियो एवं दूरदर्शन की सक्रिय भूमिका है, दूरवर्ती शिक्षा संचारण शिक्षक को भी उत्तम रूप में परकृत करती है, दूरवर्ती शिक्षा स्वयंसेवा से अछिन्न पर आधारित है।

२. दूरवर्ती शिक्षा की विशेषताएँ हैं - इ- सारवा से का दूरवर्ती से प्रचार-प्रसार, सम्प्रेषण माध्यमों का आधिकारिक उपयोग, मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना में सहयोग, दूरवर्ती शिक्षा की विशेषता नहीं है - इ- औपचारिक शिक्षा प्रणालि।

३. दूरवर्ती शिक्षा है - इ- अपारम्परिक शिक्षा प्रक्रिया, गुणालोक अनुदेशन प्रक्रिया का विस्तार, पणाली निरलेखन उपाय का अनुगमन।

४. दिल्ली विश्वविद्यालय में पञ्चाचार विभाग (Panchajanya Department) की स्थापना की गई थी - इ- १९६२ में।

५. भारत में सर्वप्रथम स्वतंत्र रूप से मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रयत्न जा रहा है - इ- आन्ध्र सरकार को।

६. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना किस वर्ष में हुई थी? - इ- सन् १९८५ में।

७. राज्य सरकार के द्वारा स्थापित उत्तर प्रदेश का मुक्त महाविद्यालय है -

इ- राजर्षि कुरुपुत्रम दास एण्ड मुक्त महाविद्यालय।

८. दूरवर्ती शिक्षा में जो छात्र सहायक सेवाएँ सम्मिलित की गई हैं, वह

है - इ- सम्पर्क सेवा, पुस्तकालय-सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र सेवा, सांफ्टवेयर सेवा एवं हार्डवेयर सेवा।

९. दूरवर्ती शिक्षा की विशेष सेवाएँ हैं - इ- गृहकार्य संबंधी सेवा, पाठ्य सामग्री संबंधी सेवा, परामर्श संबंधी सेवा।



दूरवर्ती शिक्षा की एक विशिष्ट सेवा के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं की जाती है - उ० - व्यक्तिगत सम्पर्क सेवा

१०. देश में सर्वप्रथम मुक्त विद्यालय (Open Schools) की स्थापना काब और कर्हों की गई थी - उ० - १९७९ में केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली

११. राष्ट्रिय मुक्त विद्यालय में पढ़ाया जाता है - उ० - फाउन्डेशन कोर्स, माध्यमिक कोर्स, सीनियर सेकेण्डरी कोर्स,

१२. मुक्त व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम चलाया जाता है - उ० - राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय में,

१३. मुक्त विश्वविद्यालय से लाभान्वित होने वाला एक बड़ा जनसंख्या वर्ग है - उ० - गैर व्यक्ति जिन्होंने अध्ययन उच्च शिक्षा छोड़ दी हो कार्यरत व्यक्ति जो अपने देशों के लक्ष्य का संवर्द्धन करने में रुचि रखते हों, गैर महिलाएँ जो किसी कारणवश उच्च शिक्षा से वंचित रह गई हों

१४. मुक्त विश्वविद्यालय की प्रमुख विशेषता है - उ० - परिसर नियन्त्रितकरण से मुक्त, शिक्षण विधियों में वैविध्यता, वैचारिक मुक्ति,

१५. मुक्त विश्वविद्यालय का लक्ष्य है - उ० - अधिकाधिक लोगों को उच्च व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा प्रदान करना, दूरस्थ प्रदेशों में रहनेवाले लोगों को उनके घर पर उच्च शिक्षा प्रदान करना, विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों को व्यक्तियों एवं संस्थाओं के आध्ययन से राष्ट्रविकास से जोड़ना,

१६. मुक्त विश्वविद्यालय की अनुदेशन विधियाँ हैं - उ० - स्वतंत्र अनुदेशन सामग्री द्वारा सिखाना, सैटेलाइट द्वारा सिखाना, कम्प्यूटर के माध्यम से सिखाना,

मुक्त विश्वविद्यालय की अनुदेशन विधि नहीं है - उ० - आगने-सामने बैठकर सिखाना,

१७. दूरवर्ती शिक्षा से अभिप्राय है - उ० - जो दूरस्थ स्थान से प्रदान की जाए, जो दूरदर्शन के माध्यम से प्रदान की जाए, जो दूरवर्ती स्थानों तक पहुँचायी जाए,



१८. 'दूरदर्शन शिक्षा' से लागू है - ऊ - प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा, प्रत्येक स्थान पर बिना किसी कोटभाव के, निरंतरता अनुमूलन का कारगर उपाय, महिलाओं के लिए सुशिक्षित शिक्षा.

१९. SITE से तात्पर्य है - Satellite Instructional Television Experiment  
२०. 'दूरदर्शन शिक्षा' में अभिन्न व तन्त्र है - ऊ - औपचारिक प्रवेश एवं परीक्षा की सहायता से युक्त, संवैधानिक निर्देशों का अनुपालन (सभी को शिक्षा के समान अधिकार), अवकाशकाल का उत्तम प्रयोग.

२१. साईट (SITE Program) चलाया गया था - ऊ - ISRO तथा

Indian Television Authority के पारस्परिक सहयोग के द्वारा  
२२. SITE के द्वारा वयस्क व्यक्तियों के लिए चलाए जाने वाला प्रोग्राम था - ऊ - राष्ट्रीय संचार एवं चटनारें, विभिन्न विषयों की उन्नत विधियों का अनुदेशन, विभाजनक प्रमोशन.

२३. SITE द्वारा प्रसारित होने वाले प्रोग्राम थे - ऊ - पूर्व प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए, प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए, सामान्य जनता के लिए जागरूकता कार्यक्रम.

२४. INSAT-3A छोड़ा गया था - ऊ - १० अप्रैल २००३ को.

२५. सर्वप्रथम विश्व विद्यालयों में शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रसारण का प्रयत्न जाता है - INSAT 1-B को

२६. EDUSAT प्रक्षेपित किया गया था - ऊ - २० सितंबर २००४ को.

२७. इंटरनेट है - ऊ - कंप्यूटरों के मध्य स्थापित विशाल संपर्कशृंखला.

२८. WWW से अभिप्राय है - ऊ - World Wide Web.

२९. भारत वर्ष में इंटरनेट सेवा का प्रारम्भ हुआ - ऊ - जनवरी १९९२ से.

३०. इंटरनेट (Internet) एवं इन्ट्रानेट (Intranet) में फरक वेद है - स्थान (दायरे) का.

३१. BARNET नेटवर्क का प्रयोग किया जाता है - ऊ - शिक्षा एवं शोध में.

३२. HTML है - Hypertext Markup Language.

३३. T.S.D.N. के द्वारा संचालित की जाती है - ऊ - दूरदर्शन संकेत, दूरच, लिखित सूचनाएं.

३४. Modem का प्रयोग किया जाता है - ऊ - Computer को Internet से जोड़ने के लिए.



मिसकी  
इसका software किसी मदद से Internet में उपस्थित सूचनाओं  
की खोज की जाती है - इ- Search Engine.

इसका D.R.L. है - इ- Universal Resource Locator.

इसका EARN का पूरा नाम है - इ- European Academic and Research Network.

इसका Internet Surfing से तात्पर्य है - इ- Internet पर उपस्थित सूचना को खोजने से.

इसका E-Mail है - इ- Electronic Mail.

इसका E-Mail से संभव है - इ- सूचनाओं को अतिरिक्त करना, सूचनाओं को दूसरे कम्प्यूटर Computer Monitor पर पढ़ना, सूचनाओं को भुविता करना एवं सुरक्षित रखना.

इसका E-Mail का मुख्यता से उपयोग किया जाता है - इ- शिक्षा संस्थानों में, व्यापारिक प्रतिष्ठानों में, वैयक्तिक संगठनों में.

इसका E-Mail ने व्यापारिक जगत में सूचना अति-कार की है - क्योंकि यह - इ- सुविधा-जनक है, कम खर्च पर खर्चीली पड़ती है, अत्यधिक गति से कार्य करती है.

इसका भारत की मुख्य E-Mail Companies का - इ- Vindex V.T. Mail, Global Mail, X E-Mail (इंटरनेट ईमेल).

इसका शिक्षा सेवा के सम्पूर्ण स्वरूप को साकार किया गया है - इ- EduSat-2004 में.

इसका EduSat का संभावित जीवन काल है - इ- सात वर्ष.

1. मूल्य शब्द की उत्पत्ति जानी जाती है - इ- लैटिन शब्द वैलर (valere) से.

2. मूल्य को संस्कृत भाषा में कहते हैं - इ- ईष्ट.

3. भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ बताए गए हैं - इ- चार.

4. पुरुषार्थ चतुष्टय है - इ- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष.

5. भारतीय सांस्कृतिक लौकिक मूल्य हैं - इ- धर्म, अर्थ एवं काम.

6. लोको की मूल्य संबंधी व्याख्या है - इ- मूल्य बुद्धिवाद्य अर्थ है न कि सक्रिय ग्राह्य पदार्थ, मूल्य और मूल्य का लौकिक अर्थ है, मूल्य निरपेक्ष नित्य स्वरूप मूल्य विषय है.



७. मूल्यों की प्रकृति संबंधी प्रचलित दृष्टिकोण है - ३० - व्यक्तिपरक, वस्तुपरक एवं सापेक्षिक दृष्टिकोण.

८. किसी शिक्षा के उद्देश्यों का वर्णन करना ही उसके शैक्षिक मूल्यों का वर्णन करना है // यह कथन है - ३० - ~~सू~~ प्रवेकार का,

९. वस्तुपरक मूल्य उपस्थित रहते हैं - ३० - ~~वस्तुओं~~ में,

१०. कौनसा मूल्य जीवन-संबंधी मूल्य के अन्तर्गत नहीं आता है - ३० -

शाश्वत मूल्य.

११. समय-संदर्भित ~~है~~ मूल्य हैं (वर्गीकरण के आधार पर) - ३० - शाश्वत स्थायी अस्थायी मूल्य.

१२. शैक्षिक मूल्य होते हैं - ३० - तात्कालिक, विवेकपूर्ण इच्छाओं के अधीन, सौन्दर्यत्वका,

१३. मूल्यपरक शिक्षा के आवश्यक तत्व हैं - ३० - विश्ववन्द्यत्व की भावना, सह अस्तित्व, धर्म निरपेक्षता.

१४. मूल्य शिक्षा सदान करने की विधि है - ३० - उपदेशात्मक विधि, कहानी - कथन विधि, प्रयोगात्मक अभिनय विधि.

१५. कौन सी एक विधि बालकों में मूल्यों का विकास नहीं कर सकती है - ३० - व्याख्यान विधि.

१६. मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में कोठारी आयोग के विचार हैं - ३० - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा दिए गए मूल्यपरक शिक्षा संबंधी सभी संशुद्धियों को क्रियान्वित करना, निजी संस्थाओं के द्वारा संचालित संस्थाओं में भी मूल्योन्मुखी शिक्षा को लागू करना, शिक्षण संस्थाओं की समय-सारणी में मूल्योन्मुखी शिक्षा के लिए एक घण्टे का प्रावधान करना.

१७. शिक्षकों के संदर्भ में कोठारी आयोग ने मूल्यपरक शिक्षा को लागू करने के लिए सुझाव प्रस्तुत किया है - ३० - विद्यार्थियों के समय-रेखाओं का व्यवहार आदर्शपूर्ण हो तथा विषय का शिक्षण करते समय वे उच्च गतिताओं एवं आदर्शों को विकसित करने का प्रयास करें.

१८. राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के अनुसार मूल्यपरक शिक्षा का एक ठोप होना चाहिए - ३० - सार्वजनिक एवं शाश्वत मूल्यों का क्रियान्वयन अल्पकालीन सांस्कृतिक-सांभालिक परिवेश के अनुरूप होना चाहिए.



उक्त शैक्षिक मूल्यों से व्यापक दृष्टिविश्रवास, कटुता, असहिष्णुता, हिंसा  
एवं भ्रमवाद जैसे निषेधात्मक विचारों का ह्रास होना चाहिए।  
१६. शैक्षिक मूल्य के एक गुण है - ऊ - उपयोगिता, मोक्षप्रयत्न, उपयुक्तता,  
शैक्षिक मूल्य का एक गुण नहीं है - ऊ - विश्वसनीयता -



१. शिक्षण की प्रक्रिया को विभाजित किया जा सकता है  
(राजनैतिक दृष्टिकोण के आधार पर) -

३० - तीन वर्गों में।

१. निरंकुश शासनतंत्र के अनुकूल शिक्षण की परिभाषा के पर्वक है

- ३० - २५० सी० मॉरीसन

२. २००० सी० गेन का ~~मिशनैरिज~~ संबंध है -

३० - प्रजातांत्रिक प्रणाली संबंधी शिक्षण की परिभाषाओं से।

४. एक राष्ट्र की राजनैतिक प्रणाली वहाँ के शिक्षण को प्रायः प्रभावित करती है, क्योंकि -

३० - राजनीति ही राष्ट्र के शिक्षा मूल्यों का निरूपण करती है।

५. जीन ब्रूकेर प्रभावित है -

३० - दृष्टिकोण शक्ति शिक्षण प्रणाली से।

६. 'शिक्षण एक पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य है अन्य व्यक्तियों के व्यवहारों में अपेक्षित परिवर्तन लाना' यह भाव व्यक्त किया है

३० - गेन ने।

७. शिक्षण को आप मानते हैं -

- ३० →
१. एक परिपक्व एवं दूसरे अपरिपक्व व्यक्ति के मध्य संबंध।
  २. एक अन्तः प्रक्रिया मात्र
  ३. सीखने में सहायक प्रक्रिया।

८. शिक्षण संभव नहीं है -

- ३० →
१. दो परिपक्व व्यक्तियों के मध्य जो किसी एक समान विषय में पारंगत हैं।
  २. विद्यालय के बाहर
  ३. बिना पाठ्यक्रम के

९. 'दूसरों को दिशा निर्देशन करने (सीखने के लिए) तथा अन्य प्रकार से निर्देशित करने की प्रक्रिया ही शिक्षण है' यह कथनांश है -

३० - रियान्स का।

१०. शिक्षण प्रक्रिया ~~मिशनैरिज~~ में से किस एक प्रक्रिया की ओर संकेत नहीं करती है

३० - सामाजिक प्रक्रिया

११. शिक्षण है

- ३० →
१. आगने-आगने चलने वाली प्रक्रिया।
  २. सोद्देश्य प्रक्रिया
  ३. उपचारात्मक प्रक्रिया



१२. शिक्षण हो सकता है

३० →

- १. मापन योग्य
- २. बालोपचार योग्य
- ३. बाल सुधारात्मक

१३. शिक्षण एक त्रिविध प्रक्रिया है, क्योंकि इसमें सम्मिलित है

३० - छात्र - शिक्षक - पाठ्यक्रम।

१४. शिक्षण में सम्मेलन होता है -

१. शिक्षक एवं बालक के मध्य।

१५. शिक्षण को सुधारात्मक प्रक्रिया माना गया है, क्योंकि -

३० - इसमें शिक्षक बाल व्यवहार में अपेक्षित सुधार करते हैं,

१६. सतत प्रक्रिया का अर्थ है -

३० - हर रवें स्थान, हर चीज चलने वाली।

१७. एक उत्तम शिक्षण की विशेषता है -

१. अपेक्षित सूचनाओं का आदान-प्रदान करना।

३० - २. पुरातात्विक आदर्शों के प्रति अनुकूलन।

३. निर्देशात्मकता।

१८. उत्तम शिक्षण का एक गुण नहीं है -

१. यह संवैधानिक आस्था का अनुसरण करता है।

१९. भारतीय परिस्थितियों में उत्तम शिक्षण की आधार शिला है -

१. पुरातात्विक मूल्य

३० - २. छात्र योग्यताओं का संवर्द्धन।

३. शिक्षक एक मित्र एवं दार्शनिक।

२०. शिक्षण उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण को वर्गीकृत किया जाता है

३० - ज्ञातात्मक - ज्ञावात्मक एवं क्रियात्मक शिक्षण में।

२१. ज्ञातात्मक उद्देश्यों का संबंध है - ३० - ज्ञानसिद्धि योग्यताओं से।

२२. ज्ञानसिद्धि योग्यताओं में समाहित है - ३० - स्मृति, तर्क, चिन्तन, अनुवादात्मकता।

२३. शिक्षा में उन से तात्पर्य है - ३० - हृदय, हाई स्पीड।

२४. प्रासंगिक गुणों एवं मूल्यों को रखा जाता है - ज्ञावात्मक शिक्षण क्षेत्र में।



३५. मनोमत्यात्मक का अर्थ है - ३०- मानसिक योग्यता ही वास्तविक व्यवहार में अभिव्यक्त होती है।

३६. मौसपेत्रीय विचारों एवं सभ्यता अभिव्यक्त मानव व्यवहार को संग्रहीत करते हैं - ३०- मनोमत्यात्मक शिक्षण के अन्तर्गत,

३७. शिक्षक शिक्षक प्रायः शिक्षण प्रदान करते हैं - जिसपर ५२.

३८. निम्नलिखित चित्र में शिक्षण के तीन स्तर प्रदर्शित हैं -

(१) चिन्तन स्तर (२) अवबोध स्तर (३) स्मृति स्तर इनमें उचित क्रम है

(३) - (२) - (१).

३९. स्मृति स्तर के शिक्षण का संभावित संबंध क्षेत्र के किस व्यवहार से होगा। ३०- पूर्ववर्द्धन एवं पहचान से

४०. एक उत्तम शिक्षक को व्युत्पन्न होने से किस स्तर तक शिक्षण करना चाहिए - ३०- अवबोध स्तर ३०- अवबोध स्तर

४१. शिक्षक को उत्तम शिक्षण को चिन्तन स्तर तक पहुँचाना चाहिए ३०- प्रतिष्ठा वाली कक्षा में

४२. स्मृति में सम्मिलित नहीं है - ३०- मुख्यतः

४३. स्मृति स्तर में प्राप्ति होने के बाद बालक का अधिगम स्वतंत्र ही परिवर्तित हो जायगा ३०- अवबोध में

४४. शिक्षण एक सातत्यांक है - जिसमें स्मृति स्तर से लेकर चिन्तन स्तर तक की दूरी तय की जाती है यहाँ इन दोनों के मध्य के अनिवार्य पड़ाव को कहते हैं - ३०- अवबोध स्तर

४५. शिक्षण को स्वल्प के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है - ३०- वर्णनात्मक - निदानात्मक - उपचारात्मक स्वरूपों में।

४६. उपचारात्मक निदानात्मक शिक्षण की आवश्यकता अनुभव की



जाती है, जबकि - इनका किसी विनियमन को समझने में असमर्थ है।

उपचारात्मक शिक्षण प्रदान किया जाता है -

उ०- विषयगत दुर्बलता के शिकार एवं पिछड़े बालको को,

उ०- उपचारात्मक शिक्षण की पहचान की जाती है -

१. बालको को उपलब्ध परिस्थिति देकर,

२. बालको की कक्षा में निरन्तर जाँच करके,

३. बालको के कक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर,

उ०- निदानात्मक शिक्षण का आधारभूत उद्देश्य है -

उ०- बालको की विषयसंबंधी दुर्बलताओं का पता लगाना।

उ०- शैक्षिक क्रियाओं को संदर्भ में शिक्षण के वर्ग है -

उ०- प्रस्तुतीकरण - प्रदर्शन - क्रिया।

उ०- शैक्षिक व्यवस्था के संदर्भ में शिक्षण को वर्गीकृत किया जा सकता है - उ०- औपचारिक - अनौपचारिक एवं निरौपचारिक शिक्षण के।

उ०- औपचारिक शिक्षण की महत्वपूर्ण संस्था संस्था है - उ०- विद्यालय

उ०- औपचारिक शिक्षण की पहचान है - उ०- निश्चित स्थान, निश्चित लक्ष्य, निश्चित समय-सारिणी,

उ०- अनौपचारिक शिक्षण की आवश्यकता अनुभव की जाती है -

उ०- निश्चयों को साक्षर बनाने के लिए

२. नवसाक्षरों को साक्षर (स्थायी) बनाने के लिए

३. विद्यालय के प्रापसाधन के लिए

उ०- शिक्षण क्रिया में स्वतंत्र चर है - शिक्षक।



४६. धर्म को परतंत्र चर (dependent variable) माना जाता है, क्योंकि यह  
उ० - अध्यापक के शिक्षण के अनुरूप अधिगम करता है।

४७. शिक्षा के चरों का प्रमुख कार्य है - उ० - निदानात्मक, उपचारात्मक,  
मूल्यांकन

४८. निदानात्मक कार्य में सम्मिलित है - उ० - छात्रों का पूर्व व्यवहार  
१. पाठ्यवस्तु के खटकों का विश्लेषण, २. पाठ्य

४९. निदानात्मक शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक का प्रमुख दायित्व है  
- उ० - छात्रों के पूर्व व्यवहार का निर्धारण करना।

१. छात्रों की वैयक्तिक व्यवहार संबंधी सूचनाओं को  
संकलित करना।

२. कार्य - विश्लेषण करना।

५०. शिक्षण सम्बन्धी उपचारात्मक कार्य का संबंध है -

उ० - शिक्षण-कौशल को व्यवहारपरक बनाना।

१. पृष्ठ-पोषण प्रविधियों की व्यवस्था करना।

५१. शिक्षण सातत्यों की परिकल्पना की जाती है -

उ० - १. अनुबन्धन से लेकर विश्वास प्रतिपादन तक।

२. व्यावहारिक परिवर्तन से लेकर विश्वास परिवर्तन तक।

३. प्रारूपिक सामान्य अधिगम से लेकर सम्पूर्ण आस्था में  
परिवर्तन तक।

५२. शिक्षण सातत्यों के प्रमुख पदों में की कड़ी है -

प्रशिक्षण - अनुदेशन - प्रतिपादन - अनुबन्धन।

५३. अनुबन्धन द्वारा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है -

उ० - कुते शर्त बिकली के, मानव शिशु के, वयस्क व्यक्ति के।



४४. अनुबोधन के उद्देश्य हैं - इ० - पावलोन.

४५. प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है - इ० - भाषापेशियों को, निम्नस्त्रोणी के जीवों को, दस्तकारों को.

४६. अनुदेशन प्रदान किया जाता है इ० - बालों के अन्दर,

४७. प्रतिपादन (Indoctrination) किया जाता है -

इ० - 'स्त्रोन् वारिगा' के द्वारा, 'आमूल-चूल विचारों' में परिवर्तन करके, 'अमूल विचारों' में परिवर्तन करके.

४८. निम्नलिखित में से कौन सा उद्देश्य 'अनुदेशन' से संबंधित है -

इ० अनुदेशन

४९. 'अनुदेशन' से संबंधित उद्देश्य है - इ० - बालों का प्रसारण एवं बालों का विकास करना.

५०. प्रतिपाद (Indoctrination) पद में प्रदान किया जाने वाला ज्ञान का रूप होगा - इ० - अमूर्त.

५१. उच्चस्तरीय क्रियात्मक ज्ञान (High level active oriented knowledge) का संबंध है इ० - प्रशिक्षण से.

५२. निम्न एवं सिद्धान्तों का अन्विष्टन कराया जाता है - इ० - प्रतिपादन के द्वारा.

५३. अवबोध स्तर पर यदि आप प्रशिक्षण करना चाहते हैं, तो इ० अनुदेशन प्रशिक्षण साधनों का चयन करेंगे.

५४. बालों में अकारणिक अकारणिक अज्ञानियों के विकास के लिए किया है - इ० - प्रतिपादन स्तरीय प्रशिक्षण.



३४. संकेत अधिगम का संबंध है अनुबन्धन से तो बहुविधेरीकरण सम्प्रत्ययों के अधिगम का संबंध होना चाहिए - ~~क~~ अनुदेशन से.

३५. औपचारिक शिक्षा का प्रभावी चारक है - ~~क~~ अनुदेशन.

३६. प्रशिक्षण द्वारा किया जा सकता है - कौशलों का विकास.

३७. शिक्षण की अवस्था है - १. पूर्व तत्परता अवस्था, अन्तः प्रक्रिया अवस्था, शिक्षण तत्परता के पश्चात् की अवस्था.

३८. शिक्षण की पूर्व तत्परता अवस्था में सम्पन्न होने वाली प्रमुख प्रक्रिया है - ~~क~~ शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित करना, २. पाठ्यवस्तु के संबंध में निर्णय लेना, ३. प्रस्तुतीकरण के लिए क्रमबद्ध अवस्था करना.

३९. शिक्षण की पूर्व तत्परता से संबंधित प्रक्रिया नहीं है - ~~क~~ छात्रों द्वारा से श्रुत्यांकन संबंधी प्रश्न पूछना.

४०. शिक्षण की अन्तः प्रक्रिया अवस्था से संबंधित है - ~~क~~ कक्षा के आकार-प्रकार की अनुकूलिसे छात्रों का निदानसे, क्रिया एवं प्रतिक्रिया से,

४१. शिक्षण की अन्तः प्रक्रिया अवस्था के अन्तर्गत क्रिया-प्रक्रिया मद का संबंध है - ~~क~~ उद्दीपकों के चयन से, उद्दीपकों के प्रस्तुतीकरण से, चुस्त्रियों के प्रयोग से.

४२. शिक्षण की तत्परता के बाद की अवस्था का वास्तविक रूप में संबंध है - ~~क~~ श्रुत्यांकन से.

४३. शिक्षण क्रियाओं का अंतर्वत्त है - ~~क~~ अध्यापकों के द्वारा कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व तथा बाद में की जाने वाली सम्पूर्ण



क्रियाओं का ज्ञान, अध्यापकों द्वारा अपने शिक्षण कोशलों में  
अपेक्षित सुधार, अध्यापकों के द्वारा शिक्षण-चरों का उत्तम ज्ञान

७४. गैने (Gagne) के अनुसार सीखने के प्रमुख प्रकारों की संख्या  
है - ३०-५.

७५. 'अनुबन्धन' - गैने के प्रमुख सीखने का एक प्रकार नहीं है,

७६. शिक्षण - अधिगम के मध्य संबंध है -

३०- शिक्षण, अधिगम - दोनों के योग से प्रभावी शिक्षा का  
विकास संभव है, शिक्षण सिद्धान्तों के विकास में अधिगम  
सिद्धान्तों का अत्यधिक महत्त्व है, शिक्षण सोद्देश्य प्रक्रिया  
है - अपेक्षित अधिगम तक पहुँचाती है,

७७. 'गैने' महोदय के अनुसार शिक्षण की मनोवैज्ञानिक शक्तियाँ  
हैं - ३० - व्यवहार-परिवर्तन करने वाली शक्तियाँ, अधिगम  
परिस्थितियाँ संबंधी शक्तियाँ, ज्ञानात्मक शक्तियाँ,

७८. शॉबर्ट - गैने के अनुसार अधिगम परिस्थितियों के  
प्रमुख प्रकार हैं - ३०-६.

७९. शॉबर्ट - गैने के अनुसार अधिगम परिस्थितियों के स्तरीकरण  
में दोनों क्षेत्रों पर रहनेवाली अवस्थायें हैं

३०- उद्दीपन - अनुक्रिया एवं समस्यात्मक अधिगम,

४०. गैने की अधिगम परिस्थितियों के स्तरीकरण में गटिल  
अवस्थायें हैं ३०- प्रत्यय - अधिनियम एवं समस्यात्मक अधिगम,

४१. गैने ने अधिगम परिस्थितियों को कितने वर्गों में विभक्त किया  
है १. ३०- ४ वर्गों में.



द१. गेने की अधिगम परिस्थितियों में सबसे सरलतम प्रकार है  
उ० - संकेत अधिगम.

द२. संकेत अधिगम (इंग्रज ~~द्वारा~~ <sup>द्वारा</sup>) का संबंध है -  
उ० - पावलोवियन अनुबन्धन से.

द३. उद्दीपन - अनुक्रिया का संबंध है - उ० - ऑपरेंट कन्डीशनिंग से.

द४. अभिक्रमित अनुदेशन (प्रोग्राम्ड इन्सट्रक्शन) का जन्म माना  
जाता है - उ० - ऑपरेंट कन्डीशनिंग से.

द५. शृंखला अधिगम के प्रकार हैं - उ० - शाब्दिक एकल अशाब्दिक  
अधिगम.

द६. शब्दिक शाब्दिक सहसंबंध अधिगम को प्रचुरता से प्रयोग  
किया जाता है - उ० - भाषा शिक्षण में.

द७. बहुश्रेणीय अधिगम का तुलनात्मक संबंध है - उ० अवबोधस्तर से

द८. बहुश्रेणीय अधिगम में मास्टरी हो जाने के बाद की  
अधिगम परिस्थिति होगी उ० - प्रत्यक्ष - अधिगम.

द९. अधिनिर्धार अधिगम की उत्पत्ति को परिणाम माना गया  
है - उ० - दो या दो से अधिक शृंखलाओं का.

द१०. समस्या - समाधान अधिगम का प्रत्यक्ष संबंध है -  
उ० - चिन्तन स्तर से.

द११. क्रॉनबैक ने शिक्षण सिद्धान्तों के आधार के रूप में कितने  
घटकों का ब्योरा प्रस्तुत किया है उ० - ७ घटकों का.



द्वि. क्रोनवैक के शिक्षण सिद्धान्त का कमबद्ध रूप है :-

उ० - परिस्थिति, कक्षाओं की विशेषताएँ, लक्ष्य, अर्थापन, क्रिया, परिणाम, भय के प्रति प्रतिक्रिया.

द्वि. परिस्थिति (Situation) में क्रोनवैक ने सम्मिलित किया है

उ० - पाठ्यवस्तु - शिक्षक को, कक्षा - अधिगम सामग्री को, अधिगम उद्देश्यों को ।

द्वि. क्रोनवैक के अनुसार अर्थापन (Interpretation) से अभिप्राय है - उ० - कक्षाओं के अधिगम लक्ष्य,

द्वि. शिक्षण की उत्तर क्रिया अवस्था (Post teaching stage) का संवेद्य है - उ० - शिक्षण द्वारा व्यवहारिक परिवर्तन के वास्तविक रूप की परिभाषा करना १. मूल्यांकन की उपयुक्त प्रविधियों का चयन करना, ३. प्राप्त परिणामों से शिक्षण नीतियों में परिवर्तन करना.

क्रियाएँ के  
द्वि. शिक्षण (क्रियाओं का महत्व है) १. शिक्षकों को दिशा निर्देश मिलता है कि उन्हें जहाँ कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व, कक्षा में रहकर तथा उसके पश्चात् क्या करना चाहिए, २.

द्वि. शिक्षण क्रियाओं के महत्व के विषय में कहा गया है -

उ० - शिक्षकों को दिशा निर्देश मिलता है कि उन्हें कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व, कक्षा में रहकर तथा उसके पश्चात् क्या करना चाहिए, २. सीखने - सीखाने की क्रियाओं में दृढिष्ठ संवेद्य स्थापित करता है, ३. स्थिति स्तर से चिन्तन स्तर तक के शिक्षण को प्रभावी बनाता है ।

द्वि. अनुदेशन एवं शिक्षण में परस्पर एक समानता है

उ० - दोनों में ही - पृष्ठ-पोषण, पुनर्बलन, माध्य निश्लेषण, पर-बल दिया जाता है ।

द्वि. शिक्षण में अनुदेशन निहित है ✓



# Teaching: Nature objectives, characteristics and Basic Requirements. Requirements.

900. शिक्षण त्वरों के कार्य है - १. निदानात्मक, उपचारात्मक, मूल्यांकन.

901. ~~अनुकूल प्रश्न~~ में निदानात्मक कार्य के संबंध है -

उ०- शिक्षण समस्या का विश्लेषण करना, बच्चों के पूर्व ज्ञान का निर्धारण करना, कार्य विश्लेषण एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान.

902. उपचारात्मक कार्य है - १. शिक्षण कौशल, नीति एवं युक्ति का चयन, प्रश्न चोषण की प्रविधियों की व्यवस्था, निदान के अनुसार उपचार.

903. अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाना ही अधिकतम है। यह कथन है - गेदस (Gates) महोदय का.

१. बालक का सामाजिक विकास प्राथमिक रूप से निर्धार करता है - वातावरण पर.

२. वंशानुक्रम का समानता का नियम प्रतिपादित करता है -  
उ०- जैसे जैसे माता-पिता वैशे ही उनके बच्चे बच्ये।

३. प्रायः जब बालक अपने मातापिता की विपरीत विशेषताओं के अनु रूप होते हैं, तो उन पर वंशानुक्रम का सिद्धान्त लागू होगा - प्रत्यागमन का.

४. बालक की व्यावहारिक मूल प्रवृत्तियों का उद्गम स्थल माना जाता है - उ०- वंशानुक्रम को.

५. बालक का प्राथमिक संगठन प्रभावित होता है वंश से



६. कि ~~स~~ स्थलेतिक में सर्वाधिक शारीरिक शक्तार्थ होगी.

७. कि <sup>मनो</sup>संवेदानिक में मना।

८. कार्ल पियर्सन ने (जनोवेदानिकने) गणनात्मक अध्ययन द्वारा इस तथ्य की पुष्टि की है कि ज्ञान-पिता की लम्बाई बड़ा और स्वास्थ्य का प्रभाव बालकों पर पड़ता है।

९. विभिन्न शत्रुण्य प्रजातियों में पाया जाने वाला विभेद परिणाम है - ३० - वंशानुक्रम एवं पर्यावरण का.

१०. बालक की मूल प्रवृत्तियों को जन्मजात प्रवृत्तियाँ कहा जाता है।

११. मूल प्रवृत्तियाँ इष्टिगोचर होती हैं मानव एवं पशु-पक्षियों में।

१२. मूल प्रवृत्तियों की एक विशेषता है प्रयोजनमूलकता।

१३. अपलायन / मूल प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति होती है भय के अनुभव करने पर.

१४. मूल प्रवृत्तियों के अध्ययन के आधार पर व्याख्या की जा सकती है बालकों के रुझानों की.

१५. बालक को सामाजिक व्यवहार की शिक्षा दी जा सकती है विद्यालय में सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के द्वारा.

१६. अन्य व्यक्तियों के अनुभवों की अनुभूति करके व्यवहार करने की प्रक्रिया का नाम है सहानुभूति।

१७. बालकों में अधिगम अवबन्धी योग्यताओं का विकास होता है व्यक्तिगत क्रियाकलापों के माध्यम से.



१७. बालक में अधिगम उन्नयन की प्रमुख प्राथमिक आवश्यकता है अनुकरण।

१८. खेल एक ऐसी प्रक्रिया जिसका उपयोग किया जाता है बालकों को सिखाने में।

१९. जब बालक खेल खेल में अपने बड़ों का अनुकरण (Role playing) करता है, तो उसे कहेंगे झूठ झूठ के खेल।

२०. खेलों के द्वारा बालकों में विकास शैक्षणिक - उच्च - पारस्परिक सम्बन्ध देने की कला का, सहयोग, सामंजस्य की भावना का, सामाजिक सद्वर्तुणों का।

२१. खेल आधारीय शिक्षण विधियों का जनक है - डॉ. प्रोबल।

२२. बालकों के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है - प्रेरणा का।

२३. बाल्यावस्था की प्रमुख विशेषताएँ हैं - १. यथार्थवादी दृष्टिकोण, २. अपेक्षाकृत स्थिर विकास प्रक्रिया, ३. अधिगम की तीव्रता।

२४. किशोरावस्था के बालकों की अधिकांश समस्याएँ जन्म लेती हैं - डॉ. प्रोच के फलस्वरूप।

२५. कक्षा के अन्दर बालकों के अधिगम पर सर्वाधिक प्रभाव दृष्टिकोण होता है - डॉ. कक्षा का मनोवैज्ञानिक वातावरण।

२६. प्राथमिक मानसिक थकान की स्थिति में एक व्यक्ति अनुभव कर सकता है - डॉ. मानसिक दुर्बलता, अवधान निष्क्रियता, स्वभावगत बेचैनी।



२०. शिशुत्व को प्रभावित करने के उपाय हैं - ऊँ - विषयों परिवर्तन, रिलेक्सेशन, शांत वातावरण शांत वातावरण संचालन.

२१. शिशुत्व की अवधि मानी जाती है - ऊँ से ३ वर्ष तक.

२२. बालविकास को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है - वंशानुक्रम.

२३. बालकों में स्वाधिकार की भावना का विकास होता है ३-५ वर्ष तक.

२४. 'हीन स्तर' (Low stage) का काल है - १३ से १५ वर्ष तक.

२५. भारतीय परिवेश में किशोरावस्था का समय माना जाता है -  
३० - ३५ - ४० वर्ष तक.

२६. निम्नलिखित में से

२७. कौन सी अवस्था में आवेग की तीव्रतम स्थिति उत्पन्न हो सकती है?  
३० = किशोरावस्था में.

२८. बाल्यवस्था में बालक-प्रायः अधिक स्थापित करता है - ३० - समलैंगिक बालकों से.

२९. कौन सा काल 'संघर्ष काल' कहा जाता है? - ३० - किशोरावस्था.

३०. किशोरावस्था वह अवस्था है, जिसमें बालक परिपक्वता की ओर ~~अग्रसर~~ अग्रसर होता है। - यह कथन है जे.सी. लुका.

३१. ४० किशोरावस्था वह संघर्ष, तनाव, क्लेश एवं विरोध की अवस्था है। यह कथन है - स्टेनली हॉल का.



३६. किशोर को निर्देशन

३६. किशोर को निर्देशन के द्वारा निम्न प्रकार की सहायता प्रदान की जा सकती है -  
३७. उचित निर्णय लेने की, संवेग नियंत्रण की, मनोदैहिक परिवर्तनों के प्रति झुकाव की.

३८. किशोर को निर्देशन प्रदान करने का प्रयोजन को सर्व को के अनुसार है -  
३९. स्वास्थ्य संबंधी, यौन संबंधी, मानसिक अस्थिरता संबंधी.

४०. अभिप्रेरणा (मोटिवेशन) शब्द की व्युत्पत्ति दुर्क है -  
(MOTUM से)

४१. एक अधिगमकर्ता को प्रेरित करने की उपयुक्त स्थिति (उपाय) है -  
४२. प्रशंसा.

४३. आंतरिक प्रेरणा होती है -  
४४. सकारात्मक.

४५. एक अधिगमकर्ता को उचित प्रेरणा प्राप्त हो सकती है -  
४६. उत्तम विद्यालय परिवेश से.

४७. किस मनोवैज्ञानिक का कथन है कि वह अभिप्रेरणा क्षेत्र में रुचि उत्पन्न करने की कला है? -  
४८. थॉमसन

४९. प्रेरणा के मूलप्रवृत्ति सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं -  
५०. मैक्डगाल

५१. मानव व्यवहार का विकास निर्धार करता है -  
५२. आनुवंशिकता पर, पर्यावरण पर,

५३. बालक के शारीरिक लक्षण किन शारीरिक लक्षणों से पुनर्निश्चित होते हैं -  
५४. आनुवंशिक प्रबल लक्षण.

५५. यदि माता एवं पिता का रंग काला है, तो उनके होने वाले



बालक के रंग की सम्भावना होगी - उ० - दोनों में से कौनसा भी हो सकता है।

४६.

प्र०. आप मुझे एक बालक दें, मैं उसे अपनी इच्छानुसार कौनसा भी बना सकता हूँ, यह कथन जोर देता है - उ० - पर्यावरण की महत्ता पर।

प्र१. आनुवंशिकता एवं पर्यावरण जैसे शब्द किसी भूत वस्तु की ओर संकेत नहीं करते, बल्कि अभूतता की ओर संकेत करते हैं यह कथन है - उ० - डेविस का।

प्र२. किस मनोवैज्ञानिक संस्कृता का निश्चयीकरण केवल आनुवंशिकता के आधार पर होता है? उ० - किंग।

प्र३. कौनसा प्रत्यय पर्यावरण से प्रभावित होता है? - उ० - बुद्धि, शारीरिक वृद्धि, स्वभाव।

प्र४. किस प्रसिद्ध परिवार का अध्ययन आनुवंशिकता का प्रभाव जानने के लिए किया गया था? उ० - काल्लिकॉक।

प्र५. आनुवंशिकता के प्रभाव के विरुद्ध कौन जो तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं? उ० - आनुवंशिकता का प्रभाव सीमित है, बुद्धि पर पर्यावरण का प्रभाव शारीरिक लक्षणों पर पर्यावरण का प्रभाव।

प्र६. बालक का बौद्धिक विकास ८०% आनुवंशिकता एवं २०% पर्यावरण का परिणाम है, यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है - उ० - यर्क्स ने।

प्र७. किस मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि आनुवंशिकता हमें विकसित करने के लिए क्षमताएँ देती है, परन्तु इनका विकास पर्यावरण से ही संभव है? उ० - लैण्डिस एवं लैण्डिस।

प्र८. मानव समाज की केन्द्रिय सामाजिक संस्था कहा जाता है उ० - परिवार को।



२६. पारिवारिक सामाजिकरण का सर्वोत्तम साधन है - परम्परा है ,

२७. बालक के भाषा विकास में आधारभूत योगदान देनेवाली संस्था है - परिवार .

२८. विद्यालय परिवेश में बालक के सामाजिक विकास के सम्बन्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है - ड०- पाठ्यक्रम ,

२९. एक-एककी बालक को देखकर आप क्या अनुमान लगायेंगे  
ड०- उसका उसका उचित सामाजिकरण नहीं हो पाया है ,

३०. बालकों पर सामाजिक इतरीकरण के प्रभाव को उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वह करते हैं -  
ड०- माता-पिता .

३१. बालक के सामाजिकरण का समानुपाती संबंध है -  
ड० - सामाजिक विकास से ,

३२. सामाजिक विकास में सबसे महत्वपूर्ण कारक कौन सा है ?  
ड०- सामाजिक प्रतिबद्धता .

३३. स्कूल में प्रवेश पूर्व बालकों के खेलों को वर्गीकृत किया जाता है -  
ड० - आन्तर्केन्द्रित खेलों में .

३४. सामाजिकरण प्रक्रिया के प्रारम्भ होने की अवस्था है -  
शैशवावस्था .

३५. बालक के सामाजिक व्यवहार में निम्नीकरण उत्पन्न होता है - ड०- तीन से दस वर्ष तक ,

३६. बालकों में लैंगिक सम्बोध का विकास होता है - ड०- बाल्यावस्था में -



७०. सामाजीकरण के संदर्भ में व्यवहारवादियों का दृष्टिकोण है  
३०- पर्यावरणवादी.

७१. सामाजीकरण में बालक द्वारा प्रत्यक्षीकृत किया जाता है - ३०- स्वयं को.

७२. बालक-बालिकाओं के पृथक् सामाजीकरण का कारण है - ३०- उनकी  
पृथक् पृथक् भूमिका प्रत्यावाहें.

७३. एक सीनियर छात्र बुनियाद छात्र के लिए किस रूप में कार्य करता है;  
३०- मॉडल.

७४. मान लीजिए एक बालक अपने आई-बहिनों एवं अन्य परिवार  
परिवारीकजनों के साथ लड़ाई-झगड़ा करता है, उसकी इस बुरी  
आदत से दृष्टिकार दिलाने के लिए आप क्या करेंगे ?

३०- आप उससे अकेले में बातें करेंगे तथा इस समस्या के  
कारण बात करेंगे.

७५. यदि बालक घर में आने वाले व्यक्तियों को देखकर उग्र व्यवहार  
करता है. वैसे सामान्य दिखता है, तो ऐसे बालक के लिए  
माता-पिता को आप क्या सलाह देंगे ?

३०- आप अपने बालक की बुनियादी समस्या को जानने  
का प्रयत्न करें तथा उसका निराकरण करें.

७६. प्रायः विद्यालय में ऐसे बालक प्रवेश लेते हैं जो अपने सहपाठियों  
की किताब-कापियाँ आदि सामान चोरी कर लेते हैं, ऐसे बालकों  
की चोरी की आदतों को दृष्टाने के लिए आप क्या उपाय  
करेंगे ?

३०- आप जैसे ही चोरी पकड़ेंगे, गहन पूछताछ करेंगे. उसके  
माता-पिता को बतायेंगे तथा निगाह रखेंगे,

७७. बालकों के व्यवहार परिवर्तन की सर्वाधिक प्रभावी पद्धति है-



30- पुरस्कृत करना

जब यदि एक बालक किसी भी खाने-पीने या खेल की वस्तु को देखकर लड़ कर बैठता है तथा माता-पिता को आर्बितनिक स्थलों पर खिंची उठानी पड़ती है, तो इसे कैसे ठीक करेंगे?

उ०- बालक को उस समय अन्वृष्ट करके, किन्तु बाद में खलीजों से बताने की कोशिश करेंगे।

ज०- आप एक ठीठ बालक के व्यवहार को संशोधित करने के लिए क्या करेंगे? सामान्य स्थिति में उसे ल्यार से समझावेंगे ताकि वह आगे से ऐसा व्यवहार प्रदर्शन न कर सके।

ज०- बालकों में स्वस्थ आह्वयन आदतों के विकास के लिए आप क्या करेंगे?

उ०- आप उन्हें प्रथमवर्ष दूध से पढ़ने के लिए बचपन से ही प्रेरित करेंगे।

ज०- बालकों में 'सच्चाई' के गुण का विकास सम्भव है -

उ०- स्वयं कठोरता से सच्चाई का पालन करने से।

ज०- आपके यहाँ विद्यालय में मध्यम उच्च शिक्षा की व्यवस्था की जाती है, जिससे -

उ०- छात्र अपनी पकान को दूर कर सकें तथा शिक्षक भी विलेखन हो सकें।

ज०- अभिप्रेक्षा के संबंध में कौनसा तथ्य असत्य है -

उ०- अभिप्रेक्षा क्रियाएँ लक्ष्य की ओर अनिर्दिष्ट होती हैं।

ज०- अभिप्रेक्षा चक्र से संबंधित तत्व हैं उ०- आवश्यकता, प्रणोद, प्रोत्साहन।



द्व. चालन (ड्राइव) एवं आवश्यकता (नीड) का पारस्परिक संबंध है -  
इ- एक - दूसरे के पूरक हैं ।

द्व. अभिप्रेरण चक्र के संघटकों का क्रम है इ- आवश्यकता → चालन  
→ प्रोत्साहन .

द्व. जन्मजात अभिप्रेरणों का दूसरा नाम है इ- शारीरिक अभिप्रेरण  
एवं जैविक अभिप्रेरण .

द्व. मैक्डूगल के अनुसार मूल प्रवृत्तियाँ हैं - इ- जन्मजात स्वभ  
अर्जित .

द्व. मैक्डूगल ने मूल प्रवृत्तियों के तीन प्रधान तत्व बताए हैं  
एक पक्ष जो उसमें सम्मिलित नहीं है - इ- प्रेरक शक्ति पक्ष ,

द्व. बालक में कुंठा जन्म लेती है - इ- अभिप्रेरणों के संघर्ष के फलस्वरूप .

द्व. किस जनोवैज्ञानिक ने यह तथ्य स्पष्ट किया कि बालक में जन्म के  
समय कुछ विशेष संवेग उपस्थित रहते हैं? इ- वाटसन .

द्व. आधुनिक जनोवैज्ञानिकों ने कौन से कारकों को - संवेगात्मक विकास के  
लिए उत्तरदायी माना है? इ- परिपक्वता स्वभ अधिगम .

द्व. परिपक्वता एवं संवेग विकास में समानुपाती संबंध पाया जाता है, इस  
मत के प्रवर्तक हैं - इ- बिनेज .

द्व. प्रसिद्ध महिला जनोवैज्ञानिक बिनेज ने किस आयु वर्ग के बालकों पर  
संवेग संबंधी अध्ययन किये थे? इ- जन्म से 28 माह तक .

द्व. जैसे-जैसे बालक बड़ा होता है उसके संवेगों का विकास निर्भर करता है  
- इ- अधिगम योग्यता पर .



द्वि. स्थायी भाव (Endothymia) का प्रकार है - साधारण स्थायी भाव,  
जटिल स्थायी भाव, मूर्त-अमूर्त स्थायी भाव.

स्थायी भाव का प्रकार नहीं है - मुख्यतः स्थायी भाव.

द्वि. वेलेन्टाइन (Volentine) के अनुसार स्थायी भाव है -

इ- व्यक्ति की संवेगात्मक प्रवृत्तियों एवं भावनाओं का संगठित  
स्वरूप.

द्वि. शिशु के प्रति माता का स्थायी भाव होगा - प्रेम.

द्वि. स्थायी भाव की विशेषताएँ हैं - क. अनित होते हैं, मानसिक  
स्मृतियाँ हैं, मूर्त होते हैं.

'स्थायी भाव' की विशेषता नहीं है - स्व अनुभूत होते हैं.

१००. खेल विधियाँ हैं - ब्रिनेटका योजना, बेसिक शिखा, डाकटन योजना -  
खेल विधि नहीं है - वाटसन योजना.

१. कौन सा एक ऐसा तत्व है जिसका प्रभावी प्रयोग में न्यूनतम  
सहयोग पथा जाता है? इ- शिखा अनुभूति.

२. शिखा नियोजन का संबंध है इ- कार्य विश्लेषण से, शिक्षण  
उद्देश्यों की पहचान से, अध्ययन-उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में  
लिखने से.

शिखा नियोजन का संबंध नहीं है - इ- कक्षा में छात्रों को उचित  
स्थान पर बैठा देने से.

३. कार्य विश्लेषण (Task Analysis) का संबंध है इ- छात्र की  
अधिगम सम्बन्धी क्रियाओं से, छात्र के अधिगम संबंधी प्रत्याशित  
व्यवहार से, छात्र अधिगम संबंधी परिस्थितियों से, अपेक्षित निष्पत्ति  
सम्बन्धी मानदण्डों के निर्धारण से.



४. कार्य विश्लेषण को लाभ है - इस शिक्षक को शिक्षण कार्य से सुपरिचित करना,  
शिक्षक को उसके अधिगत संबंधी परिस्थितियों का सुपरिचित बनाना

५. शिक्षक को द्वारा पाठ्यवस्तु विश्लेषण के समय दृष्टान्त दिया जाता है  
इं - प्रकारण - ५३, उपकारण ५२, पाठ्यवस्तु ५२,

६. कौशल विश्लेषण का संबंध है - इं - प्रश्न पूछने से, प्रयोग करने से,  
व्याख्या एवं निदान से,  
कौशल विश्लेषण का संबंध नहीं है इं - शिक्षण काल में किए गए  
कार्यों से

७. मानविक क्षेत्र के शिक्षण उद्देश्य हैं - ज्ञान - बोध - प्रयोग ।  
तथा - विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन,

८. मानविक उद्देश्यों के वर्गीकरण के प्रणेता का नाम है -  
डॉ - ब्लूम, बी. एस. एस.

९. क्रियात्मक उद्देश्यों के दोनो बिंदुओं के दूसरों पर पाये जाने वाले उद्देश्य  
हैं - इं - आत्म निर्माण

१०. मानविक उद्देश्यों के वर्गीकरण के लिए जिम्मेदार व्यक्ति का नाम  
है - डॉ - क्रेयटोल

११. मानविक उद्देश्यों का संबंध है - डॉ - अस्तिक से

१२. सर्वाधिक गरिब वर्गीकरण जो वर्तमान में भी मान्य है, वह है  
- डॉ - मानविक क्षेत्र का

१३. पाठ्यवस्तु विश्लेषण के प्रमुख स्रोत हैं डॉ - प्राथमिक पाठ्य-पुस्तकों  
का अध्ययन करना, छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना,  
छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं पर ध्यान देना



१४. पाठ्यवस्तु के तत्वों की विशेषता है - इ-क - छात्रों के द्वारा तत्व के ज्ञान होने की स्थिति में अपनी सकारात्मक अभिवृत्ति बाह्य कक्षा छात्रों के व्यवहार के आधार पर विभिन्न तत्वों की स्थिति का अनुमान लगाना, छात्रों की तत्वों के प्रति की जाने वाली अभिवृत्ति के आधार पर व्यवहार परिवर्तन का पता लगाना।

१५. पाठ्यवस्तु के तत्वों की विशेषता नहीं है - क - छात्रों से तत्वों में पाठ्यवस्तु होने की स्थिति की परीक्षा करना।

१६. कौन सी व्यवस्था यह पाठ्य तत्वों की व्यवस्था के प्रतिकूल है - इ-क - ज्ञान से ~~सम~~ अंधकार की ओर।

१७. सैद्धांतिक उद्देश्यों एवं शिक्षण उद्देश्यों में विभेद किया जाता है - क - स्वरूप/प्रकृति के आधार पर, अंश एवं सम्पूर्णता के आधार पर, कालिक आधार पर।

१८. 'राष्ट्रीय स्तर की भाषा का विकास' यह उद्देश्य कहा जाएगा - क - शैक्षिक उद्देश्य।

१९. शैक्षिक उद्देश्यों का स्रोत होता है - क - मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त।

२०. 'ज्ञानात्मक उद्देश्यों' का संबंध होता है - क - सूचनाओं, ज्ञान तथा तथ्यों की जानकारी से।

२१. बल्लभ की प्रसिद्ध पुस्तक का नाम है - क - 'टेक्सोनोमी ऑफ एड्युकेशनल ऑब्जेक्ट्स ऑफ एड्युकेशन'।

२२. 'ज्ञान' (Knowledge) के अन्तर्गत आने वाले पांच अधिगम बिन्दु हैं - क - विशिष्ट वस्तुओं का ज्ञान कराना।

२३. बोध (Comprehension) के अन्तर्गत आने वाले अधिगम बिन्दु हैं



इ- आकृति बनाना, व्याख्या/विवेचना करना, व्यक्तिकरण करना (To describe, to analyse)

२३. 'विवेक्षण' का संबंध है -  
इ- तत्वों के विवेक्षण से, दो तत्वों के परस्पर विद्वान्त का पता लगाने से, किसी विद्वान्त का विवेक्षण करने से.

२४. मानविक उद्देश्य की सर्वोपरी श्रेणी कल्पित (Hypothetical) है, निश्चित नहीं है -  
इ- स्वनिर्णय (बाह्य स्वतंत्र मानविक निर्णय से)

२५. 'ज्ञान + बोध' दोनों के योग से बनता है -  
इ- अनुप्रयोग (Application)

२६. 'तत्त्वत्मक सूचनाओं' संकलित करने में मदद करते हैं -  
इ- मानव स्वतंत्र अवबोध.

२७. सम्प्रत्यय संकोच (Concept formation) की आधारशिला है -  
इ- अवबोध एवं विवेक्षण.

२८. दल्लभ की परीक्षा-प्रणाली में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान है -  
परीक्षाओं को उद्देश्य - आधारित बनाकर पाठ्यवस्तु के महत्व को प्रजाप्त करना.

२९. निम्न लिखित में से कौन सी हर कार्यशूचक क्रिया (Action verb) का संबंध ज्ञान (Knowledge) उद्देश्य से नहीं हो सकता है?  
इ- व्याख्या करना.

कौन सी हर कार्यशूचक क्रिया का संबंध ज्ञान उद्देश्य से हो सकता है -  
इ- प्रत्यास्मरण करना, सूचीबद्ध करना, पहचान करना.

३०. 'विवेचन करना' (To Interpret) का संबंध हो सकता है  
इ- अवबोध उद्देश्य से.



इ. प्राप्ति में किसी सिद्धान्त के पूर्वकथन करने की योग्यता का विकास हो जाना संभव है - उ. अनुपयोग अनुपयोग के अन्तर्गत.

इ. श्रवण करना, स्वीकृति देना तथा रुचि प्रकट करना - इन तीनों कार्य सूचक क्रियाओं का संबंध होना चाहिए -  
आवृत्ति (Responding) से.

इ. Regional College of Education, Mysore (RCER)  
के अनुसार मानात्मक उद्देश्यों का सही वर्गीकरण है - उ. -  
मान-बोध-प्रयोग - सार्वजनिकता.

इ. (Application)  
अनुपयोग' के अन्तर्गत मानसिक योग्यताएँ (Mental Abilities) निहित रहती हैं - उ. तर्क करना एवं परिकल्पना का प्रतिपादन करना, परिकल्पना की स्थापना करना एवं निष्कर्ष निकालना, पूर्वकथन करना एवं निरूपण करना.

इ. क्रियासूचक शब्दों के आधार पर 'अनुपयोग उद्देश्य' (Application objective) की पहचान है - उ. - छात्रों में परिकल्पना निर्माण की योग्यता है.

इ. मान लीजिए आप छात्रों को एक पाठ पढ़ा रहे हैं जिसका शीर्षक है - 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम' इस आप इस प्रयोग के लिए अनुपयोग आधारित उद्देश्य क्या बनाएंगे?

उ. - छात्रों में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की महत्त्व के संदर्भ में तर्क करने की योग्यता है

प्र. सर्वोच्च स्तर पर सभी शिक्षण उद्देश्यों के एक विशेष गुण के दर्शन होते हैं यह गुण है - उ. - सब समस्त मानसिक प्रयोगों का स्वीकरण - जिससे बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास हो सके.



३२. शिक्षण व्यवस्था का संगठन ~~का~~ (Organised Teaching) का संबंध है -  
उ० समुचित शिक्षण युक्तियों के चयन से, समुचित समुपपन्न विधियों के चयन से, समुचित दृश्य श्रव्य सामग्री के चयन से -

३३. शिक्षण युक्तियों (Teaching Techniques) का संबंध है - उ० अधिगम संरचना (Learning Structures) से.

४०. डेवीज (Davies) के अनुसार अधिगम परिस्थितियाँ हैं - उ० - संकेत अधिगम मुख्यतः अधिगम, प्रत्यय अधिगम

डेवीज (Davies) के अनुसार अधिगम परिस्थिति नहीं है - उ० सीझुलेटेड अधिगम.

४१. संकेत अधिगम का तात्पर्य है कि पापी प्रत्येक उद्दीपक के लिए क्रियाएँ करेगा, उ० - अलग-अलग.

४२. डेवीज के परिस्थिति चक्र में पाँच प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है यथा - संकेत - दृश्यता - बहुशेदीय - प्रत्यय-सिद्धान्त.

४४. संकेत अधिगम (Signal Learning) की दृष्टि में निम्न शिक्षण शिक्षण युक्तियों का प्रयोग करना आवश्यक है वे हैं -

उ० - छात्रों के लिए पर्याप्त उद्दीपन प्रदान करना जिससे कि वे अनुक्रिया के लिए तत्पर रह सकें, छात्रों की सही अनुक्रियाओं को पुनर्बलन प्रदान करना, छात्रों का जो ऐसे उद्दीपन प्रदान करने जायें जिससे वे अधिगम सामग्री पर अधिकार योग्यता प्राप्त कर सकें (Mastery)

४५. मुख्यतः अधिगम (Chain Learning) के परिप्रेक्ष्य में उन्नत शिक्षण युक्ति है - उ० छात्रों के समक्ष विषय वस्तु की सम्पूर्ण दृश्यता को निरन्तर दृष्टि से प्रस्तुत किया जाए, उद्दीपन क्रियाओं को क्रमशः अग्रिम दृश्यता (Progressive Chain) के रूप में प्रस्तुत किया जाए, तत्पश्चात् पश्चिम दृश्यता (Retrospective Chain) के रूप में प्रस्तुत किया जाए.



४६. बहु उद्देशीय प्रकार के अधिगम (multiple Disadvantage type learning MDTL) के लिए आवश्यक अधिगम उपाय हैं।  
इन्हें छात्रों के समस्त प्रस्तुत किये जाने वाले उद्देश्यों 'इंटर अनुक्रियाओं' को नहीं तक सम्भाव हो 'अलग-अलग' रखना चाहिए, यूनः समस्त उद्देश्यों एवं अनुक्रियाओं को साथ-साथ प्रस्तुत किया जाये ताकि छात्रों द्वारा अपने-अन्तरों की पहचान की जा सके, छात्रों को प्रस्तुत रूप से विभिन्न उद्देश्यों एवं अनुक्रियाओं में अन्तर ढूँढने के लिए स्वयं प्रेरित किया जाये।

४७. 'सिद्धान्त अधिगम' के अनुकूल शिक्षण युक्तियाँ हैं :-  
उ०-छात्रों को सामान्यीकरण के लिए प्रेरित किया जाए, छात्रों को विभिन्नताओं को पहचानने के अवसर प्रदान किये जाएं।

'सिद्धान्त अधिगम' के अनुकूल शिक्षण युक्ति नहीं है :-  
उ०- प्रत्ययों की पहचान का अभ्यास कराया जाये जिससे कठिन स्थलों को सुगम बनाया जा सके।

४८. व्याख्यान विधि के द्वारा एक शिक्षक कौन से अधिगम उद्देश्य की प्राप्ति कर पाता है - उ०-ज्ञानात्मक, भावात्मक, व्याख्यान विधि के द्वारा एक शिक्षक कौन से अधिगम उद्देश्य की प्राप्ति नहीं कर पाता है - उ०-क्रियात्मक।

४९. आण्युद्देश्य शिक्षण (Tutoring) का कार्य है - उ०-ज्ञानात्मक तथा भावात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति।

५०. 'संवेदनशील प्रशिक्षण' के माध्यम से एक शिक्षक कौन अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकता है :- उ०-ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक उद्देश्य।

५१. क्रियात्मक उद्देश्यों (Psychomotor objectives) की प्राप्ति संभव है उ०-पाठ-प्रदर्शन शिक्षण आण्युद्देश्य के द्वारा, संवेदनशील प्रशिक्षण शिक्षण आण्युद्देश्य के माध्यम से।  
(शिक्षण आण्युद्देश्य = Tutoring)



पू२. दृश्य श्रव्य सहायक सामग्री शिक्षण प्रक्रिया पर प्रभाव डालती है  
उ० - दूरदर्शन वृद्धि करके, शिक्षण स्थानान्तरण करके, मान शक्ति  
एवं पुनर्वसन के रूप में.

पू३. टेपरिकॉर्डर के प्रयोग द्वारा अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है, वे हैं  
उ० - रानालम्बक, भावालम्बक तथा क्रियात्मक

पू४. अधिगम उद्देश्यों की सम्पूर्ण प्राप्ति में लाभदायक सहायक सामग्री  
सूचक है, उ० - टेप, ग्राफोफोन, दूरदर्शन.

पू५. सूर्यलावट्टु अधिगम (Chavara's Learning) के उपयुक्त दृश्य-श्रव्य  
सामग्री है - रेडियो.

पू६. भाषा प्रयोगशाला (Language Laboratory) के माध्यम से किन  
अधिगम के किन स्वरूपों की प्राप्ति संभव होती है - उ० - संकेत,  
सूर्यला एवं चकुमेदीय अधिगम.

पू७. शैक्षिक यात्राएँ लाभप्रद सिद्ध होती हैं :- उ० - प्रत्यक्ष अधिगम, सिद्धान्त  
अधिगम एवं सूर्यला अधिगम में.

पू८. अभिप्रेरणा में 'मानव व्यवहार' को कौन से निम्नलिखित तत्व प्रदान  
करते हैं - उ० - मानव व्यवहार को उत्पन्न करना, स्थायी करना,  
एवं निर्दिष्ट करना.

पू९. मैसलो (1954) के द्वारा दिये गये आवश्यकताओं के वर्गीकरण में  
प्रार्थना स्थान प्राप्त किया है - उ० - स्वात्मीकरण संबंधी  
आवश्यकताओं में.

पू१०. अभिप्रेरणा प्रविधियों का वर्गीकरण संभव है - उ० - बाह्य एवं  
आन्तरिक प्रविधियाँ.



## अभिप्रेरण = Motivational

६१. अभिप्रेरण एक विशेष आन्तरिक कारक जिसका सावधानी से जो किया जा आरम्भ करने आचारा निरन्तर बनाए रखने की प्रवृत्ति की द्योतक है - यह कथन है कि जिस जनोवैज्ञानिक का है - डॉ. ब्रगाडिनर अर्को ,

६२. अभिप्रेरण में सम्मिलित नहीं है - डॉ. प्रतिभा क्रियार्थ ,

६३. अभिप्रेरण में कौन से लक्षण उपस्थित है - रसायनिक तीव्रता, न्यायचय की तीव्रता, शारीरिक तीव्रता ,

६४. प्रशिक्षण एवं निष्ठा दोनों ही अभिप्रेरण अवस्थित है इनमें से निष्ठा का प्रयोग करना उचित होगा - डॉ. सामान्य प्रश्नों के साथ ,

६५. जनोवैज्ञानिक दृष्टि से कौन सी अभिप्रेरण अधिक महत्वपूर्ण है - डॉ. सहयोग एवं प्रशिक्षण ,

६६. प्रगति का तात्कालिक ध्यान कार्य करता है - डॉ. अभिप्रेरण एक व्यवहार उत्पन्न करने में ,

६७. कक्षा-शिक्षण में अभिप्रेरण का महत्व है - डॉ. छात्रों के व्यवहार को ब्रक्ति प्रदान करना, छात्रों के वास्तविक परिवर्तन में सहायता करना, छात्रों के व्यवहार का प्रभाव करना ,

६८. 'दण्ड' का बहुधा प्रयोग विद्यालय अनुशासन को प्रभावी बनाने में किया जाता है, यह दण्ड अभिप्रेरण के रूप में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा यदि - डॉ. इसे 'पुरस्कार' के साथ प्रयोग किया जाए, अपांक्षित व्यवहार का परिणाम सतिपूर्ण हो अपांक्षित व्यवहार की दृष्टि में तत्काल दण्ड की व्यवस्था की जाय .



इस प्रकार के लिए अभिप्रेरणा प्रविधियों के प्रयोग के लिए शिक्षक को उनके व्यवहार के लिए किन मानदण्डों का प्रयोग करना चाहिए - इस प्रकार की आवश्यकताएँ, अधिगम के उद्देश्य, तथा अधिगम संरचना (Learning structure)

90. आन्तरिक एवं बाह्य अभिप्रेरणा के प्रकारों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाता है - इस नवीनता (Novelty) को, प्रगति के ज्ञान को, प्रतिधोषिता एवं सहयोग को.

91. स्वतः अभिप्रेरणा (Self motivation) व्यक्ति की सर्वोच्च अभिप्रेरणा है जिसका सम्बन्ध रहता है - इस प्रेरणों के स्वात्मीकरण (Self Actualization) से.

92. पुरस्कार एवं दण्ड जैसी बुनियादी अभिप्रेरणाओं का संबंध है - इस शारीरिक आवश्यकताओं से.

93. इसी प्रक्रिया जिसमें उद्देश्यों का विशिष्टीकरण किया जाता है और उनसे संबंधित प्रत्ययों, सिद्धान्तों, कौशलों, भाषा एवं समस्या-समाधान की व्यवस्था की जाती है इसे अनुदेशात्मक प्रक्रिया कहते हैं - यह परिभाषा प्रस्तुत की है - इस शब्द से.

94. अनुदेशात्मक प्रक्रिया को महत्वपूर्ण तत्व हैं - इस उद्देश्य रचना - कार्य विश्लेषण - पूर्व व्यवहार - शिक्षण सामग्री - शिक्षण प्रक्रिया - मूल्यांकन एवं निदान.

95. किन्तु प्रकार के अधिगम को अनौपचारिक रूप से 'अधिगम' नहीं कहा जा सकता है - इस - [अभिप्रेरणा से उत्पन्न अधिगम, विशेषता से उत्पन्न अधिगम, यकान से उत्पन्न अधिगम] इन सभी के मालस्वरूप होने वाला अधिगम.



उद्. क्रमबद्ध बुनियादी अधिगम परिस्थितियाँ हैं - उ० - समीपता - सामाजिकीकरण - निशेदीकरण - अभ्यास - पुनर्वसन .

उ०. 'समीपता' (Contiguity) का सम्बन्ध है - उ० - दो उद्दीपनों को एक समान-अनुक्रिया के लिए प्रस्तुत करना .

उद्. प्रत्यय-स्वरूप अधिनिचम (Concepts - word relationship) के शिक्षण की उपयोगिता है - उ० - छात्रों को वाह्य वातावरण में उपस्थित वस्तुओं से परिचित कराना, - छात्रों को यांत्रिक क्रियाओं की शिक्षा प्रदान करना, अनुदेशन को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करना .

उद्. मिलार्ड के अनुसार सर्जनात्मकता के चार तत्व हैं - उ० - OF<sup>2</sup>E (अलिकत, धारा प्रवाह, लचीलापन, विस्तार का कार्य . originality, frequency, flexibility, expansion .

उ०. कौशलालम्बक शिक्षण की विशेषता है - उ० - क्रियात्मक क्रियाओं की सृष्टिवलावद्धता, शारीरिक एवं भाँसेपशीय गतिविधियों का समन्वय, जटिल क्रियात्मक अनुक्रियाओं की सृष्टिवलावद्धता .

उ०. कौशलालम्बक अधिगम की अवधारणा है - उ० - स्वतन्त्रता - स्थिरीकरण - स्वाधीनस्थ (Autonomous)

उ०. अन्तःक्रिया विश्लेषण प्रविधि (Interaction Analysis) की आधारभूत मान्यता है - उ० - शिक्षण व्यवहार एक सामाजिक अन्तःक्रिया है .

उ०. फ्लैण्डर्स की दस वर्ग प्रविधि की आधारभूत मान्यताएँ हैं - उ० - कक्षा में शैक्षिक व्यवहार की प्रधानता, छात्रों पर शिक्षक व्यवहार की प्रभावशीलता, - प्रजातान्त्रिक व्यवहार में छात्रों की रुचि .

उ०. फ्लैण्डर्स ने कक्षा में समस्त शिक्षक व्यवहारों को वर्गीकृत किया है - उ० - तीन खण्डों में



दृष्ट. कक्षा में शिक्षक संबंधी अप्रत्यक्ष व्यवहार (Indirect Behaviour) की कसौटी है  
उ० - छात्रों की अनुभूति को स्वीकार करना, प्रशंसा एवं प्रोत्साहित करना,  
छात्रों के विचारों को स्वीकार करना.

कक्षा में शिक्षक संबंधी अप्रत्यक्ष व्यवहार की कसौटी नहीं है -

उ० - छात्रों को दण्ड प्रदान करना.

दृष्ट. कक्षा में शिक्षक के प्रत्यक्ष व्यवहार संबंधी फ्लैण्डर्स ने ज्ञानदण्ड निर्धारित  
किए हैं - उ० - व्याख्यान देना, निर्देशन देना, आलोचना करना.

दृष्ट. अन्तःक्रिया विश्लेषण पणाली की सीमाएं हैं - उ० - केवल शब्दिक सम्प्रेषण  
का निरीक्षण किया जा सकता है, कक्षा शिक्षण का केवल दस वॉर्डों में  
विभाजन अनुपयुक्त है, शिक्षक एवं छात्र क्रियाओं का पृथक् पृथक्  
अंकन करना.

दृष्ट. शिक्षण कौशल है एक - उ० - शिक्षण क्रियाओं एवं व्यवहारों का सौगोप्यता  
स्वरूप, कक्षा अन्तः प्रक्रिया की परिस्थिति, अधिगम सुगम्यता की  
स्थिति.

दृष्ट. एलन एवं रियान (Allen and Ryan) ने शिक्षण कौशलों की श्रेणियां  
बताई हैं - उ० १४.

दृष्ट. उद्दीपन गिन्ना (Stimulus Variation) का तात्पर्य है - उ० - शिक्षक द्वारा  
अपने व्यवहार में जानबूझकर परिवर्तन करना.

दृष्ट. विन्यास प्रेरणा का संबंध है - उ० - छात्रों के ध्यान आकर्षण से,

दृष्ट. पुनर्बलन कौशल में शिक्षक कक्षा है - उ० - छात्रों की प्रशंसा.

दृष्ट. शिक्षक को नवीन पाठ प्रारम्भ करना चाहिए - उ० - कहानी सुनाकर,  
कविता सुनाकर, चित्र दिखाकर - इन तीनों में से किसी भी एक या  
अधिक विधि के द्वारा.



१. शिक्षण विधि से तात्पर्य है - उ० - बाल जगत के ज्ञान का बालक की कृति में प्रतिबिम्ब प्रतिस्थापन.

२. एक शिक्षण विधि सम्पन्न होती है - उ० - अनेक तकनीकियों से.

३. शिक्षण विधि है एक उ० - एककाला एवं विस्तार दोनों की.

४. शिक्षक जन्मजात होते हैं, बनाये नहीं जा सकते हैं,  
इस तथ्य से संभावना है कि - उ० - शिक्षण विधि जन्मजात होती है

५. शिक्षण विधि के बिना पढ़ाना तो संभव है, किन्तु इसमें हानि है -  
उ० - उद्देश्य की प्राप्ति न होना, अविकसित अधिगम परिस्थिति,  
अव्यवस्थित क्रम ।

६. बाल जगत के ज्ञान एवं ज्ञात्र के मस्तिष्क के मध्य जब प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित कर दिया जाता है तो इसे कहते हैं - उ० - शिक्षण विधि.

७. कोन सी विधि को एक अनिवार्य बुराई माना जाता है - उ० - व्याख्यान विधि.

८. बालकेन्द्रित शिक्षण विधि का गुण है - उ० - बालकों को उनकी आवश्यकता एवं रुचि के अनुकूल पढ़ाना.

९. बालकेन्द्रित शिक्षण विधि के अन्य गुण हैं - उ० - वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास करना, प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना करना, स्वयं स्वशासन की स्थापना करना.

बाल केन्द्रित शिक्षण विधि का गुण नहीं है - उ० - औपचारिक एवं कठोर वातावरण तैयार करना.

१०. शिक्षक-केन्द्रित शिक्षण विधियों का अन्तिम परिणाम है - उ० - तथ्यों को थाद करना, धारम्यरिक संस्थाओं में आस्था व्यक्त करना, शिक्षा के प्रभुत्व पर आश्रित रहना.



११. शिक्षक-केन्द्रित शिक्षण विधि के प्रक्रियात्मक विभाग में सम्मिलित हैं -  
उ० - पुनरावृत्ति, प्रश्रुत्व, स्मृति.

शिक्षक-केन्द्रित शिक्षण विधि के प्रक्रियात्मक विभाग में सम्मिलित नहीं हैं -  
उ० - खोज प्रवृत्ति.

१२. शिक्षक-केन्द्रित विधियों के ~~केन्द्र~~ में गुण उपस्थित रहते हैं - उ० -  
औपचारिकता का, शिक्षा की सम्प्रभुता का, नवीन तकनीकियों की  
अवहेलना का.

१३. एक शिक्षण विधि की विभा हैं - उ० - मूल तथ्यात्मक विभा, प्रक्रियात्मक  
विभा, यथार्थवादी विभा.

१४. बाल-केन्द्रित शिक्षण विधियों के उद्देश्य हैं - उ० - क्षत्रों में गुणों  
से सीखने की योग्यताओं का विकास करना, क्षत्रों में स्वतंत्र  
बौद्धिकों का विकास करना, क्षत्रों में आत्मनिर्भरता का विकास करना.

१५. दशत-केन्द्रित शिक्षण विधियों में प्राथमिक शिक्षक की व्यूषिकाई रहती है -  
उ० - समस्या उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों का निर्माण करना,  
क्षत्रों के <sup>लिए</sup> सिद्धान्तित सामग्री एवं संसाधनों को जुटाना, क्षत्रों की  
उपकल्पना निर्माण में मदद करना.

१६. दशत-केन्द्रित विधि के अन्तिम अन्तिम उत्पाद हैं - उ० - बालकों में उच्चस्त-  
रीय प्रश्न पूछने की प्रक्रिया का विकास करना, बालकों को पूर्ण  
स्वतंत्रता प्रदान करना, बालकों की क्षमताओं में वृद्धि करना.

१७. शिक्षक नवीन प्रयोग एवं तकनीकियों को अपनाने के लिए प्रयासरत  
रहता है - उ० - दशत-केन्द्रित विधियों में.

१८. शिक्षक प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयासरत रहता है  
- बाल-केन्द्रित शिक्षण विधियों में.



१६. व्याख्यान विधि का प्रमुख गुण है - उ०-अतिव्ययता

१७. शिक्षक सिद्धान्त के अनुरूप नहीं है - उ०- व्याख्यान विधि.

१८. जब शिक्षक अति सक्रिय हो तथा छात्रगण निष्क्रिय हों और केवल श्रोता मात्र ही हों-तो ऐसी पद्धति को कहते हैं- व्याख्यान पद्धति.

१९. व्याख्यान विधि पर दोष आरोपित किए जाते हैं- उ०- वैज्ञानिक अन्वेषण का अभाव, करके सीखने के सिद्धान्त का प्रतिकार, एकसामागिक शिक्षण किया.

२०. किस विधि के अन्तर्गत शिक्षक अपने छात्रों के ध्यानपूर्वक सुनने के प्रति अपेक्षाकृत कम सावक रहते हैं - उ०- व्याख्यान विधि में

२१. व्याख्यान विधि अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी जबकि उसका उपयोग इन परिस्थितियों में किया जाए :- उ०- जब शिक्षक किसी नवीन एवं जटिल पाठ को प्रारम्भ करने जा रहे हों, जब शिक्षक किसी सिद्धान्तिक पक्ष की व्याख्या करना चाहते हों, जब शिक्षक किसी प्रदर्शन की व्याख्या करने में रुचि रखते हों.

२२. व्याख्यान विधि के लिए आवश्यकता होती है - उ०- अभ्यास की.

२३. अपने नीचे व्याख्यान को भरस बनाने के लिए आप क्या उपाय करेंगे?

उ०- आप बीच-बीच में कुछ छात्रों का पुनः सम्मिश्रित करेंगे, आप छात्रों को प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता प्रदान करेंगे, जहाँ तक संभव होगा। व्याख्यान की अधिकाधिक सहायता लेंगे.

२४. पाठ्य- व्याख्यान विधि को उन्नत माना जाता है - उ०- वी० ए० सर की कक्षाओं के छात्रों के लिए.



११. व्याख्यान होना चाहिए - ३० - सेक्क.रोचक, सुगठित एवं व्यवस्थित, महत्त्व स्तर एवं आवश्यक उतार-चढ़ाव के साथ.

१२. आप अपने व्याख्यान को किस स्थिति में प्रभावी कहेंगे?  
३० - जब आप बोलें - वक्ता अनुसरण करें.

१३. आधुनिक कक्षाओं में शिक्षक का अधिनायकवाद कहीं तक उपयुक्त है? - ३० - काफी हद तक.

१४. भाषण विधि के गुण हैं - निव्ययी विधि, तीव्र गति, समय की वचन, भाषण विधि का एक गुण नहीं है - स्वतंत्र चिन्तन.

१५. भाषण विधि के दोष हैं - ३० - स्मृति पर अत्यधिक बल, स्वतंत्र चिन्तन का अभाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में बाधक.

१६. जब एक व्याख्यान को प्रायोगिक प्रदर्शन के साथ जोड़ दिया जाता है तो इससे लाभ प्राप्त होता है - ३० - यह मनोवैज्ञानिक हो जाता है.

१७. व्याख्यान एवं प्रयोग-प्रदर्शन दोनों सामुहिक रूप से किस शिक्षण सूत्र का पालन करते हैं - ३० - मूर्त अवस्था से अमूर्त अवस्था की ओर.

१८. यदि व्याख्यान विधि की रकारिता को समाप्त करना हो तो आप कौन सा उपाय करेंगे? ३० - आप इसे प्रयोग-प्रदर्शन से जोड़ देंगे.

१९. एक उत्तम व्याख्यान-प्रदर्शन विधि की पहचान है - ३० - इसका कक्षा में सफलतापूर्वक परीक्षण, इसका पूर्व परीक्षण, इसकी सुविधासंगत व्यवस्था.



३७. व्याख्यान प्रदर्शन विधि के संदर्भ में कहा जाता है कि वसन्त वह जो सिर चढ़ कर बोले (Teacher is that which works) इस उक्ति से यहाँ तात्पर्य है - डॉ. शिक्षक अपने शिक्षण संबंधी सामग्री (प्रयोग) प्रदर्शित करने के लिए विवश है, क्योंकि वसन्त सच देखकर ही यकीन करता है।

३८. यदि आप एक विज्ञान शिक्षक हैं तो आप व्याख्यान प्रदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए अपने प्रयोग को किस प्रकार उत्तम बनाएँगे -  
डॉ. प्रयोग की उचित व्यवस्था करके जैसे - छात्रों का उचित अनुशासन प्रयोग हेतु ऊँची बड़ी मेज की उपलब्धता आदि।

३९. प्रयोग प्रदर्शन से पूर्व रिहर्सल किया जाना आवश्यक है क्योंकि इसके  
डॉ. शिक्षक में आत्मविश्वास जागृत होता है, शिक्षक प्रयोग में आने वाली अप्रत्यक्ष कठिनाइयों से परिचित हो जाता है, शिक्षक प्रयोग को भली-भाँति प्रदर्शित कर पाता है।

४०. व्याख्यान-प्रदर्शन विधि को छात्र केन्द्रित बनाने के लिए शिक्षक को उपाय करने चाहिए - डॉ. छात्रों के उपकरण लगाने तथा व्यवस्थित आदि करने में सक्रिय सहयोग, छात्रों को प्रेरणा स्वयं नोट करने की स्वतंत्रता, छात्रों की जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए प्रयोग के प्रत्येक पद की उन्नत व्यवस्था।

४१. व्याख्यान-प्रदर्शन विधि में शिक्षक को क्या नहीं करना चाहिए -  
डॉ. त्रुटिपूर्ण स्वयं अप्रयुक्त उपकरणों का प्रयोग, थकायक प्रयोग प्रारम्भ, छात्रों पर अत्यधिक दबाव।

४२. छात्रों की रुचि जागृत करने के लिए शिक्षक को क्या उपाय करना चाहिए - डॉ. प्रयोग के दौरान असुरक्षा बनाए रखना।

४३. पाठ-प्रदर्शन की तैयारी के बिन्दु हैं - डॉ. विषय-वस्तु चयन, पाठ-संकेत एवं प्रश्न चयन, आवश्यक उपकरणों को शक्तिशाली करना।



४४. प्रयोग-प्रदर्शन में पाठ (प्रकरण) की प्रस्तुति की जानी चाहिए -  
उ०-समस्यात्मक ढंग से ,

४५. प्रयोग-प्रदर्शन के साथ-साथ विषय सामग्री के प्रस्तुतीकरण में एक शिक्षक को क्या <sup>सामर्थ्य</sup> <sup>सामर्थ्या</sup> <sup>सामर्थ्या</sup> चाहिए :- उ०-दृष्टान्तों का पर्याप्त प्रयोग, उचित प्रश्नों की प्रस्तुति, स्पष्ट उच्चारण एवं भाषा प्रवाह ,

४६. यदि शिक्षक प्रयोग-प्रदर्शन फूहड़ ढंग से करेगा तो इससे छात्रों के व्यवहार में नया परिवर्तन होने की सम्भावना होगी - उ०- छात्र भी और अधिक फूहड़ ढंग से कार्य करेंगे, छात्र को वैज्ञानिक विधि का संस्करण नहीं होगा, छात्र वैज्ञानिक अभिवृत्ति से वंचित रह जायेंगे .

४७. प्रयोग-प्रदर्शन के दौरान शिक्षक को कोन सी बात बार-बार नहीं दोहरानी चाहिए ? - उ०- ठीक है .... ठीक है - ऐसा ही होना चाहिए था , ब्रह्मास ! ठीक है , बहुत अच्छा - यही तो देखना चाहते थे ,

४८. प्रायः शिक्षक द्वारा व्याख्यान प्रयोग-प्रदर्शन के समय सम्भावित भूल हो सकती है - उ०- शिक्षक को प्रकरण के उद्देश्य तथा किये जाने वाले प्रयोग के मध्य तारतम्य बैठाने की भूल, शिक्षक द्वारा छात्रों में अपेक्षित उत्सुकता जगाने करने की भूल, शिक्षक द्वारा निरन्तर बोलते रहने की भूल ,

४९. प्रयोग-प्रदर्शन विधि को एक नये वैज्ञानिक विधि माना जाता है क्यों कि -  
उ०- इसका जन्यदाता एक नये वैज्ञानिक है .

५०. प्रयोग-प्रदर्शन विधि के गुण हैं - उ०- यह मितव्ययी है , यह क्रियात्मक विधि है , इसमें खतरनाक प्रयोगों को शिक्षक स्वयं करते हैं .

५१. व्याख्यान प्रयोग प्रदर्शन विधि के दोष हैं - उ०- यह छात्र केन्द्रित नहीं है ,



यह वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में बाधक है, यह प्रत्यक्ष अनुभवों की आवहेलना करती है।

प्रश्न. इसे द्युरिस्टिक विधि के जनक माना है - डॉ. प्रो. रच. ई. आर्थरस्ट्रॉम

प्रश्न. आर्थरस्ट्रॉम का मौलिक विचार है - डॉ. मौलिक अनुसंधान और खोज ही विज्ञान का वास्तविक उद्देश्य है।

प्रश्न. द्युरिस्टिक की व्युत्पत्ति हुई है - डॉ. ग्रीक शब्द 'द्युरिस्को' से।

प्रश्न. शिक्षण की अनुसंधानात्मक विधियाँ ऐसी हैं जिनमें जहाँ तक संभव हो सके विद्यार्थियों को अनुसंधान कर्ता के रूप में बनना पड़ता है, यह कथन प्रस्तुत किया है - डॉ. आर्थरस्ट्रॉम ने।

प्रश्न. रच. ई. आर्थरस्ट्रॉम मूलतः कार्य करते थे - डॉ. रसायनशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में।

प्रश्न. द्युरिस्को (method) का शाब्दिक अर्थ है - डॉ. प्राप्त करना (to find out)

प्रश्न. 'द्युरिस्टिक' का एक संश्लेषण ग्रीक शब्द 'द्युरिस्केन' (Dyuriskein) बताया गया है जिसका तात्पर्य है - डॉ. विज्ञान की खोज करना।

(to discover science)

प्रश्न. निम्नलिखित गुण किस विधि से अभ्यासित किए जा सकते हैं -  
क. ऐसी विधि जो रुढ़वादिता के विरुद्ध है, ऐसी विधि जिसमें प्रेरण प्रक्रियाँ सर्वोत्तम हैं, ऐसी विधि जो प्रेक्षणीय है, ऐसी विधि जिसमें 'स्वतंत्र क्रिया' पर जोर दिया जाता है।

डॉ. - द्युरिस्टिक विधि।

डॉ. एक शिक्षक केन्द्रित विधि को छात्र-केन्द्रित विधि में परिवर्तित किया जा सकता है - डॉ. आंशिक रूप से यदि शिक्षक ऐसा प्रयास को



३१. धूर्तिविक्रम को वेस्टावे (Westaway) ने माना है - उन्- एक विशेष विधिक प्रशिक्षण के रूप में।

३२. कौन सा मनो वैज्ञानिक सिद्धान्त धूर्तिविक्रम विधि में समाहित है ?  
उन्- स्वतंत्रता का सिद्धान्त, अनुभवों का सिद्धान्त, क्रिया का सिद्धान्त।

३३. धूर्तिविक्रम को केन्द्रिय सिद्धान्त कहा जा सकता है - ~~किस~~  
उन्- स्वयं करके सीखना।

३४. धूर्तिविक्रम विधि प्रस्तावित करती है कि - ~~यदि~~ यदि बालक को वैज्ञानिक खोज विधि में निपुण कर दिया जाय तो वह ज्ञान की खोज में स्वयं ही कर लेगा।

३५. धूर्तिविक्रम विधि में एक शिक्षक की क्या भूमिका रहती है ?  
उन्- शिक्षक एक मित्र की तरह, शिक्षक एक स्टेज निर्माता की तरह, शिक्षक एक आगमनात्मक ढंग से बालक में निहित ज्ञान को परिलक्षित कराने वाले की तरह।

३६. धूर्तिविक्रम विधि निर्माणवादी (Constructivist) है सूचनावादी (Informationist) नहीं। इसका तात्पर्य यह है कि उन्- धूर्तिविक्रम विधि निरीक्षक निरीक्षक शक्तियों का विकास करती है, स्वयं चिन्तन को उत्साहित करती है, प्रायोगिक प्रमाणों को ज्ञान का आधार ~~मानती है~~ मानती है।

३७. धूर्तिविक्रम विधि अपतान के सन्दर्भ में आप कौन सी बात ध्यान में रखेंगे ?  
उन्- ऐसी समस्याओं का चयन करना जिन्हें वैज्ञानिक विधियों से हल किया जा सकता है, ऐसी समस्याओं के बारे में विस्तृत ज्ञान कार्य शक्ति करना, प्राप्त सामग्री की व्याख्या करना।

३८. धूर्तिविक्रम विधि का गुण है - उन्- करके सीखना, वैज्ञानिक विधि का प्रशिक्षण, आत्मनिर्भरता।



इस प्रकार ध्वनि विधि का एक सबसे बड़ा दोष है कि - इस तरह बालक को एक वैज्ञानिक ज्ञान तो है .

७०. ध्वनि विधि का आरंभिक कक्षाओं में प्रयोग है - इस व्यावहारिक .

७१. विज्ञान-प्रयोगशाला के लिए है, अथवा प्रयोगशाला विज्ञान के लिए है ? में कौनसा कथन उपयुक्त है ? - इस - द्वितीय .

७२. ध्वनि विधि को लागू करने के लिए उत्तम वातावरण होगा - इस - ऐसे विद्यालय में जहाँ शिक्षक-छात्र दोनों ही प्रतिभाशाली हों .

७३. ध्वनि विधि का सर्वोत्तम प्रयोग हो सकता है - इस - विज्ञान क्लब की गतिविधियों में .

७४. ध्वनि विधि से शिक्षण में छात्रों को गृहकार्य से मुक्ति मिल जाती है क्योंकि - इस विधि में सशक्त क्रियाकलाप प्रयोगशाला में ही सम्पन्न हो जाता है .

७५. ध्वनि विधि अनुपयुक्त है - इस - पारम्परिक पाठ्यक्रम के लिए, पारम्परिक विद्यालयों के लिए, पारम्परिक कार्य-प्रणाली के लिए .

७६. यदि छात्रों को परित्याग स्वतंत्र अध्ययन का प्रोत्साहन प्रदान करना चाहते हैं तो कौन सी शिक्षण पद्धति अधिक उपयुक्त रहेगी ? - इस - ध्वनि विधि ,

७७. छात्रों को मुक्त रूप से सीखने की योग्यताएं जन्म देती हैं उनमें - इस - आत्म विकास को, सहजता को, आत्म प्रकाशन को,



२५. अधुनिक विधि में शिक्षक-छात्र संबंध होता है एक - डू -  
(गार्गी दत्तक, कार्य सहभागी, मित्र) - इन तीनों का सम्मिलित स्वरूप,  
Guided Helper, Friend

२६. 'समस्या' है - डू - एक अनुसरित प्रश्न, एक मानसिक बोझ,  
एक निरन्तर चलने वाला तनाव.

२७. समस्या-समाधान विधि का मुख्यभूत आधार मिलता-जुलता है -  
डू - वैज्ञानिक विधि से.

२८. समस्या-समाधान विधि एक ऐसी प्रक्रिया है जो छात्रों के  
मन में समस्या उत्पन्न करती है जिससे छात्र उसका  
उत्तर उत्साहित ढंग से चुम्बित संगत हल ढूँढते हैं, यह परिभा-  
षा दी है - डू - रिस्क ने.

२९. समस्या-समाधान व्यवहार प्रायः उत्पन्न होता है - डू - इसाधा-  
रणा कठिनार्थ युक्त परिस्थितियों के, परिस्थितियों में.

३०. समस्या-समाधान है - डू - एक नवो वैज्ञानिक-सम्पत्त्य, एक शिक्षण विधि का  
प्रकार, एक उच्च चिन्तन की योग्यता.

३१. समस्या-समाधान विधि के द्वारा शिक्षण में आप किस बात पर ध्यान देंगे -  
डू - समस्या शिक्षा परक हो, समस्या छात्रों के लिए उपयोगी हो,  
समस्या छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो.

३२. समस्या-समाधान शिक्षण विधि के प्रमुख पद हैं - डू - समस्या को  
परिभाषित करना, उपयुक्त पदों का संकलन करना, घटनाओं  
का प्रेषण करना तथा निष्कर्ष प्राप्त करना.

३३. समस्या-समाधान विधि का गुण है - डू - स्वयं करके सीखने,  
वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, आत्मनिर्भरता.



ब. 3. समझना-समाधान विधि का आवश्यक है - 30 - गंदगी का होना, प्रायोगिक कार्य पर बल, पाठ्य-पुस्तकों की अनुपलब्धता.

ब. 4. समझना-समाधान विधि को एक सामान्य विद्यालय में लागू नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह - 30 - पाठ्यक्रम के अनुरूप नहीं होती, समझ अधिक लेती है, केवल प्रयोगात्मक दृष्टि से सीखने पर बल देती है.

ब. 5. प्रथम समझना-समाधान के संदर्भ में एक प्रचलित अवधारणा है कि यह - 30 - केवल होनहार शिक्षकों के द्वारा प्रियान्वित की जा सकती है एवं केवल होनहार छात्रों के लिए ही उपयुक्त है.

ब. 6. असाइनमेंट विधि एक संश्लिष्ट स्वरूप है - 30 - व्याख्यान-प्रदर्शन विधि तथा व्यक्तिगत प्रयोगशाला कार्य की.

ब. 7. असाइनमेंट होते हैं - 30 - दो प्रकार के,

ब. 8. 'ग्रुप असाइनमेंट' (Group Assignment) से तात्पर्य है - 30 - शिक्षक द्वारा विश्वास गर्य कार्य को घर से करके लाना,

ब. 9. स्कूल असाइनमेंट का संबंध होता है - 30 - छात्र द्वारा स्कूल में किए जाने वाले प्रयोगों की निष्पादन क्षमता से.

ब. 10. असाइनमेंट विधि में छात्रों के सही मूल्यांकन के लिए शिक्षक क्या उपाय अपनाता है? 30 - छात्रों का प्रोग्रेस रिकॉर्ड तैयार करना है.

ब. 11. असाइनमेंट के उद्देश्य हैं - 30 - वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास करना, वैज्ञानिक विधि का प्रशिक्षण प्रदान करना, वैज्ञानिक तथ्यों की स्मरण करना तथा असे सिद्धान्तों की व्युत्पत्ति करना.



प्रश्न. यदि एक छात्र का 'होम असाइनमेंट' सन्तोष प्रद नहीं है तो शिक्षक को क्या करना चाहिए ? - उ० - उक्त छात्र को स्कूल असाइनमेंट से वंचित करना.

प्र०. उत्तम असाइनमेंट असाइनमेंट की कसौटियाँ हैं - उ० - असाइनमेंट बालक को दिख गये प्रकार से संबंधित हो, असाइनमेंट संक्षिप्त स्पष्ट, उद्देश्यपूर्ण हो, असाइनमेंट परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तित हो सकता हो.

प्रश्न. एक असाइनमेंट की योजना निर्माण को चरण हैं - उ० - असाइनमेंट असाइनमेंट के लिए पूर्व तैयारी, यूनिट के शिक्षण के समय ध्यान में आनेवाली समस्याओं का चयन, उक्त यूनिट से मूल्योक्त करना.

एक असाइनमेंट की योजना निर्माण का चरण नहीं है - उ० - पूर्व चरणों के द्वारा पूरे किए गए असाइनमेंट्स को वितरित करना.

प्रश्न. असाइनमेंट तैयार करते समय शिक्षक को कौनसी योजना बनानी चाहिए ? - उ० - समस्त पाठ्यक्रम को सत्र के प्रारम्भ में ही असाइनमेंट खण्डों में तोड़ देना चाहिए. असाइनमेंट के लिए उद्देश्यों का चयन करना चाहिए, असाइनमेंट वितरण में छात्र की आयु, बुद्धि, कक्षा, स्तर आदि का ध्यान रखना चाहिए.

प्र०. असाइनमेंट देते समय प्रायः शिक्षक संदर्भ पुस्तकों की सूची भी बताते हैं. इनमें से आपके अनुसार एक उत्तम शिक्षक होगा उ० जो असाइनमेंट के साथ-साथ संदर्भ ग्रन्थ सूची की अधिकांश पुस्तकों से व्यक्तिगत परिचित है.

प्र०. असाइनमेंट विधि का केन्द्रीय गुण है - उ० - छात्र प्रयोगशाला में स्वयं करके सीखते हैं.



१०२. असाइनमेंट विधि का एक प्रमुख दोष है - उ० - पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता, उपयुक्त पुस्तकालय की आवश्यकता, उपयुक्त प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है.

१०३. असाइनमेंट विधि अपेक्षाकृत उपयुक्त है - उ० - इंडिस्कूल स्वयं इंटरमीडिएट के छात्रों के लिए.

१०४. प्रोजेक्ट विधि के मुख्य प्रणेता हैं - उ० - जॉन ड्यूवी, डब्ल्यू स्विंजिलपैट्रिक.

१०५. प्रोजेक्ट विधि का आधारीय दर्शन है - उ० - उपयोगवाद.

१०६. प्रोजेक्ट विधि में क्या कार्य नहीं किया जाता है? - उ० - बालक के अनु-बालक के अनुसार पाठ्यक्रम पर विचार, बालक के अनुसार पाठ्यसामग्री पर विचार, बालक के अनुरूप तकनीकियों पर विचार.

१०७. ~~प्रोजेक्ट~~ प्रोजेक्ट एक सहाय्यामूलक कार्य है जो अपनी स्वाभाविक परिस्थितियों के अन्तर्गत पूर्णता को प्राप्त करता है यह कथन है - उ० - जे० ए० स्टीवेन्सन का, जे० ए० स्टीवेन्सन का.

१०८. प्रोजेक्ट विधि में बल दिया जाता है - उ० - हस्तकार्य द्वारा सीखने पर (~~learning by doing~~), जीवन कार्य द्वारा सीखने पर (~~learning by living~~), साहचर्य एवं सहयोग द्वारा सीखने पर.

१०९. 'जीवन कार्य द्वारा सीखना' (~~learning by living~~ ~~by doing~~) से तात्पर्य है - बालक स्वयं अपने जीवन के द्वारा सीखता है क्योंकि जीवन छोटे-छोटे प्रोजेक्टों का संकलन है.

११०. प्रोजेक्ट विधि में अनेक विषयों के ज्ञान पर निर्भर रहना पड़ता है इस विधि के उक्त गुण को कहते हैं - उ० - समवायता (~~interdependence~~) का गुण.

१११. क्रमबद्ध रूप से प्रोजेक्ट विधि के चरण हैं - उ० - परिस्थिति का



निर्माण करना, योजना बनाना, क्रियान्वित करना, मूल्यांकन करना, रिकार्ड तैयार करना.

११३. प्रोजेक्ट विधि में शिक्षक की भूमिका होती है - शिक्षा, जार्गदर्शक इस स्व कार्य सहयोगी प्रेसी.

११४. प्रोजेक्ट विधि का सर्वश्रेष्ठ गुण है - इसे - इसके द्वारा वैज्ञानिक विधि का प्रशिक्षण प्रदान करना.

११५. एक उत्तम प्रोजेक्ट की विशेषता है - इसे - इच्छापूर्णा, बालकों की सक्रीयता के अनुकूल क्रियाएँ, बालकों को कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता.

११६. ~~प्रोजेक्ट~~ प्रोजेक्ट का चयन करना चाहिए - इसे - शिक्षकों एवं छात्रों दोनों के द्वारा.

११७. प्रोजेक्ट होना चाहिए - इसे - न तो अधिक कठिन और न अधिक सरल.

११८. प्रोजेक्ट विधि द्वारा अधिगम के सिद्ध किन सिद्धान्तों की पुष्टि प्राप्ति (पूर्ति) होती है - इसे - तत्परता का सिद्धान्त, अभ्यास का सिद्धान्त, प्रभाव का सिद्धान्त.

११९. प्रोजेक्ट विधि की कमियाँ हैं - इसे - समय की बर्बादी, शिक्षक के लिए अतिरिक्त कार्यभार, शिक्षक से अधिकाधिक प्रत्याशा.

१२०. प्रोजेक्ट शिक्षण विधि का प्रचलित स्वरूप है - इसे - छात्रों से केवल मॉडल तैयार करना, समस्त कार्य में बालक को व्यस्त रखना, छात्रों को एक-दो विषयों में प्रोजेक्ट बाँटकर पूरा करके लाने के लिए कहना.



920. चर्चाविधि (Discussion Method) का उद्देश्य है - छात्रों में स्वयं पढ़ने-समझने की भावना विकसित करना।

921. चर्चाविधि को क्रियान्वित किया जाता है - 30 - सर्वप्रथम शिक्षक प्रकरण की दृष्टिकोण एवं सामान्य आख्या प्रस्तुत करता है, कुछ छात्रों को समूह में अध्ययन एवं चर्चा का समय दिया जाता है, शिक्षकों के द्वारा छात्रों को पुस्तकालय में रखे संदर्भ ग्रन्थों की सूची प्रदान की जाती है, इसके बाद शिक्षक चर्चा प्रारम्भ करते हैं।

922. चर्चाविधि के लिए प्रकरण चयन में एक शिक्षक को सावधानी बरतनी चाहिए - 30 - प्रकरण न तो अधिक सरल हो और न ही अधिक कठिन, छात्रों को पाठ्य-पुस्तकों से परे सभी संदर्भों को पढ़ने की सलाह देनी चाहिए, चर्चा को वाद-विवाद में न बदला जाए।

923. आगमनविधि में शिक्षण गति करता है - विशेष उदाहरण से सामान्यीकरण की ओर।

924. आगमनविधि के लाभ हैं - 30 - वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास, तर्कशक्ति का विकास, अध्ययन आदतों का विकास।

925. जब छात्रों के समक्ष नियम, सिद्धान्त एवं सामान्यीकरण प्रस्तुत किए जाते हैं और छात्र उन्हें किसी विशेष उदाहरण से सत्यापित करते हैं तो इसे कहते हैं - 30 - निगमनात्मक विधि।

926. निगमनात्मक विधि की सबसे बड़ी कमी है कि यह - 30 - एक अमनोवैज्ञानिक पद्धति है।

927. निगमनात्मक विधि को तर्क संगत ढंग से प्रयोग किया जा सकता है - 30 - छोटे छात्रों (निम्नस्तरीय कक्षाओं) के साथ जो स्वयं वैज्ञानिक तथ्यों को न तो खोज सकते हैं और न ही तर्क दे सकते हैं।



निगमनात्मक विधि में जिस शिक्षण सूत्र का प्रयोग किया जाता है, वह है - 30 - सामान्य से विशेष की ओर, अमूर्त से मूर्त की ओर.

926. आगमनात्मक एवं निगमनात्मक शिक्षण विधियाँ हैं - 30 - एक दूसरे की पूरक.

927. आगमनात्मक - निगमनात्मक विधि का प्रचलित रूप में प्रयोग किया जाता है - 30 - गणित, विज्ञान एवं व्याकरण (व्याकरण) शिक्षण में.

928. शिक्षण विधि के चयन में क्या सावधानी बरतनी चाहिए - 30 - शिक्षण विधि विषय-वस्तु के शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली हो शिक्षण विधि छात्रों का बाह्य जगत के पर्यावरण से अन्तःक्रिया कराने वाली हो, शिक्षण विधि छात्रों को प्रयोग, तर्क, चिन्तन एवं मनन के पर्याप्त अवसर प्रदान करती हो.

929. एक शिक्षण विधि में क्या गुण होने चाहिए - 30 - छात्रों में सीखने की रुचि उत्पन्न उत्साह उत्पन्न करना, छात्रों को सुसंगठित एवं सुव्यवस्थित बनाना, छात्रों से सुचनाओं को संग्रहित करना, शिक्षण विधि गत्यात्मक हो.

930. शिक्षक को अपने शिक्षण काल में महारत हासिल करनी चाहिए - 30 - सभी शिक्षण विधियों में समान रूप से.

931. भारतीय परिवेश में बाल-केन्द्रित अजिमेव शिक्षण विधियों की स्थिति है - 30 - दयनीय - क्योंकि उन्हें लागू करने की संभावनाएँ बहुत कम हैं, शैलीय - क्योंकि उनके अनुरूप पाठ्यक्रम एवं प्रयोगशालाएँ तैयार नहीं की जाती हैं, विवादास्पद - क्योंकि जो बातें ही कार्य बालकों से कराये जाते हैं,

932. उन्हें ही पार्श्व, असाक्षर आदि कह सकते,



१. मूलभूत शब्द से तात्पर्य है - ~~उ~~ व्यक्ति / बालक की उपलब्ध एवं योग्यताओं का मूल्य निर्णय,

२. आपन एवं ~~अन~~ मूल्य

२. आपन एवं मूलभूत शब्द से तात्पर्य है - ~~उ~~ आपन किसी शक्ति गुण का आभात्मक वर्णन है, जबकि मूलभूत शब्द का आभात्मक + गुणात्मक वर्णन है, मूलभूत व्यापक है और इसमें आपन निहित रहता है, आपन की शुद्धता एवं सार्थकता इसके मूलभूत को प्रभावित करती है.

३. मूलभूत किसी शक्तिगुण (गुण) के संदर्भ में बनाया है - ~~उ~~ - उक्त गुण को क्या मूल्य दिया जाए.

४. मूलभूत की उपरिष्ठित किंश शक्ति <sup>विश्व</sup> प्रक्रिया के अंग में विद्यमान रहती है - ~~उ~~ - उद्देश्यों के निर्माण में, पाठ्यक्रम योजना में, शिक्षण - अभिगम प्रक्रिया में.

५. मूलभूत की परिभाषा है - ~~उ~~ - मूलभूत, व्यक्ति एवं समाज की दृष्टि से जो उत्तम एवं वांछनीय है - इस पर विचार करता है, मूलभूत किसी वस्तु या प्रक्रिया का मूल्य निर्धारित करता है, ऐतिहासिक उद्देश्यों की किंश सीमा तक प्राप्ति हुई है - यह निर्णय लेना ही मूलभूत है।

६. एन. सी. ई. आर. टी. (1960) के अनुसार मूलभूत से आशय है - ~~उ~~ - पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किंश सीमा तक हो रही - इसकी जानकारी लेना, कक्षा में दिये जाने वाले अभिगम - अनुभव कितने प्रभावोत्पादक रहे हैं - इस तथ्य पर विचार करना, शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति कितने उत्तम ढंग से हुई है - इस तथ्य को जात करना.



८. मोठारी कभीशन के अनुसार - मूल्यांकन है - ३० - सतत प्रक्रिया ,

९. मूल्यांकन के बुनियादी सिद्धान्त है - ३० - मूल्यांकन प्रक्रिया में निर्णय एवं मूल्य अति आवश्यक है, मूल्यांकन में शिक्षकों के निराकरण के पर्याप्त उपाय करने चाहिए, मूल्यांकन प्रक्रिया को शिक्षण प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों पर सुचारु लाना चाहिए.

१०. मूल्यांकन एक लक्ष्य नहीं है - साधन है, इसका तात्पर्य है - ३० - मूल्यांकन लक्ष्यप्राप्ति का साधन है, मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम के मूल्यों के निर्धारण का साधन है, मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ साधन है.

११. मूल्यांकन का उद्देश्य है - ३० - यह पाठ्यवस्तु के परिष्कार में उपयोगी है, यह विभिन्न शिक्षण विधियों को प्रभावी बनाता है, यह वैज्ञानिक ढंग से शिक्षण-प्रक्रिया के विभिन्न बिन्दुओं को एकीकृत करता है.

१२. मूल्यांकन अध्ययन करना है - ३० - छात्रों एवं शिक्षकों का.

१३. मूल्यांकन लाभप्रद है - शिक्षकों, प्रधानाचार्य तथा विद्यालय प्रबंधक के लिए.

१४. डॉ. पटेल ने शैक्षिक प्रक्रिया के सूत्र बताए हैं - शैक्षिक उद्देश्य, विषयवस्तु, अधिगम क्रिया एवं मूल्यांकन पद्धति.

१५. शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में सावधानी बरतनी चाहिए - ३० - इसमें विषयवस्तु पर अलीशानि विचार किया जाए, इसमें अधिगम क्रियाओं का ठीक ढंग से विचार किया जाए, इसमें बालकों के लान, समझ, कौशल्यों में परिवर्तन हेतु पर्याप्त प्रयास किए जाएं.



क. अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome) का तात्पर्य है - 30 - बालक के व्यवहार में होनेवाला परिवर्तन.

अधिगम अनुभवों को प्रदान करते समय शिक्षक को ध्यान रखना.

ग. चार बिंदु - 30 - बालकों की आयु एवं मानसिक स्तर का.

उपयुक्त अधिगम अनुभवों का मानदण्ड है - 30 - क्या अधिगम अनुभव

शिक्षक उद्देश्यों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है, क्या अधिगम अनुभव बाल के लिए सार्थक एवं सतोषप्रद है, क्या ये अनुभव बालक की परिपक्वता के अनुकूल हैं?

अधिगम अनुभवों का आयोजन किया जाता है - 30 - बालकों से व्यवहार में

प्रकाशनात्मक परिवर्तन के लिए बालकों के व्यक्तित्व का विकास करने के मूल्यों के प्रमुख उपकरण है - 30 - परीक्षण प्रक्रियाएँ (Testing Procedures)

स्व-आलेख प्रक्रियाएँ (Self-reporting techniques), निरीक्षणात्मक विधियाँ (Observational methods)

प्रश्नोत्तरी में प्रयुक्त होनेवाली परीक्षण प्रक्रियाएँ हैं - 30 - मौखिक परीक्षाएँ,

लिखित परीक्षाएँ, निष्पादन परीक्षाएँ.

निरीक्षणात्मक विधियों के अन्तर्गत सम्मिलित है - 30 - वृत्तांत अभिलेख,

गैलरी सूची, निर्धारण मापनी.

निरीक्षणात्मक विधियों के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं है - 30 - साक्षात्कार.

प्रश्नोत्तरी प्रविधियों का उपयोग किया जाता है - 30 - बालकों के व्यक्तिगत एवं

सामाजिक संयोजन को सात करने के लिए, बालकों की दक्षिण इच्छाओं को सात करने के लिए, बालकों की मनोवृत्तियों को सात करने के लिए.

प्रश्नोत्तरी मानक नहीं है - 30 - पिक्चर - फ्रैक्शन परीक्षण,

प्रश्नोत्तरी मानक है - मैथिली इंक ब्लॉक टेस्ट, टी-स्टेडि,

मूल्यांकन सहायक सिद्ध होता है - 30 - विद्यालय की गतिविधियों के सुधार में, पाठ्य क्रियाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त करने में, शिक्षण के विभिन्न चरणों की जानकारी शक्ति करने में.

प्रश्नोत्तरी में लिखित परीक्षाओं का प्रारम्भ माना जाता है - 30 - सन् 1890 से.

शैक्षणिक दृष्टि से लिखित परीक्षाओं के साथ नाम जुड़ा है - 30 -

होरेक्स मानक

प्रश्नोत्तरी शब्द से आशय है - बालक के द्वारा अधिगमित विषयवस्तु की मात्रा, बालक का पाठ्यक्रम संबंधी ज्ञान का अर्थ.



३३. बालक की उपलब्धि आयु किसे कहेंगे? - ३० - बालक की आयु के अनुसार विषय विशेष में स्थिति.

५३

३४. उपलब्धि परीक्षण आपन करते हैं - ३० - विषयवस्तु संबंधी ज्ञान का.

३५. आयु उपलब्धि परीक्षण होते हैं - शक्ति परीक्षण.

३६. उपलब्धि परीक्षण एवं निदानात्मक परीक्षण में संबंध है - ३० - निदानात्मक परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण के ही छोटा है.

३७. बालक की शैक्षिक आयु (Educational Age) से तात्पर्य है - ३० - बालक द्वारा विभिन्न विषयविशेष में प्रदर्शित सामान्य उपलब्धि का औसत मूल्य.

३८. बालक की शैक्षिक लब्धि (Educational Quotient) - ३० - शैक्षिक आयु/वास्तविक आयु  $\times 100$

३९. उपलब्धि लब्धि (Achievement Quotient) का सही सूत्र है - ३० - शैक्षिक आयु/ज्ञानात्मक आयु  $\times 100$ .

४०. शिक्षक उपलब्धि परीक्षणों का निर्माण करते हैं, क्योंकि - ३० - छात्रों को वर्गीकृत किया जा सके, छात्रों को निर्देशित किया जा सके, छात्रों के अधिगम को उन्नत किया जा सके.

४१. उपलब्धि परीक्षण की सीमाएँ हैं -

३० - शिक्षकों के द्वारा शिक्षण को इतना अधिक जटिल बना लेना जिससे कि छात्रों का अधिगम उन्नत किया जा सके.

इन परीक्षणों में इतने अधिक अधिगम अनुभवों को समाहित नहीं किया जाता है, इनका समस्त शैक्षिक क्षेत्रों में मानकीकरण द्वानिपत्तक है.

४२. एक उत्तम उपलब्धि परीक्षण की बातें हैं - ३० - सुनिश्चित उद्देश्यों की पूर्ति, छात्रों के प्रावधानिक स्तर के अनुकूल, व्यावहारिक रूप से उपयोगी.

४३. एक उत्तम उपलब्धि परीक्षण का सर्वोच्च गुण है - ३० - उसकी विश्वसनीयता, वैधता एवं वस्तुनिष्ठता.

४४. जो उपलब्धि परीक्षण वैयक्तिक क्षमता व क्षमता व्यवहारों के मूल्यांकन के लिए तैयार किए जाते हैं, उन्हें कहते हैं - ३० - शिक्षक निर्मित उपलब्धि परीक्षण.

४५. मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण का गुण है - ३० - वस्तुनिष्ठता, वैधता एवं विश्वसनीयता.

४६. अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण के प्रकार हैं - ३० - निबन्धात्मक परीक्षण, वस्तुनिष्ठ परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण.

अध्यापक निर्मित उपलब्धि परीक्षण का प्रकार नहीं है - ३० - वाचन परीक्षण.



१. शिक्षण में सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है - इस शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए, शिक्षण को मनोरंजनपूर्ण बनाने के लिए, शिक्षण को स्वाभाविक एवं अधिक उपयोगी बनाने के लिए.

२. शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग है - इस - शिक्षण को आकर्षित एवं संवर्धित करना, अभिगम को उन्नत करना.

शिक्षण सहायक सामग्री का एक उपयोग नहीं है - शिक्षक को स्वतंत्र करना.

३. शिक्षण में सहायक सामग्री को होना चाहिए - इस - शिक्षण उद्देश्यों के अनुकूल.

४. शिक्षक एक दृश्य-श्रव्य सामग्री है, क्योंकि - इस - वह शिक्षण को बोधगम्य बनाने के लिए हाव-भाव, मुद्राओं आदि का सहारा लेता है.

५. दृश्य-श्रव्य सामग्री को कहते हैं - इस - सहायक सामग्री.

६. दृश्य-श्रव्य सामग्री अंधना प्रभाव छोड़ती है, क्योंकि - इस - प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित है, आकर्षक एवं उत्प्रेरक प्रधान है, वैज्ञानिक सिद्धान्त का अनुपालन करती है.

७. दृश्य-श्रव्य सामग्री है - इस - जिसमें नेत्र एवं कान दोनों ही अतिरिक्त सक्रियता ग्रहण करके सहभागिता करते हैं.

८. दृश्य-श्रव्य सामग्री की उपयुक्त परिभाषाएं हैं -

इस - ऐसी सामग्री जो एक काम में लिखित या बोली जाने वाली सामग्री के अवबोध में सहायक होती है, ऐसी सामग्री जिसके माध्यम से शिक्षण-प्रक्रिया को उद्दीप्त किया जाता है, ऐसी सामग्री जो प्रश्नों की रुचि एवं अवधान को केन्द्रित करती है.

९. दृश्य-श्रव्य सामग्री कार्य करती है - इस - एक उत्प्रेरक (कारण) की भाँति.

१०. दृश्य-श्रव्य सामग्री से होता है - इस - स्थायी अभिगम, रोचकता, शिक्षण प्रभावशीलता.

११. दृश्य-श्रव्य सामग्री का शैक्षिक उद्देश्य है - इस - छात्रों में रुचि उत्पन्न करना, छात्रों में अभिगमित सामग्री की धारणा में वृद्धि करना, प्रतिभाशाली बालकों को अभिनव ज्ञान प्रदान करना.

१२. दृश्य-श्रव्य सामग्री का उद्देश्य नहीं है - इस - बालकों के लिए आकर्षक एवं चमत्कारिक चट्टानों का विरापन करना.

१३. दृश्य-श्रव्य सामग्री किसी पाठ्य सामग्री को सरल, सुबोध एवं



इस स्पष्ट बनाती है, क्योंकि ये - उ० - अमूर्त प्रत्ययों को मूर्त अवस्था में परिवर्तित कर देती है, नटिल प्रक्रियाओं को सरलीकृत रूप में प्रकट करती है, व्यक्तों के स्तर को समझने में मदद करती है उनकी निताशाओं को शांत करती है

१४. दृश्य-श्रव्य सामग्री प्रायः बढा देती है - उ० - व्यक्तों की व्याख्या (Interpretation), व्यक्तों का अवधान (Attention), व्यक्तों द्वारा विषयवस्तु की पहचान।

१५. दृश्य-श्रव्य सामग्री का महत्व है - उ० - अधिगम प्रक्रिया में <sup>Learning by process में</sup> ~~अभिप्रेरण~~ को दृष्टांश बनाना, शिक्षण-अधिगम को सुगम, सुभावी एवं आकर्षक बनाना, वैयक्तिक विभिन्नताओं पर ध्यान देना।

१६. दृश्य-श्रव्य सामग्री की विशेषता है - उ० - शिक्षकों के कथनों को न्यूनतम करना, अनुभवजन्य ज्ञान प्रदान करना, वैज्ञानिक प्रकृति का विकास करना।

१७. दृश्य-श्रव्य सामग्री का आपके विचार में उपयोग है - उ० ये शिक्षण-अधिगम को उत्कृष्ट एवं सुभावी बनाती है।

१८. शिक्षण के दौरान दृश्य-श्रव्य सामग्री से अधिक लाभ की प्राप्ति होती है - उ० - शिक्षक को क्योंकि वे भगनपट्टी से बच जाते हैं, व्यक्तों को क्योंकि वे शौक-शौक में ~~में~~ सीखते हैं।

१९. दृश्य-श्रव्य सामग्री का कौनसा एक ऐसा गुण है जिसे आप छोड़ देना पसन्द करेंगे - उ० - उच्च लागत (High cost)

२०. दृश्य-श्रव्य सामग्री की अनुकूलता (Adaptability) से तात्पर्य यह है कि - उ० - दृश्य-श्रव्य सामग्री विषयवस्तु के अनुकूल होनी चाहिए।

२१. विषयवस्तु का शिक्षण किया जाय, शिक्षण दृश्य-श्रव्य सामग्री का नहीं, इसका तात्पर्य है - उ० - शिक्षक को केवल शिक्षण उद्देश्य को स्पष्ट करने तथा इसकी सहायता शिक्षण सामग्री का प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

२२. हम नेत्रों से ज्ञान की मात्रा ग्रहण करते हैं - उ० - ८५ प्रतिशत।

२३. दृश्य-श्रव्य सामग्री महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ पाती है, क्योंकि -

उ० - वास्तविकता का अधिकारी ज्ञान हम नेत्रों एवं कानों से प्राप्त



करते हैं जिसका संबंध दृश्य-श्रव्य सामग्री से होता है।

१५. दृश्य-श्रव्य सामग्री का चयन करते समय आप कौन सी प्रमुख सावधानी करेंगे? - उ० - यह छात्रों के शैक्षणिक स्तर के अनुकूल हो यह अभिव्यक्तियों की पूर्ति में सहायक हो, यह छात्रों की रुचियों को संवर्धित करने वाली हो।

१६. दृश्य-श्रव्य सामग्री को कक्षा में ले जाते समय सावधानियाँ रखनी होंगी - उ० - इसे उचित ढंग से ले जाएँ, यह सामग्री खुली न रहे, जब इसे प्रदर्शित करना हो तभी खोला जाए।

१७. 'रेंडगर डेल' का योगदान है - उ० - अनुभव शंकु।

१८. अनुभव शंकु के शीर्षस्थ स्तर पर है - उ० - अभूत विशय (सहायक सामग्री) का चयन बिन्दु।

१९. अनुभव शंकु में व्यवस्था की गई है - उ० - दृश्य-श्रव्य सामग्री की बढ़ती हुई अभूतता के क्रम में व्यवस्था।

२०. आप 'रेंडगर डेल' के अनुभव शंकु के आधार पर क्या पाते हैं? - उ० - प्रत्यक्ष उद्देश्यपूर्ण अनुभव।

२१. बालकों के प्रत्यक्ष ज्ञान सम्बन्धी अनुभवों का संबंध होता है - सरस्वती यन्त्रों से, पर्यावरणीय अन्तःप्रक्रियाओं से, प्रयोग-प्रदर्शन से।

२२. श्रव्य सामग्री में सम्मिलित करते हैं - उ० - रेडियो एवं टेप रेकार्डर को।

२३. प्रयोग के आधार पर सहायक सामग्री को वर्गीकृत किया जात है - उ० - प्रक्षेपी एवं अप्रक्षेपी विधियों में।

२४. यदि शिक्षक सहायक सामग्री का क्रम देखे (दृश्य-सामग्री, श्रव्य सामग्री तथा दृश्य-श्रव्य सामग्री में) तो सर्वाधिक प्रभावशाली सामग्री होगी - उ० - दृश्य-श्रव्य सामग्री।

२५. यदि आपके पास सीमित साधन हैं आप <sup>एक</sup> दृश्य-श्रव्य प्रयोगशाला तैयार करते हुए किसको प्रधानता ~~देना~~ देंगे - श्यामपट्ट, वास्तविक पदार्थ, मॉडल एवं स्लाइड।

२६. श्यामपट्ट की आवश्यकता होती है - उ० - शिक्षक को।

२७. श्यामपट्ट है एक - उ० - दृश्य सहायक सामग्री।

२८. श्यामपट्ट के साथ किस आविष्कारक का नाम जुड़ा है - उ० - जेम्स क्लियर का।



शिक्षक अध्यापक के व्यक्तित्व को कक्षा प्रतिनिध्वन कहा जाता है

30. श्यामपट्ट पर किये गये कार्य को

शिक्षक स्वयं सहायक सामग्री की तरह हो सकता है, यदि उसमें गुण हैं - 30 - सुन्दर लेखन का, सुन्दर वस्तुत्व शैली का

31. ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड ने सर्वप्रथम किशन न्यूनतम सहायक सामग्री की संस्कृति प्रस्तुत की थी - 30 - श्यामपट्ट सर्व चोंक

32. श्यामपट्ट का प्रयोग किया जा सकता है - 30 - पाठ का सारांश लिखने के लिए, पाठसम्बन्धी संक्षिप्त व्याख्या/निबन्ध/सिद्धान्त/श्रुति लिखने के लिए, विभिन्न उपकरणों आदि के चित्र खींचने के लिए

33. श्यामपट्ट के प्रकार हैं - लकड़ी, सीमेंट, काँच

34. चि कोने बैकसीन (Pencilboard System) से तैयार किए जाने वाले श्यामपट्ट को कहते हैं - 30 - रोल अप श्यामपट्ट

35. लपटे श्यामपट्ट का प्रयोग संभव है - 30 - शिक्षक प्रशिक्षण विधियों के लिए

36. श्यामपट्ट पर कार्य करते हुए शिक्षक - 30 - कक्षा का पर्यवेक्षण करना उचित आवश्यक है

37. यदि आपका हैंडराइटिंग सामान्य स्थिति में अच्छा है, तो आपका ब्लैक बोर्ड पर हैंड राइटिंग होना चाहिए - 30 - कह नहीं सकते हैं

38. शिक्षकों की राय है कि - 30 - शिक्षक हैं, तो उन्हें श्यामपट्ट का अवशर उपयोग करना ही चाहिए

39. आप 'ब्लैक बोर्ड' को कक्षा में बाहर होने से पूर्व ऐसा छोड़िए जैसा आप स्वयं दूसरों से अपेक्षा करते हैं - 30 -

40. श्यामपट्ट पर कार्य में कौनसी सावधानी करेंगे ?

30 - श्यामपट्ट की ओर मुँह करके न बोलिए, श्यामपट्ट का लगभग 2-3' का अंतर लिखिए ताकि कक्षा का अंतिम छात्र भी उसे पढ़ सके, चित्रों को इंगीन चोंक से ही खींचिए

31. श्यामपट्ट सर्व शिक्षक के कक्षीय में परस्पर अनुपात होना चाहिए - लगभग 8' का



पू२. श्यामपट्ट कार्य में छात्रों की सहभागिता हो होनी चाहिए - 30-  
अधिकतम.

पू३. वास्तविक पदार्थों को शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग  
करते समय आप क्या सही करेंगे ? - 30 - आप पैड़-पौधों  
को प्रदर्शित करेंगे जिन्हें आसानी से प्रस्तुत किया जा  
सकता है, आप ऐसे वास्तविक पदार्थ प्रयोग करेंगे जो छात्रों  
के अनुभव श्रेय से बाहर हैं और प्रदर्शनीय हैं.

पू४. मॉडल से तात्पर्य है - ऐसी नकल या बनाना जो वास्तविक  
वस्तु की छवई प्रतिलिपि होती है तथा सामान्यतया  
प्रदर्शन हेतु उपलब्धता नहीं हो पा रही है.

पू५. मॉडल द्वारा लाभ है - 30 - यथार्थ वस्तु के लघु चित्र का  
अवबोध एवं स्मृति धारण.

पू६. स्लाइड्स (Slides) का निर्माण किया जाता है - 30 - नेत्रों से अदृश्य  
वस्तुओं को स्लाइड बनाकर सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखने के लिए.

पू७. फोटोग्राफिक स्लाइड्स किस प्रकार की फिल्म पर तैयार की  
जाती हैं - 30 - स्लाइड के लिए प्रयुक्त होने वाली फोटोग्राफिक  
फिल्म के द्वारा.

पू८. फिल्म स्ट्रिप एक सहायक सामग्री है - 30 अत्यधिक प्रभावी.

पू९. फिल्म स्ट्रिप दिखाने से पूर्व कक्षा की तैयारी होनी चाहिए

30- सम्बन्धित विषयवस्तु पर कक्षा में व्यापक विवेचना.

पू१०. डॉक्यूमेंटरी फिल्मों का निर्माण किया जाता है - 30 - किसी विषय  
विषयवस्तु के केन्द्रित दृष्टिकोण या घटना की जानकारी देने के लिए.

पू११. तैयारी करते समय ध्यान देने योग्य बात है -

30 - रंगीन एवं आकर्षक हों, उद्देश्यपूर्ण हों, प्रदर्शनीय हों.

पू१२. ग्राफ में पाया जाता है - 30 - दृश्य गुण.

पू१३. ग्राफ का निर्माण होना चाहिए - 30 - प्रभावशीलता के लिए,  
सुन्दरता के लिए, ध्यान आकृष्ट करने के लिए.

पू१४. छद्म आकार का ग्राफ बनाया जाता है - 30 - किसी चर को वर्गीकृत  
ढाँचा से प्रस्तुत करने के लिए.

पू१५. ऐसा ग्राफ, जिसमें बहुकोणीय रेखाएँ बनती हों कहते हैं - 30 -

पॉलीगॉन (Polygon)



यदि आपको वायु में मिश्रित उनके फटकों की मात्रा का पदार्थन करना है, तो अपेक्षाकृत उत्तम चित्र होगा - 30 - पाई ग्राफ.

मानचित्र एक दुर्लभ दृश्य सामग्री है, क्योंकि यह 30 - दो स्थानों के मध्य की दूरी बताता है, स्थानविशेष का क्षेत्रफल बताता है, स्थानविशेष की भौगोलिक जलवायु का संकेत देता है।

इस कक्षा में चित्र प्रदर्शन करते समय आप क्या सावधानी बरतेंगे?  
30 - ये विषय एवं प्रश्नों के अनुरूप हों, ये प्राकृतिक एवं वास्तविक दिखें, ये सही एवं शुद्ध अनुपात में हों।

31. एक शिक्षक को कक्षा में चित्रों का प्रयोग करना चाहिए

30 - केवल जब आवश्यक हो तभी प्रयोग करना चाहिए,

31. कौनसी सहायक सामग्री का दूरगामी लाभदायक परिणाम

होगा? - जब आप स्वयं चित्र कि सीढ़ी' और छात्रों को सीढ़ी' के लिए प्रेरित करें।

32. चित्रों का कक्षा में उपयोग किया जाना चाहिए - 30 -

छात्रों के शान्ति स्तर के अनुरूप, छात्रों की रुचियों के अनुरूप, छात्रों की योग्यताओं के अनुरूप।

33. प्राथमिक त्रिभुज पर अनेक चित्र बनाते समय निम्नलिखित

क्रम रखना चाहिए - 30 - दाहिनी ओर से कमराई बाईं ओर,

34. संग्रहालय छात्रों की रुचियों को अनुकूल करने के लिए

बनाए जाते हैं तथा ये शिक्षण को शिक्षण अधिगम को बनाते

हैं - 30 - सरल एवं सुगम, उत्पन्न एवं अनुभवजन्य,

उत्सुकता पूर्ण एवं कोशाल कोशलयुक्त।

35. संग्रहालय की व्यवस्था का महत्वपूर्ण बिन्दु है -

30 - सभी वस्तुएं क्रमिक एवं व्यवस्थित ढंग से सुसज्जित

हों, प्रत्येक वस्तु पर उसकी विस्तृत जानकारी के त्रुटि (त्रुटि)

लगाएँ, प्रत्येक वस्तु छात्रों के स्पर्श से दूर हो।

36. शैक्षिक दृष्टि से लाभप्रद संग्रहालय है - 30 - जनसाधारण

संग्रहालय, स्थानीय संग्रहालय, स्कूल संग्रहालय।

37. स्कूल संग्रहालय में संग्रहीत कर सकते हैं - 30 - सभी

विषयों से संबंधित दृश्य सामग्री जो व्यवस्थित ढंग से

सुसज्जित की गई हो।



प्रदर्शनी आयोजन से विद्यालय को लाभ है, उक्त - विद्यालय की अतिरिक्त आय हो जाती है, विद्यालय का शुभ मुक्त में विद्यापन हो जाता है, विद्यालय कर्मियों का मुक्त में मनोरंजन हो जाता है।

७. प्रदर्शनी का आयोजन करते समय केन्द्रीय विचार होना चाहिए - दशम हित।

४०. प्रदर्शनी के उद्देश्य आयोजन में विचारणीय बिन्दु है -

३० - प्रदर्शनी का एक 'थीम' (theme) होना चाहिए, प्रदर्शनी की व्यवस्थाओं का दायित्व छात्रों को देना चाहिए, प्रदर्शनी का आयोजन अनुसार कार्यन्वयन किया जाना चाहिए।

४१. बुलेटिन बोर्ड का उपयोग किया जाता है - उक्त - विद्यालय कार्यक्रम का प्रदर्शन करने के लिए, विभिन्न समाचार पत्रों में सूचनाओं के संकलन के लिए, शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सूचनाओं के सम्प्रेषण के लिए।

४२. बुलेटिन बोर्ड पर प्रदर्शित सामग्री का निष्कर्ष ~~समाचार~~ को छात्रों के द्वारा कार्य कराया जाना चाहिए - उक्त - उक्त सामग्री का संकलन, उक्त सामग्री का सम्पादन, उक्त सामग्री का व्यवस्थित संगठन।

४३. बुलेटिन बोर्ड एवं फ्लैनेल बोर्ड में - उक्त - आकार - प्रकार एवं प्रदर्शित की जाने वाली सामग्री का अन्तर है।

४४. फ्लैनेल बोर्ड प्रायः बनाये जाते हैं - उक्त - फ्लैनेल से,

४५. शैक्षिक सहायक सामग्री में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है - उक्त रेडियो को

४६. रेडियो पाठों का प्रसारण किया जाना चाहिए - उक्त - छात्रों को पूर्व सूचना देकर,

४७. स्लाइड्स (slides) को प्रदर्शित करने के लिए निश्चय का उपयोग किया जाता है, उसे कहते हैं - उक्त - स्लाइड प्रोजेक्टर।

४८. स्लाइड का आकार होता है - उक्त - ३५ मिमी।

४९. स्लाइड के प्रोजेक्टर के साथ-साथ शिक्षक करता है - उक्त - उसका शिक्षण में तर्क संगत सम्मिश्रण।

५०. एपीडायास्कोप (epidiascope) क्या है? - उक्त - पारदर्शी एवं अपारदर्शी वस्तुओं का पर्दे पर प्रक्षेपण।

५१. ओवरहेड प्रोजेक्टर में प्रदर्शित सामग्री का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है -

५२. बोलने वाले की पीठ के पीछे स्क्रीन पर और सिर के ऊपर,



ओवरहेड प्रोजेक्टर का प्रयोग करते हैं - उ० - चित्रों के निर्माण को छात्रों के लिए, किसी कठिन विषयवस्तु को समझाने के लिए, किसी विषयवस्तु को एक बड़े समूह में प्रदर्शित करने के लिए.

जैविक लालटेन को कहा जाता है - उ० - डायार्कोप

जैविक लालटेन का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है - उ० - छात्रीय परिवेश में

एपी डायार्कोप का लाभ है - उ० - पुस्तक के अन्य स्थान से लिए गए चित्रों को चार्ट के आकार का बड़ा बनाने के लिए, चार्ट तैयार करने के लिए.

ओवरहेड प्रोजेक्टर द्वारा विषय सामग्री को तैयार किया जाता है - उ० -

स्टैंडर्ड ट्रांसपेरेंसीन पर

ट्रांसपेरेंसीन पर लिखने के लिए उपकरण प्रयोग किये जाते हैं - उ० - अलग प्रकार के स्थायी इंक पेन.

जैव ओवरहेड प्रोजेक्टर को आप प्रयोग करते समय कौनसी सावधानी प्राथमिकता के आधार पर सबसे पहले रखेंगे - उ० - प्रयोग के समय बल्ब जलाना और प्रयोग के तत्काल बाद इसे बुझा देना.

जैविक प्रोजेक्टर जिन्हें विद्यालयों में प्रयोग किया जाता है प्रायः होते हैं - उ० - 8 मिमी के और 16 मिमी के

शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम है - उ० - स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामान्य ज्ञान संबंधित कार्यक्रम.

एडुसेट (Edusat) है - उ० - शिक्षण उपग्रह.

टेलीविजन का शिक्षण में योगदान है - उ० - अत्यधिक.

टेलीविजन नेटवर्क को शिक्षा में प्रयोग करने के लिए क्या उपाय करने चाहिए - उ० - प्रत्येक विद्यालय में - शिक्षकों के पर्यवेक्षण में दूरदर्शन पाठ्यसामग्री का प्रसारण - शैक्षिक दूरदर्शन चैनल की पर्याप्त संभावनाएँ, - दूरदर्शन शिक्षण के लिए आवंटित समय का सदुपयोग.

टेलीविजन द्वारा शिक्षण किया जाता है - उ० - वास्तविक, अवबोधपूर्ण एवं मनोरंजनमय.

पारम्परिक टेलीविजन शिक्षण का एक दोष है - उ० - शिक्षक-छात्र अन्तःक्रियाओं का अभाव.

कम्प्यूटर है - उ० - शिक्षण के लिए वरदान.



शिक्षण मशीन के जन्मदाता कहे जाते हैं - डॉ. एस. एस. प्रेसी.  
शिक्षण सहायक सामग्री के द्वारा किया जाना चाहिए - डॉ. प्रभावशाली शिक्षण.

- अनुसंधान किसी राष्ट्र के पहिचान बिंदु, कहे जाते हैं क्यों कि -
१. डॉ. अनुसंधान राष्ट्र की उन्नति के चेतक है, अनुसंधान मानव विकास को बढ़ावा देते हैं, अनुसंधान अंतर्राष्ट्रीय स्थापित के उत्पन्न में सहायक हैं, अनुसंधान का संधि विच्छेद करने पर प्राप्त दो शब्द होंगे - डॉ.
  २. अनुसंधान -
  ३. हिन्दी भाषा में शब्द 'अनुसंधान' से तात्पर्य है - डॉ. लक्ष्य का अनुगमन होना.
  ४. 'अनुसंधान' शब्द लिखा गया है - डॉ. प्राचीन तीर्थंकारी के लिए उपयोगी लक्ष्यों की प्रेरणा के आधार पर, मॉडर्न राष्ट्रफल निश्चिन्ता की लक्ष्यों के आधार पर.
  ५. मॉडेली (Model) के कथनानुसार - डॉ. समस्याओं के समाधान के लिए व्यवस्थित रूप में बौद्धिक दृष्टि से वैज्ञानिक विधि का प्रयोग एवं अर्थापन ही अनुसंधान है.
  ६. अनुसंधान आधारित होते हैं - डॉ. वैज्ञानिक विधि पर.
  ७. यदि एक सामान्य व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार के प्रयोग एवं प्रेरणा करता है तथा उसी आधार पर निष्कर्ष प्राप्त करता है, इस रूप में उस व्यक्ति को मानेंगे - डॉ. एक सामान्य व्यक्ति.
  ८. एक वैज्ञानिक के प्रयोग एवं परीक्षणों सम्बंधी प्रेरणा होते हैं - डॉ. वैज्ञानिक नियमों पर आधारित.
  ९. 'अवैज्ञानिक' होने के लिए पर्याप्त है - डॉ. कुतर्क, अंधविश्वास, असहमति.
  १०. यदि आप एक झूल करने के बाद उसकी पुनः पुनरावृत्ति करते आ रहे हैं आपको कहा जाएगा - डॉ. बेवकूफ.
  ११. यदि एक समस्या के समाधान एवं प्राप्त परिणामों की विवेचना के लिए आप वैज्ञानिक पदावली का प्रयोग कर रहे हैं तो यह प्रक्रिया कही जायेगी - डॉ. वैज्ञानिक.
  १२. मैकग्रेथ एवं वाटसन (McGregor and Watson) ने अनुसंधान के लिए कहा है - डॉ. स्वयं प्रविष्टि का प्रयोग करते.



अनुसंधान समस्याओं के अध्ययन की एक विधि है जहाँ अनुसंधान में प्रदत्त तथ्यों के द्वारा समस्याओं के हलों की प्राप्ति की जाती है। यह कथन है - डॉ. वेस्ट का।

अनुसंधान एक समस्या के प्रति ईमानदारी एवं व्यापक रूप में समझदारी के साथ की गई खोज है। यह कथन है - वेस्ट का। वाटसन का।

एक अनुसंधान पर शर्त लागू होती है कि वह - डॉ. ईमानदारीपूर्ण खोज हो, तथ्यों एवं सिद्धांतों की जानकारी हो, उपलब्ध एवं निष्कर्ष प्राप्ति हो।

अनुसंधान की विशेषता है - डॉ. गम्भीर एवं गहन अध्ययन से पूर्ण, विवेकपूर्ण, प्रायोगिक निष्कर्षों पर आधारित।

एक अनुसंधान का होना चाहिए - डॉ. वस्तुनिष्ठ, वैध, विश्वसनीय।

एक अनुसंधान की विशेषता नहीं हो सकती है - डॉ. दूषित प्रदत्त संकलन, दूषित प्रदत्त विश्लेषण, दूषित निष्कर्ष।

अनुसंधान में पूर्वकथन की विशेषता होने के लिए आवश्यक है कि - डॉ. यह ठोस प्रदत्तीय आधार पर सम्पन्न किया गया हो।

एक अनुसंधानकर्ता में होनी चाहिए - डॉ. वैज्ञानिक अभिवृत्ति।

यदि आप स्वयं को एक वैज्ञानिक के रूप में देखना चाहते हैं तो स्वयं में क्या परिवर्तन करना पसन्द करेंगे ?

- डॉ. वैज्ञानिक अभिवृत्तियों का विकास।

निश्चयीता अनुसंधान का प्रमुख गुण है जो कि इसके साथ-साथ परिचायक होता है - डॉ. वैधता का।

यदि एक ही अनुसंधान को उन्हीं परिस्थितियों में दूसरी बार दोहराने पर प्राप्त परिणामों में अन्तर आता हो तो ऐसे अनुसंधान को आप कहेंगे - अविश्वसनीय।

अनुसंधान की रिपोर्टिंग की जानी चाहिए - डॉ. वैज्ञानिक ढंग से।

अनुसंधान सदैव होता है - डॉ. मौन ज्ञान की खोज करने वाला, प्राचीन ज्ञान का स्थापन करने वाला, ज्ञान के अद्वय होने वाले स्थितियों को भरने वाला।



उपागम = <sup>ज्ञान</sup> निष्कर्ष, बोधा, छाटना, कष्टा, कुश्रुति, स्वीकृति.

१६. प्रायः अनुसंधानों के ~~अधिक~~ <sup>आँकड़े</sup> आँकड़े होते हैं - उ० - परिभाषात्मक, गुणात्मक.

१७. सामाजिकीकरण (फरफरवली/वर्गीकरण) से तात्पर्य है - उ० - किसी अनुसंधान निष्कर्ष को बृहद् स्तर पर लागू करना.

१८. कस्तुनिष्ठ प्रेरणों की आवश्यकता अनुभव की जाती है - उ० - सभी परिस्थितियों में.

१९. अनुसंधान के उद्देश्य हैं - उ० - तथ्यात्मक उद्देश्य, सत्यात्मक उद्देश्य, सैद्धान्तिक उद्देश्य.

२०. अनुसंधान के सैद्धान्तिक उद्देश्य होते हैं - उ० - व्याख्यात्मक.

२१. अनुसंधान के तथ्यात्मक उद्देश्यों की विशेषता है - उ० - ये वर्णात्मक प्रकृति के होते हैं.

२२. तथ्यात्मक उद्देश्य अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं - उ० - ऐतिहासिक अनुसंधानों में.

२३. विकासोन्मुख प्रकार के अनुसंधानों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है - उ० - क्रियात्मक अनुसंधान को.

२४. योशदान की दृष्टि से सशक्त अनुसंधानों को वर्गीकृत किया जाता है - उ० - भौतिक - व्यवहृत - एवं क्रियात्मक अनुसंधान.

२५. अनुसंधान उपागम हैं - उ० - अनुदैर्घ्य एवं क्रॉस काट.

२६. प्रायः नवीन ज्ञान का प्रतिपादन एवं वृद्धि की जाती है - उ० - भौतिक अनुसंधानों के माध्यम से.

२७. सर्वेक्षण अनुसंधानों को वर्गीकृत किया जाता है - उ० - भौतिक तथा प्रयोगात्मक अनुसंधानों के अन्तर्गत.

२८. अतीत के अध्ययन के द्वारा नवीन तथ्यों में खोज करने की प्रक्रिया से संबंधित अनुसंधान है - ऐतिहासिक अनुसंधान.

२९. भौतिक अनुसंधान (Fundamental Research) के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को प्रयुक्त किया जाता है - उ० - अनुप्रयुक्त/व्यवहृत अनुसंधान में.

३०. अनुसंधान है (ज्ञान प्रकृति के संबंध के संदर्भ में) - उ० एक पूरक अभिवृत्ति (Attitude of Inquiry).

३१. एक अनुसंधान की बुनियादी आवश्यकता है - उ० योजना तैयार करना.

३२. नवीन मूल्यों एवं सिद्धान्तों की स्थापना की जाती है - उ० दार्शनिक अनुसंधानों के द्वारा.



क्रियात्मक अनुसंधान है - 30 - एक प्रकार का तात्कालिक समर्थनों के समाधान के लिए किया जाने वाला अनुसंधान.

31. ऑपरेशन ब्लोक बॉर्ड योजना को वर्गीकृत किया जा सकता है -

30 - क्रियात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत.

32. वर्गांगीकरण योजना - एक क्रियात्मक अनुसंधान योजना कही जा सकती है क्योंकि इसमें है - 30 - एक सुनिश्चित लक्ष्य प्राप्ति, एक सुनिश्चित अवधि, एक सुनिश्चित आर्थिक-सांख्यिक व्यवस्था.

33. अनुदैर्घ्य उपागम का संबंध है - 30 - दीर्घकालिक अनुसंधान से. 34. उपागम के आधार पर अनुसंधानों के वर्गीकरण की पुष्टि का प्रमाण हुआ है - 30 - जैविकीय विज्ञानों से.

35. अनुदैर्घ्य उपागम में अनुसंधानों का प्राथमिक रूप से संबंध प्राप्त जाता है - 30 - कालक्रम से (Temporal Sequence)

36. क्रॉस-काट अनुसंधानों (Cross-sectional Researches) का आधारभूत प्रकृति का संबंध है - 30 - न्यायदर्श से.

37. अनुदैर्घ्य उपागम एवं क्रॉस काट उपागम में एक अन्तर है -

30 - अनुदैर्घ्य में एक ही प्रयोग्य समूह दीर्घकाल तक बना रहता है जबकि क्रॉस काट में न्यायदर्श द्वारा नियंत्रण करके तत्काल प्रदत्त एकत्रित कर लिये जाते हैं.

अनुदैर्घ्य में अनुसंधानकर्ता को अत्यधिक धैर्य से काम करना होता है, किन्तु क्रॉस काट में नहीं.

अनुदैर्घ्य अध्ययन विशिष्ट व्यक्तियों के विशिष्ट परिस्थितियों में किसे जाते हैं जबकि क्रॉस काट में ऐसा नहीं होता.

9- मास्ले माडल (Maslow) के अनुसार अनुसंधान विधियों के प्रकार हैं -

30 - ऐतिहासिक विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रयोगात्मक विधि.

3. ऐतिहासिक विधि के प्रकार हैं - 30 ऐतिहासिक-संवैधानिक एवं प्रलेखी.

4. सर्वेक्षण विधि में न्यायदर्श की स्थिति होती है - 30 - अनिवार्य रूप से.

5. सर्वेक्षण विधि में नियंत्रण की आवश्यकता - 30 - आंशिक रूप से होती है.



५. बाह्य स्वयं आन्तरिक वैधता उपस्थित रहती है - ३० - दृढनोत्तर विधि से प्राप्त निष्कर्षों में

६. कौन सी विधि न्यायदर्श, नियंत्रण एवं निष्कर्ष वैधता सम्बन्धी समस्याओं से मुक्त रहती है ? - ३० - ऐतिहासिक विधि.

७. निष्कर्ष सम्बन्धी आन्तरिक वैधता का संबंध है - ३० - प्रयोगात्मक विधि से.

८. दृढनोत्तर विधि का संबंध होता है - ३० - न्यायदर्श से, नियंत्रण से, निष्कर्ष संबंधी वैधता से.

९. न्यायदर्श, नियंत्रण एवं निष्कर्ष वैधता के संदर्भ में कौन सी विधियाँ लगभग एकसमान प्रकृति की हैं ? - ३० - ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधि.

१०. सर्वेक्षण विधि का संबंध रहता है - ३० - उन अध्ययनों से जो निरन्तर चालू हैं, ऐसी प्रक्रियाएँ जो निरन्तर अनवरत चल रही हैं, ऐसे अनुभव जो किए जा रहे हैं.

११. सर्वेक्षण विधि की विशेषताएँ हैं - ३० - यह एक साथ कुछ जनसमूह से प्रदत्त एकत्र करने में सक्षम है, इसमें पूर्ण परिभाषित समस्या पर कार्य किया जाता है, इस विधि के उद्देश्य निश्चित एवं विशिष्ट होते हैं.

१२. कौन सी विशेषताएँ सर्वेक्षण अनुसंधान विधि से संबंधित हैं - ३० - यह अपेक्षाकृत अधिक जटिल एवं परिवर्तनशील है, इसमें कल्पना-पूर्ण नियोजन की आवश्यकता होती है, यह व्यक्तियों की विशेषताओं से संबंधित नहीं है.

कौन सी एक विशेषता सर्वेक्षण विधि से संबंधित नहीं है ? - ३० - यह वैज्ञानिक सिद्धान्तों का संगठन करती है.

१३. सर्वेक्षण विधि में सूचनाएँ संकलित की जाती हैं - ३० - वर्तमान स्थिति से संबंधित, अनुसंधान के लक्ष्य से संबंधित, अनुसंधान की लक्ष्यप्राप्ति से संबंधित.

१४. सर्वेक्षण सर्वेक्षण विधि की विशेषता है - ३० - स्थानीय स्तर पर समस्याओं का समाधान करना, ज्ञान की गिंड की मात्रा में वृद्धि करना, वर्तमान समस्याओं का समाधान करना.



१५. सर्वेक्षण विधि को वर्गीकृत किया जाता है - ३० - चर की प्रकृति के आधार पर, मापन योग्य वर्ग या समूह के आधार पर, प्रदत्त संकलन स्रोत के आधार पर,

१६. चर की प्रकृति (Nature of Variable) के आधार पर सर्वेक्षण विधि सर्वेक्षण विधि के प्रकार हैं - स्तरीय सर्वेक्षण एवं सर्वेक्षण अनुसंधान.

१७. विवरणात्मक अध्ययन का संबंध है - ३० - सर्वेक्षण अनुसंधान विधि से, प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि से, व्यक्तिगत अध्ययन विधि से.

१८. विवरणात्मक अध्ययन (Descriptive Research) का उद्देश्य है - ३० - वर्तमान परिस्थितियों को पहचानना एवं उन पर केन्द्रित करना, विषय अथवा घटना की स्थिति का शीघ्र अध्ययन करना, तथ्यों को प्राप्त करना.

१९. ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का संबंध है - ३० - सभी विषयों के अन्तर्गत होने वाली ऐतिहासिक खोजों से.

२०. ऐतिहासिक अनुसंधान से तात्पर्य है - ३० - ऐतिहासिक समस्याओं के अध्ययन हेतु वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करना, ऐतिहासिक तथ्यों एवं वर्तमान घटनाओं में संबंध स्थापित करना, अतीत की घटनाओं का विशिष्ट एवं अन्वेषण करना.

२१. ऐतिहासिक अनुसंधान विधि के शेषान हैं - ३० - समस्या की पहचान करना, प्रदत्त संकलन करना, प्रदत्तों की समालोचना करना.

२२. ऐतिहासिक अनुसंधान विधि के पदों का वैज्ञानिक क्रम है

३० - समस्या की पहचान करना - प्रदत्त संकलन करना; प्रदत्त समालोचना करना, प्रदत्त अर्थपन.

२३. दार्शनिक अनुसंधान विधि की आवश्यकता अनुभव की जाती है - ३० - सभी सामाजिक विज्ञानों के लक्ष्यों को खोजने संबंधी अनुसंधानों में.

२४. तत्वमीमांसा से संबंधित अनुसंधान हेतु प्रश्न (समस्या) हो सकती है - ३० - अस्तित्व से क्या तात्पर्य है, वस्तुओं के अस्तित्व की क्या विशेषताएं हैं, वस्तुओं की वैयक्तिकता को कैसे सातक किया जा सकता है.



२५. ज्ञानमीमांसा के क्षेत्रान्तर्गत किस समस्या का समाधान किया जा सकता है - ऊ - अपने निजी विचारों के अतिरिक्त <sup>अतिरिक्त</sup> <sup>अतिरिक्त</sup> और क्या ज्ञान पाता है, किस प्रकार यह ज्ञान एक ही समय में विषयनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ हो जाता है, सत्य स्वयं असत्य के बारे में निर्णय लेने का क्या आधार हो सकता है।

२६. नीतिशास्त्र का संबंध है - व्यक्ति की मान्यताओं से, अधिनियम की प्रकृति से, नागरिक नियम स्वयं उनके अधिकारों से।

२७. प्रयोगात्मक विधि है - ऊ - परिकल्पना परीक्षण की एक विधि।

२८. प्रयोगात्मक विधि के सन्दर्भ में असत्य है - ऊ - प्रयोगशाला एक उपयोगी विधि मात्र है।

२९. प्रयोगात्मक विधि की मूलभूत अवधारणा का संबंध है - ऊ - एक चर नियम से।

३०. एक चर नियम को जन्मदाता है - ऊ - नेचर्स एंड गिग्स

३१. चर (variable) से तात्पर्य है - ऊ - एक ऐसा गुण जिसके विभिन्न मूल्य हो सकते हैं, किसी घटना का ऐसा स्वरूप जो अपनी उपस्थिति से किसी घटना को प्रभावित करता है।

३२. चर प्रायः होते हैं - ऊ - चार प्रकार के - स्वतंत्र, परतंत्र, मध्यवर्ती एवं नियंत्रित चर।

३३. प्रयोगात्मक विधि की विशेषता है - ऊ - यह विशिष्ट चर नियम का अनुपालन करती है, यह अनुसंधान की एक प्रायोगिक विधि है जो शुद्ध उधार विचारों से उधार ली है, यह वैज्ञानिक सिद्धान्त का अनुसरण करती है।

३४. प्रयोगात्मक विधि का पद है - ऊ - समस्या चयन एवं परिभाषा कारण, संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण, प्रायोगिक प्रारूप।

३५. प्रयोगात्मक विधि के प्रकार हैं - एक समूह प्रयोग, समानांतर समूह प्रयोग, क्रमावधि समूह प्रयोग, प्रयोगात्मक विधि का एक एक प्रकार नहीं है - रीज रेजीड्यू (Residue) समूह प्रयोग।

३६. लिंडबेर्ग ने प्रायोगिक प्रारूप बताए हैं - ऊ - छह प्रकार के।

३७. घटनांतर अनुसंधान से तात्पर्य है - ऊ - घटना के बाद किस-किस वाले अनुसंधान।



वद नोत्तर में प्रायः अनुसंधान संबंधी चरों की स्थिति होती है - 30 -  
 2. प्रायः स्वतंत्र चर अनुसंधान पूर्व ही चर्चित हो चुका होता है,  
 अनुसंधानकर्ता एक आश्रित चर अथवा परतंत्र चरों से प्रारम्भ  
 करता है, इसके बाद वह इनके प्रत्यक्ष संभावित संबंधों को  
 प्रतिगामी रूप में अध्ययन करता है.

3. बाल अपराधी प्रवृत्तियों पर अनुसंधान के लिए सर्वोत्तम विधि है -  
 30 - वद नोत्तर अनुसंधान विधि.

40. वद नोत्तर अनुसंधान के सह सम्बन्धात्मक प्राप्ति में अध्ययन  
 किया जाता है - 30 - इस चर का जिसे पूर्व में जाया गया है और जो  
 दूसरे चर का कारण बनता है, उस दूसरे चर का जिसे जाया जा  
 रहा है तथा वह पूर्व चर का कारण है, उस तृतीय चर का जो  
 जाया नहीं जा सकता है, किन्तु प्रथम एवं द्वितीय चर का कारण है

41. केस-स्टडी विधि संकेत करती है - 30 - किसी इकाई के निकट  
 अध्ययन की ओर किसी इकाई के गहन अध्ययन की ओर,  
 किसी ~~इकाई~~ <sup>(व्यक्ति)</sup> इकाई के संघर्ष अध्ययन की ओर.

42. केस-स्टडी का योगदान है - 30 - किसी इकाई (व्यक्ति) की  
 जाति, आयु, लिंग, धर्म, समस्याएँ, बुद्धि स्तर, आर्थिक स्तर आदि  
 के अध्ययन एवं प्रदत्त संकलन में, संबंधित व्यक्तियों के  
 ऐतिहासिक तथ्यों का मूल्यांकन करने में, सामाजिक, संस्थागत  
 समूहों एवं परिवारों का अध्ययन करने में.

43. केस-स्टडी के उद्देश्य हैं - 30 - उपचारात्मक, निदानात्मक,  
 शैक्षिक.

44. केस-स्टडी के प्रमुख प्रकार हैं - 30 - 358

45. एक उत्तम केस-स्टडी की कसौटी है - 30 - सात्यता, प्रदत्त पूर्णता,  
 प्रदत्त वैधता.

46. केस-स्टडी (इकाई अध्ययन) प्रदत्त संकलन करती है - 30 - स्वयं व्यक्ति से  
 जीवन-वृत्त लेखों से, राजकीय प्रमाणों से.

47. केस-स्टडी विधि के सोपानों का उचित क्रम है - 30 - अध्ययन केन्द्र बिन्दु,  
 प्रदत्त-संकलन, कारण-तथ्य के लक्षणों की पहचान, सामंजस्य उपचार,  
 अनुवर्ती सेवा कार्यक्रम.



४८. केस-स्टडी की सीमा है - इसमें व्यक्ति निष्ठा पाई जाती है, इसमें अवधारणाओं का स्थापना करना सम्भव नहीं है, इसमें नरितल शारीरिक की च विधियों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है

४९. अभिक्रिया x प्रयोग्य प्रारूप से तात्पर्य है - इसमें ऐसा प्रायोगिक प्रारूप जिसमें सभी क्रियाएँ समान प्रयोगों को बारी-बारी से प्रस्तुत करती हैं, ऐसा प्रायोगिक प्रारूप जिसमें एक प्रयोग्य संबंधी क्रियाओं को समाप्त किया जाता है.

५०. यादृच्छिक पुनरावृत्ति अभिकल्प (Random Replication Design) से तात्पर्य है - इसमें यह लगभग सभी प्रकार की क्रियाओं (न्यायार्थ एवं प्रायोगिक परिस्थिति) को नियंत्रित कर पाता है, इसमें संस्थाओं के प्रभावों का अध्ययन एक साथ किया जा सकता है, यह समान विज्ञान में पुनरुत्पाद से प्रयोग किया जाता है.

१. अनुसंधान है - इसमें एक मूल्यपरक प्रक्रिया,

२. अनुसंधान को मूल्य परक होना चाहिए - इसमें मानव के हित में.

३. अनुसंधान एक सौन्दर्य बोध युक्त प्रक्रिया है - यहाँ पर सौन्दर्य बोध से अभिप्राय है - इसमें अनुसंधान में शोध मूल्यों की पूर्ति से.

४. दर्शनशास्त्र के तीन अंगों में से मूल्यों का अध्ययन किया जाता है - इसमें शक्ति के अन्तर्गत.

५. अनुसंधानकर्ता के मूल्यों एवं गुणों का स्थानान्तरण होता है -

इसमें उसके द्वारा सम्पन्न किए जाने वाले समस्त कार्यों में.

६. अनुसंधान की शक्ति का संबंध है - इसमें वैज्ञानिक विधि से, निरपेक्ष-नीयता से, मानवीयता से.

अनुसंधान की शक्ति का संबंध नहीं है - इसमें व्यक्तिगत स्वार्थ से.

७. अनुसंधान को सन्दर्भ में त्रुटिपूर्ण कथन ~~सम्भव~~ है - इसमें अनुसंधान साविकार हेतु किया जाता है, अनुसंधान प्रथा को मान्य करने के लिए किया जाता है, अनुसंधान उपाधि से विभूषित होने के लिए किया जाता है.

८. यदि एक अनुसंधानकर्ता किसी समस्या के प्रति पूर्णतः रक्षित है, तो उसके द्वारा किये जाने वाले अनुसंधान को कहा जाएगा,

- इसमें दूषित अनुसंधान.



५. आप अपने अनुसंधान को मूल्यपरक बनाने के लिए क्या उपाय करेंगे ?  
७- आप उसमें ईमानदारी एवं विश्वास को सुनिश्चित करेंगे.

१०. अनुसंधान के मूल्यों का ह्रास हो जाता है, जबकि एक-उठ-~~एक~~ अनुसंधानकर्ता परंपरापूर्ण व्यवहार करे, अनुसंधानकर्ता 'श्रुतियों' का शिक्कार हो जाए, अनुसंधानकर्ता काल्पनिक अवधारणाओं को अंतिम रूप से स्वीकार कर ले.

११. यदि एक शोधकर्ता व्यक्तिनिष्ठ ढंग से अनुसंधान कार्य में संलग्न है, तो उसका परिणाम होगा - अशुद्ध लक्ष्य निर्माण, अशुद्ध उपकरण चयन, अशुद्ध अनुसंधान प्रदत्त संकलन.

१२. 'अनुसंधान साखों' पर पट्टी बाँध कर नहीं किया जाना चाहिए - इसका आशय है - ७७- अनुसंधान सभी प्रकार के व्यक्तिगत प्रभावों से मुक्त हो, अनुसंधान सदैव अपनी व्यक्तिगत दुर्बलताओं से मुक्त हो, अनुसंधान सदैव स्वविचारों से पृथक् हो.

१३. अनुसंधान की वस्तुनिष्ठता बढ़ि करती है - ७८- उसकी विश्वनीयता, वैधता एवं निष्पक्षता में.

१४. प्रायः कुछ शोध वास्तव सोचते हैं कि यदि अपने डिस्करेप्शन (लघु शोध ग्रंथों) को थोड़ा आकार-प्रकार में बढा दें, तो वह पी. एच. डी. की उपाधि के लिए अनुकूल हो जायगा. ऐसा विचार परिचायक है - ७९- अनुसंधानकर्ता की श्रुति का.

१५. अनुसंधान में नैतिक परक मूल्यों का समावेश करने के लिए अनिवार्य है कि यह - ८०- अनुसंधानकर्ता की योग्यताओं के अनुकूल हो.

१६. अनुसंधान कार्य प्रभावित नहीं होता है - ८१- अन्य अनुसंधानकर्ता के अभिप्राय से.

१७. अवधारणाएँ निर्मित होती हैं - ८२- देश की संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में.

१८. प्रदूषित तथ्य जन्म दे सकते हैं - प्रदूषित अनुसंधान को.  
१९. यदि अनुसंधानकर्ता को सामाजिक परिवेश को प्रदत्तों के रूप में शक्ति प्रदान करने का गुण नहीं है, तो ऐसा अनुसंधान - ८३- शुद्ध अनुसंधान नहीं होगा.



३०. अनुसंधान का प्रत्येक प्रावद होना चाहिए - इस- औचित्यपूर्ण,  
३१. औचित्यपूर्ण रूप से करता है - शोध-पत्र- शोध की  
उपयुक्तता को.

३२. यदि एक अनुसंधानकर्ता अन्वेषणात्मक सद्गुणों से परिपूर्ण  
है तथा अपने शोध विषय की बारीकियों में दक्ष भी है,  
तो ऐसा शोध होगा - इस- मूल्यपरक.

१. शोध-पत्र लिखे जाते हैं - इस- अपने शोध को सम्पूर्ण रूप से व्यक्त  
करने के लिए.

२. शोध-पत्र लिखे जाते हैं - इस- शोध क्षेत्रों के द्वारा, शोध-परिणामों के  
द्वारा, वैज्ञानिकों के द्वारा.

३. शोध-पत्र लेखन की प्रक्रिया है - इस- वैज्ञानिक.

४. शोध-पत्र लेखन से लाभ है - इस- शोध संबंधी विचार विनिमयीकरण,  
शोध उपागमों से परिचय, वर्तमान शोध क्षेत्रों की जागरूकता.

५. अनुसंधान है - इस- एक ईमानदारी से की जाने वाली खोज.

६. शोध-पत्रों के प्रकाशन की अनिवार्यता है - इस- समस्त  
उच्च स्तरीय शिक्षकों के लिए.

७. शोध-पत्र लेखने की अनिवार्यता से विद्वत् स्थिति उत्पन्न हो गई है,  
क्योंकि - इस- प्रत्येक शिक्षक शोध-पत्र लेखन में रुचि नहीं रखता,  
प्रत्येक शिक्षक में शोध-पत्र लेखन की वांछनीय योग्यताएँ नहीं होती हैं,  
प्रत्येक शिक्षक में वैज्ञानिक अभिवृत्ति की अपेक्षा करना व्यर्थ है.

८. अनुसंधान-पत्र के लाभ हैं - इस- लक्ष्योन्मुखी अनुसंधान का  
परिभाषित, अनुसंधान निष्कर्षों की व्यापक आलोचना हेतु प्रवृत्ति,  
राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तरों पर प्रवृत्ति उत्पन्न,  
अनुसंधान-पत्र का लाभ नहीं है - इस- व्यक्तिगत हित के लिए

अनुसंधान-पत्र लेखन.

९. अनुसंधान-पत्रों के लेखन की विधा में न्यूनाधिक परिवर्तन होते हैं -

इस- शोध-पत्रिकाओं के अपने मापदण्ड के अनुरूप, शोध करने वाले विद्वानों  
की रुचियों के अनुकूल, शोध-क्षेत्रों की परम्पराओं के अनुकूल,

१०. शोध-पत्र लेखन के लिए आवश्यक है - इस- शोध संबंधी योग्यताएँ,  
शोध संबंधी दक्षताएँ, शोध परक अभिवृत्तियाँ.



११. प्रायः शोध-पत्र की अपेक्षा मिलती-जुलती है - उक्त-एक सिनोपसिस से, प्रायः शोध-पत्र, पत्रिकाओं में प्रत्येक लेख का संक्षेप (Abstract) तैयार किया जाता है, जिसमें जोर दिया जाता है - उक्त-शोध-पत्र के केन्द्रीय थीम को, शोध-पत्र लेखन में प्रयुक्त केली अभिनव विचार/उपागम को, शोध-पत्र के प्रभावी निष्कर्ष को.
१२. कॉलेज विश्वविद्यालय स्तर पर व्यक्तिगत उन्नति (Personal Progress Scheme) के तहत एक रीडर के प्रत्याशी को शोध-पत्र लिखने होते हैं - उक्त-उ-उ तक.
१४. अनुसंधान-पत्र स्वयं अनुसंधान लेख है - उक्त-एक ही लेख के ~~के पृथक्-पृथक् नाम~~, उक्त-एक प्रदत्त जनित निष्कर्षों पर आधारित है, तो दूसरा सैद्धांतिक एक की पृष्ठभूमि सर्वेक्षात्मक या प्रयोगात्मक है तो दूसरे की वैचारिक.
१५. अनुसंधान लेख की ~~पृष्ठभूमि~~ हो सकती है - उक्त-दार्शनिक, ऐतिहासिक तथा समासाध्यिक में से कोई भी.
१६. शोध-लेख की अपेक्षा शोध-पत्र अधिक प्रभावशाली माने जाते हैं, क्योंकि ये होते हैं - उक्त-प्रदत्त जनित एवं सांख्यिकीय अविविध.
१७. प्रायः शोध-लेख प्रचुरता से प्रस्तुत किए जाते हैं - उक्त-संमेलनों में, पत्र-पत्रिकाओं में, विचार-गोष्ठियों में.
१८. कॉन्फ्रेंस (सम्मेलन) है, एक-उक्त-अनुसंधान कार्यों पर गहन विचार करने का प्रावधान, अनुसंधान समस्याओं का उचित समाधान, अनुसंधान निष्कर्षों का व्यापक हस्तान्तरण.
१९. सम्मेलन में प्रायः उपस्थित रहते हैं - उक्त-विषय-विशेषज्ञ, अनुसंधानकर्ता, विद्वान्, सम्मेलन (कॉन्फ्रेंस) में प्रायः उपस्थित नहीं रहते - उक्त-असानी या सामान्य जन.
२०. प्रायः शोधसम्मेलन बुलाए जाते हैं - उक्त-मार्गदर्शन केलिए.
२१. शोध सम्मेलन हो सकते हैं - उक्त-क्षेत्रीय स्तर के, राष्ट्रीय स्तर के, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के.



२१. एक अनुसंधान सम्मेलन में प्रायः होते हैं - ऊ - स्थायी सदस्य, विषय-विशेषज्ञ, सम्मेलन अध्यक्ष.

२२. एक अनुसंधान सम्मेलन में प्रायः नहीं होते हैं - ऊ - जनसाधारण व्यक्ति कॉन्फ्रेंस (सम्मेलन) से प्रमुख लाभ है - ऊ - प्रामाणिक श्रुतियों का विकास, नव अनुसंधानकर्ताओं का मार्गदर्शन, फारस्परिक विचार-विनिमय.

२३. कार्यशाला के आयोजन का प्रमुख लक्ष्य है - ऊ - अनुसंधानकर्ताओं के विशेष समस्याओं के समाधान हेतु क्रियात्मक कौशलों को परिभाषित करना, अनुसंधानकर्ताओं को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना, अनुसंधानकर्ताओं को किसी अनुसंधान के क्षेत्र-विशेष में सिद्धिस्त करना.

२४. 'कार्यशाला' शब्द अनुसंधान के क्षेत्र में आया है - ऊ - अभियान्तिकी से.

२५. कार्यशाला के आयोजन में ज्ञानात्मक उद्देश्य निहित हैं - ऊ - जटिल समस्याओं का समाधान ढूँढना, अनुसंधान के सामाजिक-दार्शनिक पक्षों का विवेचन करना, अनुसंधान विधियों का निर्धारण करना.

२६. कार्यशाला का आवात्मक उद्देश्य है - ऊ - वर्तमान समस्या क्षेत्रों के प्रति जागरूकता, तात्कालिक समस्याओं के प्रति सक्रियता, अनुसंधान विधियों में निपुणता.

२७. कार्यशाला का प्रमुख जनक क्रियात्मक उद्देश्य है - ऊ - अनुसंधान अभिकल्प (Research Design) तैयार करने की क्षमता, अनुसंधान समस्या का चयन-स्वी निर्धारण संबंधी योग्यता, अनुसंधान उपकरण निर्माण सम्बन्धी योग्यता.

२८. प्रायः कार्यशाला आयोजन का लक्ष्य होता है - ऊ - शोध करने की कला का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना.

२९. कार्यशाला के ज्ञानवीय संसाधन हैं - ऊ - आयोजक-संस्थालक-विषय-विशेषज्ञ - भागीदार.

३०. कार्यशाला में अहं भूमिका रहती है - ऊ - विषय-विशेषज्ञ की.

३१. शोध कार्यशाला का मद है - ऊ - प्रकरण का प्रस्तुतीकरण-स्वी स्फूर्तीकरण उपकरण को प्रयोग करने का अभ्यास, प्रकरण का अनुसरण-स्वी मूल्यांकन.



33. कार्यशाला की विशेषता है - 33- अनुसंधान संबंधी उच्च ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति, अनुसंधानों के नवीन उपागमों के सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक पक्षों का अवबोध, अनुसंधानों के व्यावहारिक उपयोगों की सम्भावनाओं को खोजना।

34. एक शोध कार्यशाला की सीमाएँ हैं - 34- समय की अत्यधिक आवश्यकता (उपलब्धता), क्रियात्मकता पर अत्यधिक बल, विविध शोध सामग्री की आवश्यकता,

35. विचार गोष्ठी (सेमिनार) है - 35- चिन्तन स्तर को समुन्नत करने की प्रक्रिया, उच्च शक्तियों को पोषित करनेवाली प्रक्रिया, चिन्तन की एक अलग प्रक्रिया।

36. विचार गोष्ठी का प्रमुख ज्ञानात्मक उद्देश्य है - 36- अनुसंधानकर्ता में आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमताओं का विकास करना, अनुसंधानकर्ता में निरीक्षण एवं अनुभवों के प्रस्तुतीकरण की क्षमताओं का विकास करना, अनुसंधानकर्ता में विश्लेषणात्मक एवं मूल्यमूलक संबंधी योग्यताओं का विकास करना।

37. विचार गोष्ठी के भावात्मक उद्देश्य हैं - 37- अनुसंधानकर्ता में धैर्य एवं सहनशीलता के गुण उत्पन्न करना, अनुसंधानों के शोध निष्कर्षों की प्रशंसा करना, अनुसंधानकर्ता में भावात्मक स्थिरता एवं प्रेरणा उत्पन्न करना।

38. एक विचार गोष्ठी के सैद्धांतिक तत्व हैं - 38- व्यवस्थापक - अध्ययन - वक्तागण - सहभागी।

39. विचार गोष्ठी के प्रकार हैं - 39- अन्तर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी, राष्ट्रीय विचार गोष्ठी, मूल्य विचार गोष्ठी।

विचार गोष्ठी का प्रकार नहीं है - 39- गृह गोष्ठी।

40. विचार गोष्ठी सेलाभ है - 40- अनुसंधान के उच्च ज्ञानात्मक एवं भावनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति, प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास, उत्तम अधिगम आदर्शों का निर्माण।

41. विचार गोष्ठी एक अनुसंधानकर्ता को अवसर प्रदान करती है -

41- भाव प्रदर्शन, विचार विनिमयन, स्वाभाविक अधिगम।

42. विचार गोष्ठियों के आयोजन का प्राथमिक लक्ष्य होता है - 42- ज्ञानार्जन।



४३. आधुनिक युग में विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है - ३० - शिक्षकों को अनुसंधान संबंधी चुनितियों से सुसज्जित करने के लिए २०.

४४. विश्व विद्यालय अनुदान आयोग के मानकों के अनुसार प्रत्येक शिक्षक को विचार गोष्ठियाँ आयोजित करनी चाहिए ~~सम्मिलित~~ सम्मिलित होना अनिवार्य बना दिया है, क्योंकि - ३० - ये भावी युवा पीढ़ी के निर्माणकर्ता हैं

४५. 'सिम्पोजियम' कहते हैं - ३० - बौद्धिक मनोरंजन को

४६. सिम्पोजियम है एक - ३० - सुनियोजित समूह जिसमें कुशलता तथा अधिभाषा स्रोत हैं, पारस्परिक विचार विनिमय द्वारा किसी सुनियोजित लक्ष्य तक पहुँचने की प्रक्रिया, साप्ताहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया.

४७. विचार समिति का उद्देश्य है - ३० - तात्कालिक समस्या की जानकारी स्वयं उन्हें पहचानने की समता का विकास करके करना, अनुसंधान-प्रकार संबंधी समस्याओं के संदर्भ में निर्णय लेना, विषय-क्षेत्र के विशेषज्ञों से राय लेना.

४८. विचार समिति की विशेषता है - ३० - अनुसंधान की किसी विशेष समस्या का तथा उसके विभिन्न पक्षों का व्यापक बोध कराना.

४९. वक्ता स्वयं स्रोत को अपने विचारों एवं मतों को अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता प्रदान करना, उच्चस्तरीय चिन्तन का प्रशिक्षण देना.

५०. विचार गोष्ठियों के अंतर्गत किसी सत्र विशेष के अध्ययन का कार्य होता है - ३० - सत्र संवाहक, वक्ता स्वयं स्रोत गणों के मध्य वाद-विवाद की संभाषि, अनुशासन नियमक.

५०. विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जा सकता है - कक्षाओं, विद्यालय में, जिला स्तर पर,

१. शोध ग्रन्थ लेखन की विधिहीनी चाहिए - ३० - वैज्ञानिक,

२. अनुसंधान संबंधी रिपोर्ट को वैज्ञानिक ढंग से लिखने में लाभ है - ३० - वैज्ञानिक संप्रेषण.



३. अनुसंधान रिपोर्ट तैयार करने के लिए एक अनुसंधानकर्ता में गुण होना अनिवार्य है - ३० - कोशलात्मक दक्षारण, वैज्ञानिक अभिवृत्ति, मानसिक संतुलन (धैर्य)

४. आप अपने अनुसंधान का प्रतिवेदन प्रारूप तैयार करने से पूर्व भला कहेंगे - ३० - अपने पर्यवेक्षक से, अपने अन्य वरिष्ठ साथियों से, अपने पूर्वगामियों के कार्यों को देखकर.

५. अनुसंधान के प्रमुख भाग हैं - ३० - मुख्यपृष्ठ-छद्म तथा पञ्च भाग. अनुसंधान प्रारूप का ग्रह्य भाग तैयार करता है - ३० - अनुसंधान प्रारूप के प्रमुख भाग को.

६. अनुसंधान प्रारूप की प्राथमिकताओं में सम्मिलित है - ३० - मुख्यपृष्ठ-विषयवस्तु-सारणी-तालिका सूची केवल.

७. अनुसंधान प्रारूप का मुख्यपृष्ठ होना चाहिए - ३० - सौन्दर्यबोधक, अनुसंधान प्रारूप की उपमा जानव शरीर से दी जाती है, जिसमें उसके विभिन्न भागों में विभिन्नता के बावजूद होना आवश्यक है - ३० - कार्यात्मक सातत्यता का.

८. अनुसंधान प्रवन्ध<sup>ग्रन्थ</sup> का मुख्यपृष्ठ होना चाहिए - ३० - संक्षिप्त एवं सारगर्भित, वैज्ञानिक एवं तार्किक, सौन्दर्ययुक्त एवं आकर्षक तथा कैची.

९. अनुसंधान ग्रन्थ को किसी उपाधि अथवा अन्य उद्देश्यों से प्रस्तुत करने पर पर्यवेक्षक प्रमाणपत्र प्रस्तुत किया जाता है - ३० - उक्त कार्य की प्रामाणिकता की पुष्टि करने के लिए.

१०. शोध प्रवन्ध में प्राक्कथन का महत्व है - ३० - कृतवता स्थापन के लिए.

११. शोध प्राक्कथन के शब्द होने चाहिए - ३० - सचेष्ट, सतर्क एवं विनीत.

१२. पापः शोध प्राक्कथन में आभार-प्रदर्शन की रश्मि उदा करते हुए यदि आप इसके विस्तार को कम करने के लिए कुछ व्यक्तियों के नाम हटाना चाहें, तो वे होंगे - ३० - निकटस्थ संबंधी.